प्रकृति का खिलौना
(उपन्यास)

●

लेखक :
प्रकाश वर्मा

●

उपमा प्रकाशन

●

प्रकाशक :
उपमा प्रकाशन
लालजी साड का रास्ता
ज य पु र–3

●

मूल्य : 6 00

●

मुद्रक :
राजधानी प्रिन्टर्स
ज य पु र

एक

• • •

ॐ नम नारायण स्वर के साथ मे मिट्टी की वेदी पर अग्नि मे होने लगा था। उसके सामन एक नर नारी का जोडा बैठा था। नारी की गोद मे एक बच्चा था। पण्डित मन्त्र के शब्दो के साथ आहुतिय दे रहा था। सारे वातावरण मे घी की सुगन्ध फैल गयी थी। मकान के प्रागण मे बुलाये गये मेहमान खुशीयो मे बैठे थे। हवेली के बाहर माँगने वालो की हलकी सी भोड थी। हवेली भी ऐसी लग रही थी जैसे खुशीयो मे झूम रही हो।

हवेली की बगल मे भट्टीया चल रही थी और काम करने वालो के किसी के मु ह पर भी उदासी के भाव न थे, बल्कि सभी के मुखाकृति पर खुशी के भावो मे झलक रहे थे। पण्डित ने नर–नारी के हाथो मे कुछ चीज दी और कुछ मन्त्र के शब्दो के बाद उसने उनको अग्नि मे आहुती देने का इशारा किया।

वह लगातार ऊंचे शब्दो मे मन्त्र बोलता जा रहा था और कुछ मन्त्र के उच्चारण के शब्दो के बाद घी, शक्कर और तिल की आहुती फकी। फेकने भर की ढील थी, जाने उसमे से एक हलका सा विस्फोट हुआ और जलते हुये तिल, उडते हुये नारी के टेरीलिन की साडी पर आकर गिरे। पण्डित का कुछ भी ध्यान न था वह तो वह मंत्र और आहुतियो मे ही मंग्न था।

गिरने भर की ढोल थी साडी मे आग भभक उठी, बच्चे को नीचे गिरा दिया और वह नारी सहायतार्थ चिल्लाने लगी। लोगो ने पानी आदि डाला परन्तु वह रेयन्स की बनी साडी पानी मे कब बुझने वाली थी? आखिर एक समझदार स्त्री ने ऊन के दो कम्बल, उस पर लिपेटे और बाहर की हवा जाने से रुक गयी।

बच्चे को एक स्त्री ने उठा लिया और गले से लगा लिया ।

सब स्तब्ध से खडे देख थे । सब के सोचने की शक्ति धुमिल सी हो गयी थी । आखिर तारा शकर ने फोन का चोगा उठाया तो मालूम हुआ, किन्ही कारणो से लाइन ही खराब हो गयी हैं ।

उनमे से दो आदमी पास के किसी डाक्टर के लिए रवाना हो गये । पंडित ने सारी सामग्री छोड कर चुपचाप अपनी राह पकड ली थी, शायद यह सोचकर—'अब अपनी खैर नही है ।'

चौक के अधूरे होम से धुंऐ उठ–उठ कर लोगो की आखो मे जा रही थी । सामग्री ज्यो कि त्यों पडी थी । खुशियो के चेहरे पर गम के आसू निकल निकल कर हृदय तक की ओर ढल रहे थे । सब गुम सुम से, विधाता के विधान की रचना पर आश्चर्य से आखे फाड़ खडे थे ।

यह नारी कम्बलो मे लिपटी बेहोश पडी थी । भट्टिया बन्द हो गयी थी । सारा चौक आदमियो और औरतो से खचा खच भर गया था । भीड को दूर सा करता डाक्टर आ पहुचा और उस स्त्री को देखा, बिगर दवा दिये ही कुछ चिन्तित भावो के साथ उठ खडा हुआ । चुपचाप भीड से बाहर हो गया । उसके पीछे पीछे तारा शकर थका मदा सा मुंह लटकाये चल रहा था जैसे ही डाक्टर अपनी गाडी मे बैठता बोला,"दु ख है···· ··············· ··· आप अन्दर जाइये और देखिये" इन्ही शब्दो के साथ गाडी चलाने लगा । एक आदमी ने मृत शरीर को चारपाई से नीचे उतार दिया तारा शंकर के मुंह से दुख: की एक तीव्र आवाज मे चीख निकली "केसर इसी के साथ वह फर्श पर गिरा, गिरते ही फर्श से सिर टकराया और सिर से खून की धारा फूट पडी । लोगो ने उस दम टूटे शरीर को उठाया पर उसमे क्या था । यह सब देखकर लोगो की आखो मे से आश्चर्य युक्त आसू दुःख के साथ टपटप गिर रहे थे । आसपास के वातावरण मे निरशता ने अपने पाव पसार दिये थे । सब के हृदय तल से एक ही आवाज उठ रही थी —"हे भगवान बहुत बुरा किया ।"

शोक की तरगे द्रुत गति से एक कान से दूसरे कान मे पहुच रही थी ।

बच्चा जोर जोर से रो रहा था चुप रखने के लिए उसको कृत्रिम स्तनो से दूध पिलाने की कोशिश की जा रही थी। पर फिर भी वह लगातार रो रहा था। जसे मा-बाप को चले जाने पर उनके शोक मे रो रहा हो। ऐन-केन सभी तरीके अपनाये जा रहे थे। आखिर चुप हो गया और लोगो के दिलो को हलकी सी तस्सलि का आभास माना हुआ। जो हवेली खुशी के इन्तजार मे खडी मस्ति मे झूम रही थी। अब वह रात की काली चादर ओढे भयानकता का रूप धारण किय खडी थी उस पर लाल पीले और हरी बत्तियो का जाल ऐसा पडा था जैसे एक सुहागन स्त्री विधवा हो जाने पर गम और आसू से मिश्रित शृगार प्रसाधन के साधनो के कारण उसके मुंह पर दाग से पड गये हो। बाहर से ऐसा लग रहा था, उसमे आदमी होते हुये भी सूनी लग रही थी।

सामान से कोठे भरे पड़े थे। जो मिठाई पडी थी उसमे बदबू उठने लग गयी थी।

सूर्य उदय हुआ। तारा शंकर की बहन बच्चे को गले मे चिपकाये, उदास मुह लटकाये भाई के घर की बिखरी हुई चीजो को अपने अधिकार मे कर रही थी।

सूर्य शनः शन ऊपर आ रहा था छल और कपट से भर दुनियां अपने कार्य में व्यस्थ होती जा रही थी। लोग तारा शंकर की बात सुन कर विधि के घर अन्याय बताकर अफसोस के शब्दो के साथ दुख प्रकट कर देते। कोई उसके गुणो की व्याख्या करता, तो कोई उसके दोषो की।

धीरे-धीरे बात ठण्डी पड़ती गयी। लोगों के हृदयो का दुख कम हो गया।

× ×

गगा की पवित्र लहरो मे एक लकडी का पिजरा ऊपर नीचे होता तेज गति से जा रहा था। गगा की लहरें अपनी भाषा मे गीत गाती किनारो से खेलती, आपस मे टकराती, बादलो को निर्माण करती सागर की ओर तेजी से भागती जा रही थी। गंगा के किनारे एक वृद्ध अवस्था को सम्भालते हुए एक सेठ और सेठानी जोडे से स्नान कर रहे थे। वे उस

पवित्र धारा में कुछ देर शान्त चित से गोता लगाकर सेठ सेठानी पर पानी उडेलना वन्द करता, "माया चलो वाहर।" और स्वयं उठ कर कपड़े वदलने लग गया। गर्मी का मौसम होने के नाते माया का मन वाहर निकलने के लिए नही वोल रहा था। इसलिए वह सुरसरी की धारा मे वैठी वैठी ही गोता लगाने लगी वह लकडी का पिंजरा हर की पेडी से होता तेज गति से पानी के सहारे वहता चला जा रहा था। उस पर लोगो की दृष्टि पडी पर किसी ने उस पर ध्यान नही दिया था, क्योकि गगा मे कितने ही वडे वड़े लकड़ी के टुकडे आते है।

सेठ राजा राम सूर्य देव की ओर हाथ जोड कर मन ही मन प्रार्थना कर रहा था—'हे भगवान न पुत्र का दर्शन करना ही दुनिया वाले वुरा समझते है। इसलिए पुत्र नही तो पुत्री ही दे दे, न जाने कितनी मन की भावनायें और कितनी ही प्रेम के साथ उदय होते हुये भास्कर देव के सामने मन की रही सही खटोच भी सूर्य देव के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा था।

हवा का एक तेज झोका आया जल धारा मे तेजी के साथ परिवर्तन हुआ और वहता हुआ लकडी का पिंजरा जल धारा के मध्य से किनारे से जा टकराया।

माया पानी से वाहर होने ही वाली थी कि लकडी का पिंजरा माया के पैरो के जा टकराया। वह एकदम चौकी और कॉपते मे होटो मे वडवडाहट सी हुई, पर दूसरे ही क्षण माया उस पिंजरे तो वहती पवित्र धारा के कूल पर रख दिया।

राजाराम प्रार्थना से निवृत होकर किनारे रखे उस पिंजरे को जा टटोला। पिंजरा को खोलते ही उसकी नाको को भिनी भिनी खुशवू स्पर्श करने लगी। पर दूसरे ही क्षण उसके होट पुलकित हो उठे और उसके मुहं से निकल गया—"माया, देख, देख, भगवान से सुन ली।"

माया देखने की उत्सुकता मे साड़ी को इधर उधर तेजी के साथ शरीर पर लपटने लगी।

वच्चा गुलाव के फूलों की सेज पर प्रसन्नता से सोया पड़ा था। दुनियां से दूर, जिसको किसी प्रकार की खबर न थी।

माया पूर्ण ठीक प्रकार से भाडी भी न बाव पायी थी और उसकी चचलता से चलने वाली नजरे पिजरे मे जा धमकी। दोनो की नजरें एक हुई और होटो के मध्य हल्की सी खुशी की तरगे फैल गई।

राजाराम धीरे धीरे उस मासूम बच्चे को निकालने लगा। और निकाल कर जैसे हो सिने से लगाया और वह बच्चा तेज आवाज म रोने लगा। सेठ उसको हिलाता हुआ ओ ""ओ"" ""कर रहा था पर बच्चा चुप नहीं हो रहा था। माया ने जब बच्चे को झट मे छाती मे लगाया और बच्चा रोता, चुप हो गया। सेठ फिका सा मुस्कराया और, "बडा बदमाश है, माँ को भी पहचानता है।"

माया खुशी मे झूमती सी, "माँ को नही पहचानेगा तो किसको पहचानेगा ?"

दोनो इतने खुश थे मानो साकक्षात भगवान मिल गये हो।

माया कुछ विचारती—"इस बेकसूर बच्चे को जलधारा मे बहाया दिया उसका हृदय नही पाषाण है। कैसी कैसी मा है ? सेठ छाती ठोकतागा; "कुछ भी हो अब तो अपना है।" माया उस बच्चे को कभी देखती कभी हाथ मे झुलाती सी, 'अपना है जब ही तो, अपने पास आया है, वरना आता ही क्यो ?"

खुशी की बातो मे सलग्न होते हुये विधाता को लाखो धन्यवाद देने जा रहे थे।

माया बच्चे को चिपकाये धीरे धीरे आगे बढती जा रही थी। प्रसन्नता की अंतर तरगो मे गोता खाता राजाराम उसकी बराबर मे से कदम धरता, पिंजरे को उठाये चल रहा था।

बच्चे की खुशी मे माया और राजाराम सहर्ष मिठाइयां भिखारियो मे बंटवायी और धर्मशाला स्कूल और होस्पिल इत्यादि के लिए दिल खोलकर दान दिया।

× × ×

तारा श..र की बहन औरतो से घिरी अपने हाथो को जोर जोर से ललाट मे मार रही थी और उसी तेज आवाज मे प्रलाप कर रही थी। और

विधाता के विधान के लिए दोष दिये जा रही थी—"हाय मेरे भाई की एक मात्र निधि, उसको भी तूने खीच ली। ईश्वर तेरे घर न्याय नही हैं अन्याय है। हाय मेरे मुन्ने कहा गया है ?"

पास बैठी औरतें प न ा ो ो ली, "धीरजधर लक्ष्मी, सभी को जाना है कोई दो दिन पहले तो कोई दो दिन बाद। पर वह तो लगातार जोर जोर से प्रलाप करती जा रही थी सभी औरतो के मुंह पर उदासी ही नही बल्क आंखों मे आसू भी तैर रहे थे। एक ही आवाज मे इस कृत्य के लिए ईश्वर को दोषी ठहरा रहे थे कि वास्तव मे बडा बुरा किया एक मात्र नाम का वह भी चला गया।

सारी हवेली रुदन मे गूंज रही थी सभी के मुह पर निराशा के भाव छलक रहे थे ।

सेठ राजाराम खुशियो की धारा मे बैठा दान और पुण्य के लिए एक विस्तृत राशी बाट रहा था। जिसके आगे और पीछे खुशियो का समुद्र हटा के मार रहा था।

धीरे धीरे बात ठण्डी होने लगी। जयदेव धीरे-धीरे बडा होता जा रहा था। सेठ के दिन दूना व्यापार बढता जा रहा था। माया को बच्चे से इतना प्यार हो गया था जैसे पेट का एक मात्र अंश हो।

उसके प्रेम और ममता के कारण, उसके स्तनों से दूध की धारा फूट पड़ी थी। लोगो को एक वास्तविकता का आभास हो रहा था।

अभी वह एक साल का ही हुआ था। पैरो चलने लगा ही था कि उसको एक रोज बुखार ने आ घेरा।

राजाराम ने अच्छा से अच्छा डाक्टर बुलाया पर उसका बुखार कम न हुआ।

राजाराम और माया सारी रात बच्चे को इधर से उधर हिलाते रहे पर बच्चा रोता हुआ चुप न हुआ। आखिर रात का चौथा पहर आया और सारी रात रोने के कारण बच्चे का मुह भी दर्द करने लग गया था। वह

रोना थोडा सा कम किया और माया उसको अपने स्तनो के सहारे, चारपाई पर लेट गयी।

राजाराम के दिल को हलकी सी शाति मिली की बच्चा दूध पीने लग गया था। ऐसे ही धीरे धीरे लाड और प्रेम मे बच्चा बडा होने लगा। पाच साल का हुआ और उसको अच्छी स्कूल मे पढने के लिए भेज दिया जाने लगा।

× × ×

लक्ष्मी अब अपने भाई की हवेली मे किसी प्रकार का काटा न समझते हुये, पूर्ण पैर फैला दिये थे। और अपने पति लक्ष्मणसिंह के सग खुशी की दीपावलिया मनाने लगी।

एक दिन लक्ष्मणसिंह के चाचा हरिसिंह के कोई बच्चा न होने के कारण बुढापे मे लक्ष्मणसिंह के पास चला आया। लक्ष्मणसिंह उसके सग बडा ही प्रेम व्यवहार किया। बुड्ढा भोला निकला और उस अपने सारे जीवन मे कमाई हुयी धरोहर उसके हवाले कर दिया। धन का लालची लक्ष्मणसिंह छल और कपट के प्रपजो को काम मे लेता लक्ष्मणसिह कुछ दिनो तक तो उससे बडा ही प्रेम किया, समय पर खाना खिलाना, कपडे साफ कर देना।

इसी के साथ समय ने पलटा खाया धीरे धीरे लक्ष्मणसिंह और लक्ष्मी उससे चिडचिडाने लगे।

ऐसे ही दिन हरिसिंह शहर जाता बोला, "बेटी मुझे एक रुपया दे दे।"

लक्ष्मी जरा सी जीभ हिला दी, "कि मेरे पास रुपया कहा से आया ?"

हरिसिंह चुपचाप कातर दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था !

लक्ष्मी नाक मुंह सिकोड कर अपने कमरे मे चली गयी। इतने में एक पडोसन आयी, "अरे फूफी आज कैसे अन्दर बैठी हो ?

"क्या बताऊँ दयावन्ति ? यह बुड्ढा है ना सारी जवानी तो निलाम

बाजी करता रहा। जब रुपये पैसे खत्म हो गये तो हमारे पास आ पडा फिर भी हमारी तो यही कोशिश है हम से जितनी बन पडती है उसमे तो इसकी साथ कोई कसर नही रखी है।"

यह भी सहमत होती :—"वास्तव मे बुढ्ढे आदमियो का दिमाग खराब हो ही जाता है।"

"बैठे बैठे" और दयावन्ति लक्ष्मी की ही बराबर मे कुर्सी पर बैठकर दोनो ने मिलकर बुढ्ढे आदमियो की दिल खोल कर आलोचना की जैसे—आज का प्रमुख विषय ही उन्होने यही चुना हो।

समय समय पर लक्ष्मी और हरिसिंह के बीच बात बात पर मन मुटाव होता गया। वह उसे देखते ही जल भून कर भूगडा हो जाती थी।

एक रोज लक्ष्मण सिंह रात के दस बजे घूम घाम कर वापस आये तो, आते ही लक्ष्मणसिंह सूखी रोटिया थाली मे सजा कर उन पर नमक और सूखी मिर्च रखकर, हरिसिंह के कमरे मे हरिसिंह के सम्मुख रख दिये और रुखे से शब्दो मे, ' चाचाजी खाना खालो।

हरिसिंह उठता हुआ, अब लाया ही क्या बेटी, इस वक्त तक तो कैदियो को भी खाना मिल जाता है।"

लक्ष्मण सिंह तो बन्दूक भरा बैठा था। इतना बेठाने की देरी थी और अश्लिल गोलियो की बोछार करता बोला, "निकल जा मेरे घर से।" एक धक्का मारा वह दीवार से जा भिडा बूढा 'हाड का कार्ड' हड्डियो का ककाड सम्भलता सा सहायतार्थ चिल्लाने लगा, "मुझे बचाओ ......यह मार रहा है लक्ष्मणसिह धक्के मारता घसीटता उस बेचारे को बाहर ला पटका। वह सम्भलता सा खडा होता काप रहा था कि उसके एक धक्का और दिया और इटो के टुकडो के ढेर मे जा गिरा।

अन्दर हाथा पाई के कारण उसके जिर्ण शीर्ष से कपड़े भी फट चुके थे। जो धोती थी वह खुल चुकी थी।

बुढ्ढे की दर्द भरी आवाज सुन कर आसपास के आदमी आगये और

लक्ष्मण सिंह को भला बुरा बोलते हुए, "समझदार होकर शर्म नहीं आयी तु बूढ़े को मार रहा है।" लक्ष्मण सिंह आंख दिखाता क्रोध मे भरे दम कारण एक धक्का और दिया और मैं इसको जान मे मारूंगा।

गिरते हुए बूढ़े को एक ने सहारा दिया और वह लक्ष्मण सिंह को समझाता, बता इतनी रात यह जायेगा कहाँ ?

"इसकी इच्छा आवें जहाँ जाओ मेरे मकान मे यह नही रह सकता है।"

बूढ़ा हाथ जोड कर, "मेरे बारह हजार रुपये दे दो मैं इसी वक्त चला जाऊँगा।"

"अगर तेरे बारह हजार होते तो तू रोटियो के टुकडो के लिए मेरे पास न आता।"

"मैंने तुझे उस रात नही दिये।"

"नही दिये, फालतू की बातें नही अपना रास्ता पकडो।"

बूढ़ा बुरी तरह चिल्लाने लगा, 'हे भगवान इस बेइमान का बुरा करना जो मेरे हाथ से रुपये लेकर मुझे ही मना कर रहा है।"

बरामदे की बत्ती के उजाले मे सब सुन रहे थे। वे सब चुपचाप शान्त और मूक से खडे थे उनके हृदय तल मे प्रश्न बना हुआ था कि कौन झूठा है ? और कौन सच्चा ? किसी की इतनी हिम्मत न थी कि लक्ष्मण को ललकार कर बोल दें क्या यह बूढ़ा बोलता है तूने नही लिया तो आखिर, उसका एक दोस्त बोला, "इस वक्त जायेगा कहा ? सुबह अपने आप चला चला जावेगा।"

नही, मेरे यहा तो एक पल नही रह सकता है।" बूढ़ा बैठा हुआ सर्दी मे लोगो के सामने कापता हुआ, न्याय माग रहा था। दर्द और भय के कारण उसके हाथ पाव थर थरा रहे थे ।

उनमे से एक दयावान ने, "आओ चाचा मेरे घर चलो मेरे यहा कोई नही है।

बूढ़ा आंसू पौछता धोती सम्भालता धीरे धीरे उसके सहारे सहारे कदम बढ़ता उसकी बराबर मे चलता जा रहा था। लोग एक दूसरे के मुह देखते, अपनी अपनी राहो पर अन्धेरी रात मे विलिन हो गय।

लक्ष्मण सिंह खुश होते उधर गया और लक्ष्मी को बाहो में भर कर, "बूढ़ा लक्ष्मण सिंह से रुपये मागता है। उसको क्या मालूम ? जिसने छल कपट से जाने कितनो को रास्ते से साफ कर दिया है और दोनो मुस्कराके चार पाई पर बैठ गये।

× × × ×

दो

• • •

सेठ राजा राम का बेटा जयदेव अभी आठ ही साल का था पर था, बड़ा ही समझदार, सुशील और कभी जिद्द न करता था। इस व्यवहार के कारण माया अपने लाला को देख देख कर बहुत ही खुश होती थी।

वह पाचवी कक्षा मे पहुँच गया, मास्टर लोग उसकी बहुत तारिफ करने लगे। प्रश्न बोलने भर की देर थी और उत्तर तुरत ही बोल देता था जैसे हेप का बटन दबाया हो।

उसकी कक्षा मे एक लड़की पढती थी। उसके और उसके घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया था। उसको प्रेम से नही बोला जा सकता है परन्तु हा बचपन का बचपना कहा जा सकता है।

जयदेव का यह कार्यक्रम था स्कूल जाने से पहले मा से मिलता और बोलता, 'मैं स्कूल जाता हू।' माया का यह प्रश्न होता था 'खाना बाध लिया'।

'हां, कमला अभी बांध देती है।'

'तू लेट न हो जाय।'

'नहीं मां, कमला बांध ही तो रही है।'

माया, मुस्कराके अपने कार्य मे व्यवस्थ हो गयी, जयदेव मुस्कराके देखा कमला, तुम खाना बांधने मे हर रोज देर कर देती हो न, तो मां गुस्सा हो जाती है। इसलिए तुम ठीक समय पर बांध दिया करो। घड़ी दिखाता, देखो घडी मे पांच ही मिनट रह गये है। 'कुछ देर रुक कर जब मां तुझे डाटती है तो मुझे दु:ख होता है।'

कमला मुस्करा के जवाब देती, "आगे से मैं जल्दी करूंगी।"

जयदेव के चले जाने के बाद विचार करने लगी कितना समझदार लड़का है। कभी शिकायत नही करता, पर बच्चा·······बच्चा तो फौरन शिकायत करता है। बड़े और होनहार आदमियो के यही तो लक्षण होते हैं।

दिन के बारह बजे सभी बच्चे खाना खाने के लिए कमरे मे चले। जयदेव भी अपना टिप्पन सम्भाले बैठी ही चपले अपने पास वाले लड़के से "उठ यहां से मैं जयदेव के पास बैठूंगी।"

" नहीं उठता हूं।"

चंचल जयदेव का हाथ पकडकर, "चलो पिछे की बेंच पर चलें।"

दोनो एक ही टिप्पन मे रखकर खाना खाने लगे रोटी का आखरी कौर बचा दोनो का हाथ उसी कौर चला गया। दोनो मे एक हल्की सी खिचातानी हुयी और चचल उस कौर को उठाकर मुंह मे रखने लगा जयदेव टिप्पन उठाकर उठ खडा हुआ ?

जैसे ही टिप्पन को जयदेव साफ करने लगा चचल ने चचलता से उसको उसके हाथ से छिन लिया और मुस्करा के बोली मैं तेरे से ठीक प्रकार से साफ कर दूंगी। जयदेव कुछ नही बोला सिर्फ मुस्कराके चुप हो गया।

इतवार की छुट्टी थी। दिन के दस बज रहे थे। सेठ राजाराम और माया दोनो बैठे गृहस्थ जीवन पर विचार विमर्श कर रहे थे। जयदेव मां की गोद मे बैठा चुपचाप दोनो बाते सुनता जा रहा था। जब राजाराम

जाने के लिए तैयार हुआ, "देखो मां, दादा साहब से बोला था कि हमारे लिए साइकिल लावें ।"

राजाराम और माया दोनो मुस्कराये ।

"आज इतने दिन हो गये साइकिल लाते ही नही है । बेटे, तुझे कार तो दे रखी है फिर साइकिल का क्या करेगा ?" अरे वाह, अनसमझ ही रहा रे ।"

"सभी चलाते हैं तो.................."

"सभी कि बात छोडो, चाहो तो नयी कार दिलादे पर साइकिल नही ।"

जयदेव रुंसा मुंह करके बोला "देखो मां ।" माया के मुंह से तुरंत ही निकल गया, "अच्छा बेटे मैं दिलाऊंगी दादा साहब ने दिलाये तो न सही ।"

"कब ?':

"कल शाम को ।"

"सड़क पर टक्कर की बडी सम्भावनाये हैं ।"

"बच्चा ही है सब चलाते है और फिर यह तो अपने चौक मे चला लेगा ।"

"तुम्हारी इच्छा आवे जैसा करो ।" राजाराम झुंझलाता हुआ सा, "एक बार तो बोलने कि सोचा पर दूसरे ही क्षण :—बच्चा ही तो है जरूर सड़क पर जावेगा । परन्तु वह इस बात को दबा गया और हलके कदमो से चलने लगा ।

"पर देख साइकिल सडक पर नही चलावेगा ।"

जयदेव अन्दर से खुश हुआ. "नही मां ।"

इतने में बाहर अवाज आई और जयदेव मां की गोद छोड़कर बाहर देखते ही, "आओ, कैसे आयी चचल ?

"ऐसे ही, खेलने के लिए ?"

"आओ।" और अपने कमरे मे ले जाकर "सांप सीडी खेलोगी या कैरम।"

"पहले साप सिडी और फिर कैरम।"

दोनो साप सिडी जमाकर खेलने लग गये इतने मे माया ने आवाज दी, "राजा बेटे मशीन के ऊपर से सुई धागा दे जाना।" जयदेव आवाज के साथ ही खेल बन्द कर दिया और बोला "मैं सूई धागा दे आऊ।" चचल की चचल नजरें कमरे मे घुमी एक चारपाई उसके नीचे छोटी चारपाई ऊपर टान पर बक्स पडे थे। कुछ साडिया हैन्गर पर लटकी है। और कुछ अव्यवस्थित थी। कमरे की दीवारो पर खुबसूरत चिप्पस और रग हो रहा था। वह धीरे धीरे देखती जा रही थी इतने मे जयदेव वापस आ गया और दोनो अपने खेल मे चित्त लगा दिया।

× ×

सूर्य बादलो की ओर मे छुपा हुआ था। पूर्व दिशा से पहाड के समान, डरावने बादल धीरे धीरे हवा के सहारे. तैरते से, आसमान पर फैलते जा रहे थे।

बाजार मे भीड खचा खच भर गयी थी रिक्शा, तागा और कारे इन सब को मिला एक शोर उत्पन्न हो रहा था।

बादलो की दुनिया वाले देखते और अपने तेज गति मे कदम उठाना चालू कर देत क्योंकि जाने कब वर्षा फूट पडे ?" इस प्रश्न को ध्यान मे रखते सभी लोग तेज गति पर आ गये थे।

चचल इधर उधर देखने के कारण सडक के उस पर ही रह गयी। उसकी मा रिक्शा स्टेन्ड की ओर चली जा रही थी। वह माँ से दूर हो गयी देखकर, तेजी से सडक पार करने के लिए दोड लगाने लगी। सडक के मध्य मे पहु चते पहुंचते एक कार पूरे वेग से होती आयी और चचल उसी की लपेट मे आ गयी।

सिर से खून की धारा और चीख सी निकली और गोलो सडक पर फैल गया।

कार से एक युवती निकली चचल को उठाते ही उनको चूम लिया। उसके हाथ थर थर कापे और आखे डबडबा आयी।

- चंचल की मां का ध्यान पडा तो वह भागती सी वापस आयी और वह युवती चंचल को उसकी गोद मे देती "भाभी इसे लेकर बैठो और होस्पिटल चलते है।"

चचल की मा उससे कुछ नही बोली और अपनी साडी से उसके मुंह की बरसात की बूंदे पूंछ डाली :—वह अभी यह सोच भी न पायी थी यह सब क्यो, कब और कैसे हो गया ?

कार अपने ही वेग मे मुद्रा गति पर थी। बरसा के जोर पकडने के कारण सामने शीशे पर वर्षा की बूंदें चिपक जाने के कारण शीशे पर धुंधलापन छा गया था ऐसे जैसे काच पर धुधलापन था वैसे ही दोनों के दिलो पर धुंधलापन छा गया था। फिर भी युवकती सम्भालती हुई कार को चला रही थी।

सडक का कीचड बह-बह-कर नालियो की ओर जा रहा था। जन जीवन जगह की जगह रुक गया था। बादल उसी रूप चमकते, गर्जते चले आ रहे थे। बाग मे जो कलिया मेदानी के समीप थी उन पर तो मिट्टी के आवरण की कालिख पुत गयी थी। हवा प्रचंड वेग से बहने के कारण निर्बल पौधे उखड गये थे जो सुहावने दृश्य थे वे बिगड गये थे। जो रहे साफ व सुन्दर थी कीचड़ ने अपने पैर फैला लिये थे।

पानी के बोझ और तीक्ष्ण बहाव के कारण जवान लतायें भी टूट गईं थी। फिर भी हवा की नमी के कारण वे तरो और ताजा सी ला रही थी।

- चचल की मा चंचल को सम्भालती हुयी गाडी से उतरी, उसकी साड़ी पूर्णतः लहू के रग के रग गयी थी। चचल का गुलाबी मुखडा पिला पड गया था। फिर भी उसके भोले और खुशसूरत मुह मे कोई अन्तर न आया था।

युवती ने बहुत शीघ्र उसको एडमिट करवा दिया और अतिशीघ्र उसके उपचार की व्यवस्था भी कर दी। आखिर उसके पट्टी बाध कर वार्ड मे भेज दिया।

चंचल अभी उसी प्रकार बेहोश पडी थी चंचल की मां और उसकी देवरानी युवकती रानी दोनो विचारो की गुथियो मे खोयी सी अनमनी से

दोनो कुछ कालान्तर के पश्चात् दोनो एक दूसरे को देख लेती थी पर किसी प्रकार की प्रति क्रिया न होती थी।

डाक्टर हर बार आता। सम्भाल जाता। पर वह अभी खतरे से बाहर न हुयी थी। आखिर चचल को मा ने उससे कहा "रानी जाओ उन के पिता को सूचना दे आओ।" रानी ने मुह से एक शब्द भी नहीं निकाला और तत्परता के साथ उठ खडी हो गयी।

वर्षा हो गयी थी। बादल उसी प्रकार गर्ज गर्ज कर आ रहे थे ऐसा महसूस हो रहा था रात को इन्द्रराज का भयानक प्रकोप होगा।

जैसे ही रानी ने घन्टी बजाई और उसका पिता बाहर आता बोला "क्यो, क्या कार्य है ? रानी आखे नीचा किये, उसकी आखो मे जल भर आया था। वह एक अपराधन की भाति गर्दन नीचा किये खडी थी।

दुबारा उसी वाक्य को दोहराया तो रानी वहीं मुश्किल से सिसकियां भरती, "चचल मेरी कार से टकरा गयो और वह हास्पिटल मे है।"

"ठीक तो है ना ?"

"नही, अभी वह खतरे से बाहर नही है।" चचल के पिता ने एक भी शब्द मुह से नही बोला और स्तब्ध सा खडा रह गया 'क्या मैं सुन रहा हूँ जो सच है ? तो फिर ये क्यो आयी ? धोखा ? नहीं नही रानी क्या रही है कैसे धोखा ?' पर दूसरे ही क्षण सम्भल गया और गम्भीरता के साथ, मे बोला चलो तो फिर मैं चलता हूँ। रानी घूमती हुयी अपनी आचल से जो आसू चचल के गुणो के कारण लुढक कर बाहर आ रहे थे उनको पोंछ कर, कार की ओर चचल के पिता के पीछे पीछे चलने लगी।

धीरे धीरे दुखी तरगो के सग रानी खत्म हुयी।

सूर्य घडी के अनुसार उदय तो आया था पर वह बादलो मे ही भटक रहा था। हल्की हल्की सुख और चैन देने वाली वर्षा बरस रही थी।

धार्मिक लोग धर्म की भावनाओ के अनुसार अपनी इच्छा और हैसियत के अनुसार ज्वार डाल रहे थे। कबूतर ऊपर तले होते दाने चुग रहे थे।

सुहावना मौसम चंचल के मा-बाप को बडा कष्ट पहुँच रहा था। उनका बस पडता तो इस मौसम को जूते मार कर भगा देते, पर मजबूरी के साथ सब कुछ सहन कर रहे थे।

चचल के होट नीले हो गये थे। हाथ पाव शीतल पड गये थे। मुंह से प्रतीत हो रहा था कि उठकर बोलेगी।

एक नर्स तेज कदम बढती आ ही रही थी वर्षा के कारण आने जाने वालो के साथ छता गिला हो जाने पे उससे वह वह कर आता पानी फर्श पर फैलसा गया था। नर्स का उसमे पाव पडते ही वह फिसली और हाथ का इन्जैक्सन छूट कर फर्श पर चूर चूर हो गया। जो टुकड़े उछले वह एक दूध देने वाली के पावो पर गिरे और दर्द के कारण वह उछली सी और गर्म दूध उसी के पावों पर जा गिरा ऊपर से बिजली का जोर का कडका हुआ। बादल धरती को हिला देने की आवाज मे गर्ज, सारे कबूतर एक साथ ही उडते हुये नजर आये।

चचल के मुह से, "मा।"

इसी आवाज के साथ उसका सारा शरीर ही शीतल पड गया।

डाक्टर ने चचल को देखा और नीची गर्दन उठा करके खिन्न और उदास मन के साथ चारपाई के पास खडा हो गया।

चचल का पिता मुह लटकायें बच्ची को गले से लगा लिया और दिल के दर्द को छुपाता सीढिय, उतरने लगा। अभी वह झूमता सा दरवाजे पर आया ही था कि चचल की मा उसकी हालत को देखते ही उसका कलेजा हाथ मे आ गया बरवस आसू निकल पड़े। अपनी बरसाती चंचल पर फैला दी और स्वय उस रोज वर्षा मे निकलकर बाहर आ गये।

चंचल की मां बुरी तरह चीख सी रही थी। उसका पिता उससे बार बार डाडस बाध रहा था "धैर्य रखो एक न एक दिन सभी को जाना है।" पर मा-मा वो होती है बेटा बेटी उसी के उदर के अंश होते हैं वह भूलने की कौशिश करते हैं पर उनकी याद अतित सताती रहती है।

वर्षा के कारण चहल पहल बन्द सी हो गयी थी। आँसू दूब पर झिलमिला रहे थे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सारी रात रजनी रोयी हो।

जो लतायें कल टूटी हुयी थी मुस्करा रही थी आज वे उदास और खिन्न कुम्हालाई हुयी थी। जिन कलियो पर धून की पर्त जम गयी थी आज वे विगर खिले ही पिली पड़ गयी थी।

× × ×

जयदेव अपनी नई साईकिल चला रहा था उसके पीछे पीछे एक जवान लडका भी चल रहा था वह कभी कभी गिरती हुई साईकिल को सहारा दे देता था।

जयदेव की नजर सडक पर फैली तो चचल का पिता चचल को हाथो मे थामे उदास मु ह अन्तिम स्थान की ओर ले जा रहा था।

तीव्र जिज्ञासा के साथ, "अरे भगवान देखरेख यह चंचल का पिता किस को गोद मे लिए चला जा रहा है। और फिर यह इतने आदमी एक साथ ?

"मुझे मालूम नही कोई मर गया होगा।"

"पर इनमे तो चंचल का पिता है।"

"मुझे मालूल भी तो नही है।"

उसका उत्तर सुन कर जयदेव, "चल यह साईकिल रख दे मैं तो माँ के पास जाता हूँ।"

जैसे ही जयदेव ऊपर पहुँचा और माया को खिडकी के पास लाता, "देख मा, चचल का पिता किस को लिए जा रहा है।"

माया खिडकी से देखी और कुछ फासले से रोने की आवाज आई चचल चचल माया विचारती सी, "लगता है चचल खत्म हो गयी, पर यह चंचल तो यहा खेल ही रही थी जयदेव माया की ओर देखता, "मा आदमी मर जाता है तो जाता कहां है ?"

"भगवान के घर।"

"तो मा क्या सभी मरते है ?"

"हां बेटा।"

"पर मा मुझे तो चंचल की याद ग्रायेगी देखो मां, भगवान कितना खराब है, मेरे घर एक ही खेलने ग्राती थी ग्रौरवह भी मर गयी ।"

"क्या मां ? ग्रब वो कभी नही मिलेगी ।"

"नही ।",

"तो मा मैं भी मरूगा ?"

"नही तू नही मरेगा ।"

"तो फिर चचल क्यो मर गयी ?"

"उसकी उम्र ही इतनी ही थी ।"

जयदेव माया की ग्रोर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखने लगा । माया का हृदय दु.ख से भर ग्राया था ।

"तो मा वो मर गयी कैसे ?"

"मालूम नही ।"

"तो मा मरते कैसे है ?"

माया उसके प्रश्नो के जवाब देती उब गयी थी इसलिए झूंझलाती सी, "चुप रह बाद मे पूछना ।"

जयदेव खिन्न मन से कातर दृष्टि से माया की ग्रोर देख रहा था । माया जाने किन विचारो मे डूबी सी बैठी थी । वह सोच रही थी ईश्वर के घर एक ग्रजीब बात है पलक झपकते ग्रादमी ग्राता है ग्रौर खत्म हो जाता है । न उसकी इच्छा को कोई जान पाया है न ही ग्राने वाले मे जानेगा । इसके साथ ही जयदेव को ग्रपनी गोद मे खिचती लक्ष्मी दो बच्चो की मां बन गयी थी भाई धन पर एस ग्रौर ग्राराम के साथ जीवन व्यापन कर रही थी ।

लक्ष्मणसिंह छल कपटे से भरे ग्रौर से दुनियां वाला को उल्टे छुरे से मुड रहा था, ठीक ही कहा हैं सीताराम नारायण फड़के ने नाई हजामत बनाता है तो ग्रापस वाल तो निकल ग्राते हैं परन्तु जो उल्टे छुरे से दुनियां वालों को मूडते है उनकी खोपडी सफा चट हो जाती है यानी वर्षों मे भी उसके ग्रंकुरन नही फूटते हैं ।

जब प्रकाश की किरिण उनकी खोपडी पर पड़ती है तो परावंतन के नियम भी लागू हो जाते है जैसे की समतल दर्पण के केश मे ।

तीन

• • •

जयदेव बी. एस बी. की परीक्षा देकर घर आ रहा था शहर की भीड मे धीरे धीरे कार चल रही थी। जयदेव विचारो मे डूबा कार की गति के सग सग बहता जा रहा था। कार एक लडके के बगल मे एक झटके के साथ रुकी, "राजू कैसे घूम रहे हो ?" वह फिका सा मुस्कराके, "अपने नसीब पर रो रहा हूँ।"

जयदेव मुस्कराके, "क्यो यार ?"

राजू ने गर्दन के एक झटका दिया और "इस जमाने मे नीची जाति मे जन्म लेना एक सौभाग्य की बात है अमीरो की तो बात हा छोडिये हम जैसे बीच के आदमी हमेशा ही पिसते रहते है।"

"पर, ऐसी क्या नौबत आ गयी ?"

"देखो मैं ग्रेजूएट हूँ, जैसे तुम जानते हो पर आज एक साल होने आया किसी ने मेरी सुनाई ही नही की, अब तुम ही बताओ मुझे नौकरी नही मिलेगी तो मैं क्या करूंगा ?

जयदेव गाडी से उतरता, "क्या करोगे ?"

"यही लूटो, खोओ और खाओ।"

"नही राजू इस कार्य से तो देश बर्बाद हो जावेगा।"

राजू व्यग मे मुस्कराया "देश देश और देश तुम्हे मालूम नही मेरे भाई आज के नेता जनता को ही लूट रहे है। वे इतनी मनमाना कर रहे हैं शायद कोई गुण्डा भी नही करता। अपनी जाच के बारे मे बोला जावे तो ध्वनि मत से अस्वीकार कर देते है आप किस अन्दाज पर पहुचे ?

"यही की सव मिनिस्टर वोट है इसीलिए तो जांच के लिए अस्वीकार करते है।" जव ही तो कहता हू मेरे भाई तुम नही समझ सकोगे और जय-देव के कन्धे पर हाथ को मारा।

"यहा यही तो बुराई है, सरकार उसकी जाति से गरीवी आकती है, अगर उसकी आय से आके तो मैं समझता हू असली गरीवी का श्रोत नजर आ ज वे पर..................पर क्या ? यहाँ तो बोलते क्या है ? और उसके विपरित कार्य होते है।

"कैसे ?"

"एक ओर हम बोलते है जातिवाद को समाप्त करेंगे दूसरी ओर इसी को बढ़ावा दिया जा रहा है"

वास्तव में बहुत वडी बुराइया आ गयी है अगर इन बुराइयों का उन्मूलन न किया गया तो प्रजातन्त्र के पैरो मे जल्दी ही बेडिया डल जायेगी और देश घुटने टेक देगा। नेता लोग क्या है ? वे पैसे को ही सवसे वडी चीज मानते है, वे कर्म करते यह भी नही सोचते हैं इसमे देश का अहित है या हित।

ठीक ही है उनको इतनी फुर्सत कहां ? पर हा एक न एक दिन जनता समझ जावेगी और इन सव का समाज मे कोई स्थान न होगा।

राजू जयदेव को हिलाता सा, "कहा खो गये दोस्त ?"

अरे हां ? तुम हाथ से कार्य तो कर सकते हो।

"तो फिर मैं इतना पढा लिखा क्यो ?"

"यह कोई जरूरी नही है हर पढा लिखा नोकर ही हो।"

हां, किसी हद तक तुम ठीक बोलते हो जयदेव ने एक चिठ निकाली और उसमें कुछ लिखा उसको देता वोला या तो इस चिठ पर तुम्हारे को नौकरी दे देगा अन्यका इन फोन-नम्वर पर मुझे फोन कर देना।

इतने मे एक सिपाही आया और "ऐ वावू गाडी को यहा से हटाओ।"

"देव मुस्कराके हटा रहा हू भाई।"

"फिर हटाओ तो खडे क्यो हो ?"

र ज्ञू सिपाई की ओर एक अजीब प्रकार की हंसी मे हंसा, "इनको एक रुपये की जरूरत है क्योंकि यह लाल पगडी धारी हैं पगडी का ही तो रोब है।"

नही, अपन भी तो बाजार के मध्य मे गाडी खडी कर रखी है, यह तो अच्छी बात थोडी ही है।

"तू तो पूरा पूरा सिद्धान्त वाद बन गया जैसे आज कल के नेता जो बोलते अधिक है और काम नाम मात्र को।"

"मैंने तुम्हारी साथ ऐसा कोई कार्य नहीं किया जो तुम अन्दाज लगा रहे है।"

"यही की तुम........................"

"पुलिस वाले के पक्ष मे था।"

जयदेव कार मे बैठकर जरूर जाता पर जहा तक मैं समझता हू तेरा कार्य जरूर बन जावेगा।

इसी के साथ ही राजू ने हाथ हिला दिया।

× × ×

रात का समय था। जयदेव कमरे का सिलिंग फैन हुनकी आवाज के साथ मेज पर रखी पत्री को भी पढ रहा था। जयदेव विचार मग्न सा कुर्सी पर विचार रहा था। "कैसा युग आ गया ? नौकरी नौकरी......"

उसका दिल पत्री की तरफ घटकता रहा था। वह बार बार विचार कर रहा था इस बेकारी को तो दूर करना ही चाहिए, वरना समाज मे एक भयकर क्रान्ति लाकर खडी कर कर देगी। जिस का परिणाम .... राजाराम खासता सा कुर्सी पर बैठा और बोला कैसे हुए पेपर ?

"अच्छे हो गये।"

"पर आज तुम उदास से क्यो हो ?"

जयदेव फिका सा मुस्कराके, "नही तो उदास कहा हू ?"

"नही, नही कुछ गडबड जरूर है जिसको तुम छुपा रहे हो।"

"इसलिए मैं उदास हूं इस युग मे वेकारो कितनी बढती जा रही हैं सरकार कोई व्यवस्था नही कर पा रही है कि इस बढ़ती हुई वेकारी को दूर करें।"

राजाराम फिका सा मुस्कराया उसके सामने के दांत निकल गये थे फिर भी मुस्कराहट वडी भली प्रतीत हो रही थी।

"यह तुम्हारे सोचने की बात नही है। सरकार तो समाजवाद समाजवाद पुकार रही है पर उसे मालूम नही रूस जैसे साम्यवादी देश मे भी गरीवी अमीरी का हिसाव वना हुआ है जयदेव हलकी सी ऊंची गर्दन उठाता, आप समझे नही। मैं अमीरी और गरीवी के बारे मे नही वोल रहा, मैं इतना वोलता हूं आदमी को मजदूरी मिलें और पेट भर रोटी तो खाये।"

"यह अभी तुम्हारे सोचने की बात नही है।"

"अगर हम नही सोचेंगे तो कौन सोचेगा।"

"तो क्या सोचा ?"

"फिल हाल तो कुछ नही।"

"तुम इस पर माथा न खपाओं तो ठीक रहेगा। तुम्हारा कार्य है विद्या अध्ययन करना विद्या अध्ययन करके फिर सोचो।"

इस तर्क के वाद जयदेव चुप हो गया। वास्तव मे यह तर्क किसी हद तक ठीक प्रतीत होती हैं। राजाराम माया को देखते ही, "वहां क्यो खडी हो ?" मैं यह सुन रही थी देखे वाप-वेटे मे कौन जीतता है वीच मे ही जयदेव वोल पडा "नही मां यह कोई झगडा थोडी ही था जिसमे हार जीत का फैसला होता।"

मा चुप हो गयी सिर्फ समझ सकती थी पर समझा नही सकती थी। उसकी ऐसी ही हालत थी एक वच्चा समझ तो जाता है परन्तु उसकी मुस्किता से या चुप रहने से ही अपना वडा समझता हैं इसलिए वह भी चुप रहने मे ही शायद अपनी शान समझ कर चुप हो 'अच्छा तुम तो खाना लगाओ हमको वापस जाना है।"

जयदेव को अभी नींद न आयी थी वह चारपाई पर पटा पटा विचारों की थाह लगाता करवटें भर रहा था। चोक मे लगी घण्टी चीखी जयदेव विचरता सा उठ खड़ा हुआ।

बाहर मियांजी अपनी अर्ध सफेद दाढी पर हाथ फेर रहा था। उन्हीं की बराबर मे बुर्के मे एक औरत खडी थी, मालूम नही पड रहा था बेटी है या बेगम।

दरवाजे को खुलते ही जयदेव ने दोनों हाथ जोड कर, 'नमस्ते चाचाजी।'

मिया जयदेव का कन्धा ठोकता नमस्ते बेटे नमस्ते, 'राजाराम आ गया।'

'नही वे अभी गये है थोडी देर मे आने ही वाले है आप अन्दर चलिये माँ है।'

"हमारी गाडी तो बाहर ही खडी है।"

'मै गैरेज मे रख आता हू।'

ठीक इसी के साथ दोनो उपर चढ गये। माया चादर मे पसीदा निकाल रही थी। उसका पूरा ध्यान सूई की नोक पर ही था धागा कैसे और कितना लेना है ? तेज गति से हाथ ऊपर नीचे होता नजर आ रहा था।

'दरवाजे के कुछ फासले से आवाज आई मैं आ सकता हूँ ?'

माया नजर भर देखी, ओहो। तुम' रहमान। चादर और सूई को मेज की ओर बढा दिया और उनके स्वागत के लिए उठ खडी हो गई, 'बुर्के से आवाज आई नमस्ते चाची।'

'उल्लास के शब्दो के साथ माया ने उसको आशिर्वाद प्रदान कर दिया।

रहमान कुर्सी पर बैठता, 'अल्लाह ने उसको रात मे भी आराम न दिया।'

नही वो रोज आ जाते है और आज तो वह भी वापस गये है।

कुछ देर रुक कर 'घर तो सब सहकुशल है।'

'हा बस खुदा की दुआ से सब फजल है।'

जयदेव मुस्कराता बडे दिनो मे आये- चाचाजी। रहमान दाढी पर हाथ फेरता, 'हा बेटे अबके तो धधे मे फस ही गया।'

वहीदा अपना बुर्का उठाती, 'मुझे तो बुर्के मे गर्मी लगती है अब्बा ने जबर्दस्ति ही पहना दिया।'' जसे ही वहीदा ने बुर्का उठाया खूबसूरत चाद सा मुखडा मुस्कराहट की भीनी भीनी चादनी बिखरता जयदेव के सम्मुख मुस्करा रहा था।

जयदेव ने उसको एक भरपूर नजर से उसको देखा और फिर अपने आप ही नजर दूसरी ओर घुमा दी जैसे पेट भर जाने के बाद मिठाइया पडी रह जाती है।

'बेटी खाना खाओ जयदेव तुम भी खाओगे न।'

'मुझे तो भूख नही है इसलिए तो मैं सो गया था।' 'रहे, रहमान साहब ये तो उन्ही की साथ खायेंगे।' रहमान हा मे हां भरता बोला 'हा भाई', मै तो उसी के सग खाऊंगा जाओ बेटे तुम तो खाना खाओ।'

रहमान एक लम्बी सी साँस खिचा और मैंने न जाने कितनी बार आने की सोची। पर अल्लाह की ऐसी मरजी हुई मै आ ही नही पाया और फिर तुम्हारे को तो कभी भी फुर्सत ही नही मिलती ?

'नही, ऐसी बात नही है।'

इस प्रकार दोनो एक दूसरे को उल्लाहने देते। एक दूसरे को उल्लाहना देता हसते और एक दूसरे की बातो को प्रेम पूर्वक बातो मे खत्म कर देते। तर्क वितर्क बातें करते समय गुजारते रहे। कमला मेज पर खाना लगाती, 'एक मे ही खाओगे या अलग अलग।'

वहीदा जय से जल्दी बोली, 'एक मे ही खायेंगे अलग क्यो ?

'बिल्कुल' और दोनों मुस्कराने लग गये।

वहीदा मुंह मे रोटी की कोर रखती होठ हलके से मुस्कराये, आप तो मुझे अच्छी तरह जानते होगे।'

'नही मैं यह भी नही जानता कि आप का नाम क्या है ?'

'मेरा नाम वहीदा रहमान है कभी चाची ने नहीं बताया ?'

श्रोहो, मा ने तो बहुत बार बताया पर मेरा ही दिमाग खराब है।'

बातचीत के दौरान खाना खत्म करने पर ग्रा पहुचे, वहीदा फिर तुम कभी 'हमारी ओर आते ही नही हो।'

मा मुझे भेजती ही नहीं है।

जैसे ही प्लेट मे रोटी का आखरी कोर बचा दोनो का एक साथ हाथ उस पर ही गिरा, हल्की सी खिचा तानी हुई, दोनो ही मुस्कराये और प्लेट मे ही कोर छोड दिया। वहीदा आखिर अन्तिम ग्रास मु ह मे रखती आप नही खाते है तो तीसरे को भी क्यो खाने दू ।'

जयदेव हाथ धोता रहा वहीदा मुस्कराती मु ह चलाती रही।

जवानी आदमी के लिए सुखद सी उम्र होती जिसमे आदमी का मन मोर होकर सावन मे मोर की भाति नाचता रहता है।

चाद की चादनी मे छायादार वृक्षो मे ऐसी लग रही थी मानो परिया आनन्द मे विभोर होकर अपना नृत्य कर रही हो। वहीदा और जयदेव छोटी सी मुलाकात मे इतने खोये से थे कि वे आपस मे एक दूसरे से दूर होते हुए भी उनकी इच्छाये तीव्र गति से एक दूसरे के करीब आने को चाह रही थी।

जैसे ही वहीदा विचारो को तोडती दरवाजे की कु डी खोली और जयदेव भी विचारो मे खूया था खिडकी मे देखा।

एक विचार एक चाह और एक सी लगन होने के कारण दोनो चांदनी रात का खूनसा करते आपस मे ताक रहे थे जैसे एक चूहा के लिए बिल्ली पर। यहा तो दोनो ही बिल्लिया थी जो एक ही शिकार के लिए देख रही थी।

दोनो मे ही बात करने की हिम्मत न थी पर नीद दोनो को आखो से ही कोसो दूर थी।

जाने कब और कैसे ? दोनो के विचार खोये और निद्रा देवी की गोद मे समा गये।

अभी पौ फट ही रही थी। वहीदा मीठे और सुहावने सपनो की लडियो को तोडती बाथरूम की ओर जा रही थी।

जयदेव हाथ मुंह पोंछ कर कन्धे पर तौलिया डाले बाथरूम से बाहर आ ही रहा था, 'वहीदा फिकी सी मुस्कराके बोली' बडी जल्दी निमट कर आ गये। जयदेव फिकासा मुस्कराके बोला 'मेरी आदत ही है।'

वहीदा कुछ और कहने को थी, उसका दिल उछाले भर रहा था। सूरज की पहली किरण निकल कर दोनो के मध्य मे गुलाबी रग की दीवार बन कर खडी हो गयी। वहीदा छिपी हुई नजरो से जयदेव के चहरे को देख रही थी, फिर हल्की सी उपर नजर करके, 'यह तौलिया'; जयदेव ने तौलिया उसकी ओर बढा दिया। एक क्षण दोनो की नजरे चार हुई और गुलाबी होटों पर मुस्कराहट फैल गयी। 'आज बुद्ध मन्दिर दिखाओगे न'।

'क्यो नही ?'

बहुतेरी बातें ऐसी होती हैं जो आदमी को सोचने और समझने का अवसर ही नही आता है। यह तो अवसर का मु ह देखता ही रहता है परन्तु हर बातें अपने आप बढती रहती हैं। इसी प्रकार दोनो तेज गति से घुल मिल जारहे थे शर्म, लज्जा और मुस्कराहट आदमी के लिए बडी आकर्षक होती हैं।

वक्त तेजी से जा रहा था। घटायें घटती जा रही थी। दोनो तेजी मे चले जा रहे थे, सगमरमर की सडक पर जूतो की टप टप की आवाज के साथ।

मदिर के सामने भरे तालाब मे से ठण्डी ठण्डी हवा की तरंगे उठ रही थी। शान्त हृदय मे हल्का और मिठा ज्वार भाटा उथल पुथल सी मचा रहा था।

सामने सफेद रग को बुद्ध की मूर्ति विचारो मे खोयी हुयी, गम्भीरता को धारण करती हुयी मानो अब भी दुनियां को सदेश सुना रही हो।

मूर्ति पर कलाकार ने ऐसे भाव प्रकट किये थे। देखने मात्र से ही हृदयो मे उसके प्रति अपने आप ही श्रद्धा के भाव उत्पन्न हो जाते थे।

किसी भी धर्म को मानने वाला क्यों न हो ? कितना ही क्रूर क्यो न हो ? अपने आप उस सजीव पत्थर की मूर्ति के सामने हृदय मे श्रद्धा उत्पन्न हो जाती थी।

उमी मूर्ति को वहिदा और जयदेव कुछ देर तक तो देखते
है। कुछ कालान्तर वाद अपने आप मस्तिक उन मूर्ति के सामने झुक
गा।

जय देव मध्य मे छायी हुयी मोन को तोडता वोला "वुद्ध जी की मूर्ति
को जाने मे कितनी वार देख चुका हूँ पर हमेशा अतृप्त होकर ही जाता
।' इस मूर्ति मे न जाने कितना आकर्षण है। जाने मैं इनको कितनी वार
ा चुका हूँ फिर भी मैं इसको हमेशा देखने के लिए उत्सुक रहता हूँ।'

वहोदा मूर्ति से ध्यान हटाती हुई जयदेव के चेहरे पर नजर जमाती
जी इमी को तो कला कहते हैं।'

मूर्ति को देखने के लिए आदमी आ जा रहे थे, उनमे अधिकतर
हर के आदमी थे। जयदेव मन्दिर की सारी कला के वारे में वहिदा को
ाता कभी शहर की भी कला का वर्णन कर देता था।

उसकी वातो से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि शहर की भूत काल मे
ा का कितना गौरव रहा होगा।

दोनो घूमते घामते मन्दिर से तलाव पर आ खडे हुये, तालाव इतना
ा था जहा तक नजर जाती थी वहां तक पानी ही पानी नजर आता था।
मे छोटी-छोटी लकडी की नावें चप चप की आवाज के साथ, पतवारो के
रे जल मे तैर रही थी। दोनो किनारे किनारे अपने अपने विचारो मे डूबे
थे दोनो एक दूसरे पर विचारते धीरे-धीरे पांव वढाते चले जा रहे थे।

जयदेव ने एक पत्थर उठाया और तालाव मे फेंकता हुआ वोला,
ार हो तो तालाव की सैर करवा दूं।

वहीदा ने मस्ति भरी नजर से जयदेव की ओर देखा, बोली, मेरा
विचार है, आप साथ दें तव ना?'

'तो फिर चलिये देर किस वात की।'

वहीदा फिकी सी मुस्कराहट भरती मखमली दूब पर पांव जमाती
लकडी की नावो की ओर चलने लगी।

नाव पानी मे आगे वढती जा रही थी वहीदा की नजर कभी जयदेव
ेहरे पर तो कभी उस गम्भीर जल मे जाती जिसकी शान्त लहरे एक
से दूसरे छोर पर टकरा रही थी।

वहीदा जयदेव से सटी, जयदेव ने तुरन्त दोनो के मध्य जगह बना दी।

वहीदा बनायी जगह को दूरी करती, 'आप का रिजल्ट तो नही आया न।'

'वही दो चार रोज मे आने ही वाला है '

जयदेव इसी के साथ वापस जगह बना दी वहिदा फिर सट कर आगे पढ़ोगें या व्यापार मे पडोगे। जयदेव वापस जगह बनाता, 'पढने का ही विचार है और वहीदा ने उसके वृक्ष स्थल पर सिर टिका दिया। जयदेव दूर हटना चाहता था परन्तु वहीदा ने अपने शरीर का पूरा भार जयदेव पर ही डाल दिया। जयदेव का हाथ सहलाने लगी। जयदेव के शरीर मे एक सिहरत सी दौड गयी। ठण्डे ठण्डे तिक्ष्ण बहार के झोके शरीर मे हलकी हलकी तरगे पैदा कर रही थी।

जयदेव उसके शरीर को हटाने का प्रयत्न कर रहा था पर उसके सिर मे चुम्बक की सी आकर्षण शक्ति थी, जो हटाने का विचार रखते हुए भी हटा नही पा रहा था।

उसके माथे पर पसीनो की बूंदे उभर आयी थी। वहीदा तिखी काजल भरी नजरो से देखती हुयी होटो ही होटो मे मुस्करायी।

'इस ठण्ड मे भी पसीने कैसे ?'

'जयदेव घबराता सा बोला' नही तो।'

'वहीदा ने कोई जवाब नही दिया अपने हाथ कि दस्ती से उसके पसीने पोछती बोली, 'परेशान नजर आ रहे हो, कोई कारण जरूर है।'

'जयदेव छुपाता, कृतिमता से हंसता हुआ बोल।'कुछ भी तो नही है।'

मुझे तो ऐसा लगता है मैं आपकी करीब हो गयी इसी से डर रहे ह'।'

जयदेव के लिए यह वाक्य सत्य था जो हृदय मे चुभता सा चला गया।

वहीदा उसके मु ह को देखती हुई सी बोली 'मैं तो साफ दिल से कहती हूँ कि मेरा दिल तुम्हे चाहता है

'क्या तुम मुझे नही चाहते ?'

जयदेव इस बार मुह खोला, 'मैं तो चाहता हू चाचा क्या सोचेगें ?'

वहीदा उसकी सारी परेशानी को इसी वाक्य मे भाप सी गयी और, चाचा स्वय तो अपनी लडकी को रख नही सकते है। किसी न किसी को देना जरूरी है। और फिर अब्बा ऐसे है नही जो जाति पाति की आड लेकर मेरे अरमानो का गला घोट दें।'

धीरे-धीरे नाव गहरे पानी मे उतरती जा रही थी। तालाब मे सफेद अरविन्द अपनी मुस्कराहट की एक अनोखी छटा निखार रहे थे। 'वैसे मैं तुम्हारी बात मानता हूं परन्तु............परन्तु कुछ नही हाथ बढाय देखते क्या हो ?'

जयदेव मुस्कराहट के साथ हाथ बढा दिया वहीदा का हल्का सा हाथ दबाता प्यार भरी नजर से उसकी ओर देखा, वहीदा की पलकें झुक गयी।

अधिक गहरे पानी होने के कारण कमल के दल अधिकता के साथ उनकी राह मे आ रहे थे। वहीदा ने एक मुस्कराता फूल तोडा और जयदेव की ओर बढा दिया।

जयदेव उसके हाथ का फूल जूडे मे लगाता फिका सा मुस्करा दिया। वहीदा ने वापस अपना सिर जयदेव के वृक्ष स्थल पर लगा दिया और जयदेव उसके बालो से खेलने लगा। नाविक ने नाव को किनारे की ओर घुमाया। दोनो बाहो मे बाहे डाले घर की ओर चलने लगे दोनो के हृदयो मे उथल पुथल सी मची थी। थका मन्दा सूर्य अपनी राह पर चला जा रहा था। हंसी मुस्कराती नादान सध्या का आवगमन् हो रहा था।



चार

• • •

"अगर आपने मुझे धोखा दे दिया तो मेरा क्या होगा ?'

जयदेव वहीदा की ओर मुस्कराके, "अगर तुमने मुझ से प्यार किया तो धोखा का सवाल ही पैदा नही होता है।'

दोनो बाहो में बाहे डाले, उन खण्ड हरो की ओर जा रहे थे जहा पर पूर्वजो के दुर्ग के भग्नावेश खडे थे। आज वह यादगार बनकर लोगो के दिलो मे समाये हुये थे।

प्यार के व्यापार मे वहोदा उतार चढाव खाती बोली, 'आपने ठीक प्रकार से नही बताया आप पढोगे या व्यापार करोगे।'

'देखो वहीदा बात यह है कि बी. एस. सी के बाद मैं मेडिकल कालेज से चला जाऊंगा वैसे मैं तो नही चाहता परन्तु दादा साहब की मरजी ऐसी ही है।

वहीदा सोचती सी 'बी. एस सी. के बाद एम. एस सी. ही अच्छा रहेगा।'

जयदेव वहीदा को समझाते हुए बोला 'बात मेरी और तुम्हारी नही है बात बडों के चाहने की है।'

वहीदा मुस्कराती 'जब ही तो मैं बोलती हूं आप धोखा न दे दे, क्योकि आप बड़ो को ज्यादा मानते है।'

इस पर जयदेव थोडी देर मुस्कराता रहा दोनो दुर्ग की सिढियो से होते उपर चढने लगे जहाँ बडी–बडी घास और उन पर नाम मात्र की तोपें रखी थी जो शायद अब चल भी नही सकती हो।'

दुर्ग और तोपो का स्थान देखने से ऐसाप्रतीत होता है कि दुश्मनो पर आसानी से गोले फेकें जाते होगें।

और यह भी लगता था सारा शहर उसी के नीचे दिखाई पडता था।

जयदेव लगातार वहीदा को समझाता हुवा बोला आज के कई वर्ष पूर्व मानसिंह ने बनाया था ....यहां से आती फौजों को देखा जा सकता है हर प्रकार से वहिदा को समझाता समझाता दुर्ग के नीचे ले चला। जहा सिन्नन की बदबू आ रही थी।

दुर्ग को इस ढग से काटा गया था कि यहां बहुत असुरक्षित और फौजें सुरक्षित रखी जा सकती थी। जिससे की दुश्मन को वास्तविक स्थिति का पता न हो सके।

जयदेव की बातो से यह प्रतित हो रहा था कि पहले भी कई बार आ चुका है।

वहीदा उस अन्धेरे मे देखती हुई पिछे रह गयी अन्धेरे मे इधर उधर देखने लगी तो जयदेव दिवार मे सट कर खडा हो गया। कुछ देर तक तो वहीदा इधर उधर नजर फेंकती रही। जब कुछ भी नजर नही आया तो जोर से आवाज दी जयदेव, आवाज कमरे की दिवारो से टकराकर परिवर्तन होकर उसी के कानो मे गूंजने लगी और सहमत से कदमो को आगे बढाने लगी जहा दीवार के चटक जाने के कारण प्रकाश छन छन भर बाहर आ रहा था। वहिदा को जयदेव ने अपने बाहु पाश मे कस लिया वहिदा सिमटती सी अपने शरीर का सारा भार जयदेव पर हे ही छोड दिया। वहदीा की आंखो मे गुलाबी रग चमकने लग गया था।

दोनो कुछ समय के लिए एक हो गये, दिल की धडकने तेज हो गयी।

वे बाहर आये तो हल्की हल्की वर्षा बरसने लग गयी थी। वहीदा के गुलाबी गालो पर गहरा गुलाबी रंग छा गया था। वर्षा होने के साथ ही वातावरण से महकता भी छा गयी थी। जैसे ही वे वापसी नीचे उतरने लगे वर्षा जोर से फूट पडी और नजरो ही नजरो से एक दूसरे की ओर देखेने लगे और भीजने से वापस उन खण्डरो मे जा रुके।

दोनो की नजर मिलते ही वहिदा हलकी सी शर्म के साथ बातो से चुप्पी करने लगी और कुछ देर बाद 'जब मे यहां से चली जाऊं फिर आप कब मिलोगे ? जयदेव बहुत ही 'तेज मे बोला मेरा रिजल्ट आऊट होते ही आऊगा।'

'कही ऐसा नही हो, मैं इन्तजार मे ही मरिजाऊ·········जयदेव ने कोई जवाव नही दिया।

वर्षा उसी प्रकार पड रही थी। हवा टस से मस नही हो रही थी। कही पत्ता भी हिलता नजर नही आ रहा था। पेड पानी के भार से पृथ्वी की ओर झुके जा रहे थे। जयदेव भीनी भीनी मुस्कराहट छोडता, कुछ देर उपरान्त बोला 'इन्तजार का फल भी तो मिठा होता है।'

वहीदा झुंझलाती सी आप तो हमेशा मिठी मिठी ही बातें करते हैं।'

जयदेव उपर से गिरते पानी की चुल्लू भर कर वहीदा के मुंह पर छोडता बोला, 'कल से मैं कडवी बातें किया करुगा। जिन पर भी तुम हमेशा विश्वास रखोगी।

'लेकिन यह पानी मेरे मुंह पर क्यो ?'

तुम्हारे गुलाबी मुंह पर जब यह पानी की बूंदे चिपकती है तो तुम्हारी खूबसूरती मे चार चाद लगा देती है।

वहीदा कंठती सी आंखे दिखाती, 'हट। आप तो हमेशा ही ऐसी बाते करते हो।' 'इस वक्त तुम कितनी खूबसूरत लग रही हो।'

इतने मे जोर से बिजली का झपका हुआ गर्जना हुई और वहीदा पास बैठे जयदेव को अपने बाहुपास मे कस लिया। जयदेव हल्का सा उसको दबाता उसकी पीठ को सहलाता रहा।

हवा ठण्डी बहने लग गयी थी। वहीदा और जयदेव पास की लतायें पेडो पर चिपक सी गयी थी। जैसे जैसे हवा का झोका तेज आता वैसे ही वे पेड से गले मिलती जा रही थी।

जय देव कुछ उदास सा था। वहीदा उसी की बगल मे बैठी थी एक हाथ उसी की जाँघों पर रखा था।

दोनों की मध्य की मौन को तौडती, 'मुझे ऐसा लगता है जयदेव अब तुम कब मिलो············।'

जयदेव बीच मे ही बात काटता, 'बस रिजल्ट आउट हुआ और मैं आया।'

जयदेव विचार करता 'अगर तुम विश्वास नही रखती हो तो मै इसी वक्त मा से बोल कर चाचा से तुम्हारा हाथ पक्का करवाऊ ।'

वहीदा डरती सी, 'नहीं अभी नही।'

जयदेव उसकी हालत पर मुस्कराता, 'फिर तुम्हे डर भी है और विश्वास भी नही।'

'मेरा दिल जाने क्यो धडक धडक कर रहा है ?'

'प्यार मे अक्सर ऐसा ही होता है।'

इतने मे नीचे से आवाज आई, 'वहिदा बेटी जल्दी तैयार होकर आ जाओ अब चलना भी है।'

अभी आयी अब्बा जान। वहीदा उठती ही तरस्ती हुई निगाहो से जयदेव की ओर देखी। जयदेव ने मुस्कराके उसकी ओर हाथ बढा दिया वहिदा उसके हाथ को चूम कर याद रखना·········।'

'जरूर।'

दोनो प्यासी निगाहो से आपस मे देख। अधूरे और काल्पनिक विचारो के ताने बाने बुनने लग गये।

कोई दस बजे थे आसमान पर काली घटाओ ने अपना राज्य फैला लिया था। हवा न बहने के कारण अपने आप ही शरीर से पसीने छूट रहे थे।

रहमान, राजाराम और माया तीनो गाडी के पास ही खडे थे। रहमान घडी पर निगाहे डालता, 'देखो हमारी लाडली अभी तक भी उपर से नही आयी।' उसका तो यहा ऐसा जी लग गया है पूछो मत अगर वो चाहे तो मैं उसको तुम्हारे हवाले ही कर जाऊं।

राजाराम मुस्कराता, 'तू कब हमको अपनी बेटी देने वाला है जाती वालो को देता ?

जयदेव उनकी बात सुन कर पर्दे की ओट मे हो गया।

रहमान गम्भीर होकर, 'मेरे दोस्त को देता, जातीवालो को नही दूंगा। पर शर्त एक है कि वह यहा रहने के लिए रजामद भी तो हो।'

माया रहमान की बात का उत्तर देती 'वह तो खुश है।'

'तो तुम आज से ही उसे बहू समझो।'

इतने मे वहीदा उदास, खोयी खोयी सी मु ह लटकाये बाहर आ गयी। जैसे उसका सब कुछ यही हो और विवश करके उसको भेजा जा रहा हो।

उसके मु ह से साफ जाहिर हो रहा था उसका मन रो रहा है उसकी भावनाओ को ठेस पहुचायी जा रही है। फिर भी वह कृतिम भावो के साथ मुस्कराने कि कोशिश कर रही थी।

उसके पीछे पीछे जयदेव भी हलकी सी उदासी के साथ बाहर आ गया। वहीदा को बाहर आते ही अच्छा भाई अब चलते हैं बाप-बेटो दोनो कार मे बैठ गय और कार बढ गयी राजाराम मुस्कराता, 'आज न जाकर एक दो रोज मे चला जाना।'

वाहा। वाहा। यार तू तो कभी आता ही नही है।

'अगर तू आजाता है तो कौन छोटा हो गया।'

जैसे ही गाडी फाटक से पार हुई वहीदा जयदेव की ओर देखती, 'देखो जरूर आना मै इन्तजार करु गी।'

'जरूर आऊ गा।'

इसी के साथ वहीदा की आखो से प्रेम भरे दो आसू गालो पर लुढक गये।

उसके दिल मे आया, मैं अब्बा से बोल दू मे नही जाऊ गी वहा मेरा मन नहीं लगेगा और तुम तो आज नही कल अपने घर से विदा करोगे। पर फिर खयाल आया पिता है, उसका अधिकार है हर कार्य सीमा मे होना चाहिये सीमा से बाहर नही।

ट्न ट्न ट्न ……रिक्शे की घटी टन-टना उठी। रवि को होश आया। रिक्शा वाला अपनी गद्दी पर बैठ चुका था और रिक्शा के पहिये तेजी से तारकोल की सडक पर फिसलने लगे थे। न जाने किस आकर्षण से बंधा रवि भी रिक्शा के पीछे-पीछे चल पडा। युवती कभी पीछे मुड कर देख लेती तो विचित्र सन्तोष-सा मिलता उसे। वेशभूषा से वह साधारण मध्यवर्त्ती परिवार की लग रही थी। उम्र मे वह उन्नीस बीस से अधिक की नही लगती थी।

अचानक एक मोड़ पर रिक्शा रुक गया। रवि आगे बढ़ने को ही था कि रसधार-सी उसके कर्ण कुहरो मे बरस उठी। उस युवती ने कोमल स्वर मे पूछा, 'क्या आप बता सकते है कि ऊषा नृत्य एव सगीत विद्यालय कहा है ?'

'विद्यालय····· ···?' रवि सोचने लगा।

'हां, अभी कुछ ही दिन पहले खुला है, मुख्य मत्री जी उसका उद्घाटन करने आए थे।' नवयुवती ने उसे सहारा देते हुए कहा।

'ओह ! अब याद आया।' रवि ने उत्सुकता से कहा 'चलिए। मै भी उधर ही जा रहा हू, आपको पहुचा दूंगा।' और प्रसन्नवदन रवि साईकिल पर सवार हो गया और रिक्शा उसके पीछे पीछे चल पड़ा।

नवयुवती विचारो की उधेड़बुन मे लगी थी। शायद सोच रही थी अपने इस नए सहायक के विषय मे जो अभी कुछ देर पूर्व उसके रिक्शे से टकरा गया था, और अब उसका मार्गदर्शन कर रहा था। दूर सामने ही 'उषा नृत्य एव सगीत विद्यालय' का बोर्ड चमक उठा। रवि के सकेत पर रिक्शा रुक गया पर नवयुवती तो किसी और ही लोक मे विचरण कर रही थी, उसका ध्यान भग किया उसके पास बैठी छोटी बालिका ने जिसकी आखे उत्सुकता-वश बोर्ड पर बने सुन्दर चित्रों पर घूम रही थी। 'बहन जी स्कूल आ गया।' उसने कहा और नवयुवती कुछ चौक कर, कुछ लजाकर तुरत रिक्शा के नीचे उतर पड़ी। नीची निगाहो से जमीन पर देखते हुए उसने कहा, 'धन्यवाद ! बड़ा कष्ट उठाना पड़ा, आपको।' और उसका मुखमडल आरक्त हो उठा।

'जी, इसमे कष्ट की क्या बात है ? मुझे तो इधर आना ही था।'

'क्या आप भी कही इधर ही रहते है ?'

'जी हा, वह सामने जो नीला-सा मकान दिखाई दे रहा है उसी मे रहता हूं। कभी आवश्यकता पड़े तो मुझे निस्सकोच बुला लीजिए। रवि आगे बढ चला। एक बार मुड कर देखा तो नवयुवती के नयन उसे प्यार का मौन निमन्त्रण दे रहे थे।

रवि घर लौटा तो विचित्र-सी रिक्तता से भर उठा उसको लगा कही कुछ छूट गया है। वह चुप-चाप कमरे मे जाकर लेट रहा,

तक जलाने की इच्छा न हुई । मदभरे नयनो का वह मूक निमत्रण उसके मानस पलट पर बारम्बार उभर रहा था । उसके हृदय मे हलचल-सी मच गई, आखों की नीद उड गई । उसने अभी शाम का खाना भी न खाया था. पर भूख न जाने कहा गायब हो गई थी । वह सोच रहा था, उसका, कितना संगीत-मय कठ है उसकी वाणी मे । कितनी लोच, कितनी कोमलता, कितना मिठास है, मै उसे प्यार कर पाता और अपने सगीत पर सजाता उसकी पायलो की झनकार ·······और उसे ऐसा लगा कि विश्व का अणु अणु नाच रहा है । एक विराट सगीत एवं नृत्य प्रतियोगिता हो रही है और उसमे गू ज रहा है रवि की वीणा का सगीत और मदमाते नृत्य की मुद्राओ मे खोई उस रूपराशि की पायलो की झंकार ··· 'दर्शक झूम-झूमकर सराहना, एवं प्रशसा व्यक्त कर रहे है । तभी अचानक बत्ती जल उठी । रवि ने देखा सुषमा के हाथ बत्ती जला कर वापस लौट रहे है । वह चुप पडा रहा ।

'क्या आज खाना नही खाओगे, रवि ?'

'नही, भूख नही ।' सक्षिप्त-सा उत्तर दिया रवि ने और मुंह फेर लिया ।

'मुझे क्षमा करदो, रवि । उस समय आवेग मे मै न जाने क्या कुछ कह गई थी ।' पश्चात्ताप झलक रहा था सुषमा की वाणी से ।

'पगली, क्षमा की इसमे कौन-सी बात है ? फिर मेरे नाराज होने से तुम्हारा बनता बिगडता क्या है ?' रवि ने बिना उसकी ओर मुंह उठाये ही कहा ।

'ऐसा न कहो, रवि । मै तुम्हे समझ न पाई । मुझे क्षमा करदो; मै तुम्हारे पावो पड़ती हूँ' और उसने आगे बढ कर रवि के पांव पकड लिए । उसके पांवो पर तप्त आसू चू पड़े । रवि का क्रोध हवा हो गया और वह हड़बड़ा कर सुषमा के आसू पोछने के लिए, उठ बैठा ।

'सुषी, इन बहुमूल्य आसुओ को यू न बहाओ ।'

'जब यह तुम्हें मना नही पाते तो इनका मूल्य ही क्या ?' मान करते हुए कहा सुषमा ने ।

'मुझे न सही किसी और को मनाने के काम तो आयेंगे ही। कोई इन्हे बड़ा कीमती समझेगा।' रवि ने कृत्रिम गम्भीरता से कहा।

'अच्छा, छोड़ो भी यह सब बातें। चलो, खाना खाओ, आखिर खाने ने क्या बिगाड़ा। ठहरो, मैं यही ले आती हूँ, तुम्हारे लिए। और बिना उसके उत्तर की प्रतीक्षा किए वह दौड़ चली खाना लाने।

खाना खाकर रवि लेटा ही था कि उसके मस्तिष्क में कुछ घटों पूर्व की वह घटना घूम गई और सुषमा के अन्तिम शब्दों को याद कर वह सिहर उठा। जब वह बर्तन लेकर जा रही थी तो रवि ने कहा, 'सुषी, एक बात कहूं बुरा तो न मानोगी?'

'कभी बुरा माना है, तुम्हारे कहने का, रवि?'

'सुषी, अच्छा इसी में है कि तुम मुझे भूलने का प्रयत्न करो। मैं जानता हूँ दस वर्ष से तुम मेरे लिये पागल बनी हो। पर जो प्यार तुम मुझ से चाहती हो वह शायद मैं तुम्हे कभी न दे सकूं।'

'ऐसा न कहो रवि। मैं किसके सहारे जीऊंगी। मेरा दिल न तोड़ो।' और उसका स्वर गीला हो उठा।

टन टन टन ......कर दूर किसी घड़ियाल ने बारह बजने की सूचना दी। सुषमा बर्तन सम्भालकर नीचे उतर आई। रवि न जाने क्या बड़बड़ा रहा था उसके पास धैर्य न था उसके प्रलाप को सुनने का।

रात्रि के अन्धकार मे रवि उस नव परिचिता युवती और सुषमा की तुलना करने लगा। उन दोनो मे स्पष्ट ही एक गहरा अन्तर प्रतीत हुआ उसे, ठीक वैसा ही जैसे चांदनी और कुहास मे होता है, विद्युल्लता और काली घटा मे होता है।

और वह धूमिल स्वप्नो की छाया मे खो गया।

× × × ×

माया उठती, 'देख रिछ्र के से बाल उग आये पानी गर्म करवा दूं क्या?'

'करवादो।'

माया ममता भरे दोनो करो को सिर पर फेरती, 'तू उदास मत रहा कर, मेरा जी' .....माया की बात सुनकर जयदेव हलका सा मुस्कराया

"माँ क्यों चिन्ता करती है मैं तो भला चगा ही हूं।'

माया के पिता को कुछ राह मिली थी। वह जयदेव को खुश करने के प्रयत्न मे सफल सी हो गयी थी।

जयदेव कपडे पहन कर तैयार हुआ ही था। नोकर मुस्कराता बाबू आप का फोन।'

जयदेव उससे कुछ नही बोला हलके दर्द को दबाता सा फोन की ओर बढा गया।

जयदेव मुस्कराके चोगा को रख दिया। गम के भावो का आवरण ढिला हो गया था। उसके चहरे पर खुशी के भावो के साथ साथ आखों मे चचलता छा गयी थी। वह तेज कदमो से भागता माया के चरण स्पर्श करता, 'फर्स्ट डिविजन और दूसरी पौजिसन।

माया-खुशी मे झूम उटी प्यार भरे कर उसके सिर पर फेरती ममता बस उसका सिर चूम लिया, अनायास ही उसके मुह से शब्द फूट पडे, 'मेरे लाल समय समय पर ऐसे ही नाम रोशन करते रहो ?' माया मुस्कराती 'अभी तो अखबार भी नही आया किसने खबर दी ?'

'दादा साहब ने।'

जयदेव पास हो। की खुशी मे झूम उठा था वह भूल गया था उसके एक कोने मे वहीदा का दर्द भी टीम भर रहा है। परन्तु समय के अनुकूल वह दर्द उभर कर उसके दिल और दिमाग पर अम्बर बेल की भांति छा गया था।

वह पास होने की खुशी मे उस दर्द को समय के मुताबिक भूल सा गया था।

जयदेव अगूठा और अंगूली का एक झटका लगाता मुस्कराया और माया उसके इशारे को समझती हुयी, 'देती हूँ, मैं जरा यह फूल निकाल लूं।'

नही मां फिर तो देर हो जावेगी।'

माय: चादर को दूर हटाती कितने चाहिये।'

'यह तो पुण्य का कार्य है जी खोल कर दे दो न माया मुस्कराती 'जब ही तो बोल रही हूँ कितने चाहिये ?'

'जितने अधिक दे सको ।'

'अधिक के बारे मे तुम जानो और तुम्हारे दादा साहब, मा तुम तो जानती हो अपना बैंक कौन है ? कौन है ?

'मा'

जयदेव खिल खिला कर हँस पडा माया मुस्कराती हुई, 'डोहरे तो तो देना ही पडेगा ।'

तिजोरी मे चाबी घुमाती मुस्कराय जा रही थी रह रह कर उसका वाक्य याद आ रहा था अपना बैंक माँ अपना बैंक मा ।'

सौ सौ के नोटो की एक गड्डी उठाकर उसके दो भाग करती, 'घर मे सभी को लड्डू बाटना ।'

'जरूर मा फिर तुम किस लिए दे रही हो ?'

'माया तिजोरी को बन्द कर यह है पूरे पाच हजार अब मे किसी पार्टी वार्टी के लिए एक पैसा भी खर्च नही करूँगी और हाथ के नोट जयदेव को सम्भला दिये ।

जयदेव बैगर गिने ही नोटो को जेब के हवाले करता, 'पार्टी का कार्य दादा साहब करगे हम नही ।'

'गयी बार किसने दी थी ?'

'गयी बार की बात छोडो इस बार तो दादा साहब ....'

माया मुस्कराके वापस चारपाई पर बैठ गयी जयदेव झूमता सा चला गया ।

माया सफेद चादर मे रंग बिरगे धागे मे अनुपम शोभा उतारती जा रही थी । चादर मे क्षण प्रति क्षण एक अलग ही निखार आता जा रहा था तेजी के साथ चलता हुआ रुका कमला मुस्कराती, लाओ हमारे लड्डू माया मुस्कराती, 'पास हम थोडी ही हुये है ।'

'लेकिन, वो बोल गये है मा के पास जाओ । माया उसी तरह मुस्क-राती, "बडा तेज है ।' हाथ से इशारा करती उस रेक मे से सौ रुपये निकाल लो तुम्हारी इच्छा अनुसार लड्डू खरीद लाओ ।'

कमला मालकिन के उदार पने को देखकर चुप हो गयी । जो भी मागो उसी समय निकाल कर दे देती है महिने के पैसो मे से कई गुना अधिक

पैसे ले चुकी हू। पर कभी नही बोली कमला तू तो बहुत पैसे आगे ले चूकी है। किसी चीज की इच्छा हो बोलने भर की देर है‥‥ ‥‥वास्तव मे इसका दिल एक सागर हैं। किसी की क्या मजाल कोई इससे रूठ जावे। वह' विचारो मे डूब ही रही थी

माया के हाथ चादर पर तेज गति से शोभा बढाने मे लगे हुये थे।

अचानक माया को ख्याल आया, 'अरे तुम खडी हो रुपये निकाल ले जाओ मैं क्या दूंगी ?'

माया घबराहट और विचार के साथ आगे बढती, 'नही कोई बात नही है, राजा स्वय बोल गया है लड्डू ला रहा हू। माया मुस्कराती.' तुम्हे मालूम नही कि वह रात से पहले लौटने वाला नही इसलिए उसके लड्डू तो कल मिलेगें।'

'तो क्या हो गया ? कल खा लेगें।'

'फिर भी तो कोई न कोई आ ही जावेगा, और जरूरी है लड्डू मांगेगा। इसलिए दस किलो तो ले ही आओ।'

इस बार कमला मजबूत सी हो मेज की ओर बढ ही गयी।

लडके के पास होने की खुशी मे नौकरो को मिठाई आगे तनख्वाह की साथ मे हर एक को दस दस रुपय अधिक दिये। स्वय भी भूखो को भर पेट रोटी और कपडा बाटा गया।

अपने स्तर के लोगो को पार्टी भी दी। कहने का मतलब इतना है उसने अपनी ओर मे कोई किसी प्रकार कसर न रखी।

छः

• • •

जयदेव को मैडिकल कॉलेज मे प्रवेश मिल गया। राजाराम खुश होता अपने बेटे को जाने के लिए आज्ञा दे दी।

जब वह मैडिकल कॉलेज मे पहुँचने के लिए अपने माँ-बाप के साथ रेल्वे स्टेशन पर आया तो गाडी तैयार खडी थी।

नौकर ने टिकट जयदेव को दे दिया और जयदेव का सामान फर्स्ट क्लास के डिब्बे मे रखवा दिया।

स्टेशन की भीड छटती चली जा रही थी कुलियो का चिल्लाना और चितकार भरी आवाज थी वह खत्म सी हो गयी थी।

इ जन ने तैयार होने की सिटी दी, दूसरे ही क्षण मिलने वाले प्लेट फार्म पर आ खडे हुये। हर एक के मुंह पर मलिनता छाई हुई थी। किसी न किसी प्रकार के बिछुडने के भाव हर एक के मुंह पर छाये हुये थे।

वृद्ध झुरियो भरे चेहरे राजाराम को भी एक दु.ख था वह कि उसका वेटा उनको छोडकर वाहर जा रहा था।

राजाराम गम्भीर स्वर मे बोला देखो, वेटा जाते ही चिट्ठी टाल देना वरना ट्रंकाल कर देना जिसमे मुझे चिन्ता न हो। अगर चिट्ठी मे देरी की तो मैं स्वय चला आऊंगा।'

जयदेव खुश था। परन्तु उसका दिल मा वाप के अलग होने मे हल्का सा वैचेन था। क्योकि पहली वार मां-वाप की छाया मे दूर जा रहा था। पिता को सान्त्वना देता, 'नही आप किसी प्रकार की चिन्ता न करे मैं जाते ही आप को शुभ सूचना दू गा इसमे किसी प्रकार की भूल नही होगी।'

अव स्टेशन पर कुछ मुख्य आदमी ही थे जो गप्प सप्प मे लग रहे थे। कोई किसी को समझा रहा था। कोई किसी को राय दे रहा था।

इतने मे, गार्ड ने सिटी दी। हरी झडी लहरान लगी। इन्जन ने अन्तिम चीख मारी।

जयदेव मां-वाप के पाव छू कर उठा। पिता ममता वस माथा चूम लिया, मा गले मिल कर प्रेम के आसू वहाने लगी।

माया आसू को पल्लू के भर कर, 'जाओ वेटा गाडी चली जायगी।'

जयदेव उदास, हो वोला 'मा तुम रो क्यो रही हो ?'

राजाराम सान्त्वना देता. 'यह तो मा है, ममता है वरस ही जाती है। रो नही रही है यह तो खुशी के आसू है।'

इसके साथ ही गाडी रेंगती चलने लगी। राजाराम इसी घबराहट के साथ, 'जाओ वेटा जाओ।

जयदेव, कभी आगे और कभी पिछे देखता भागता हुआ डिब्बे मे जा चढ़ा।

उदास और प्यार भरी नजर मा-बाप की ओर देखा मा के आखो से आसू भर रहे थे। पिता की आखो की पुतलिया डबडबा आई थी। परन्तु फिर होट मुस्करा रहे थे।

उनको कितना दुःख था पर दु.ख के साथ उनको खुशी थी कि उन्ही का भविष्य उज्जवल होगा।

मा-बाप हाथ हिला रहे थे उधर उनका बेटा भी हाथ हिलाकर प्रति उत्तर दे रहा था। गाड़ी ने तेज गति पकडली कुछ ही मिनटो मे आखो से ओझल हो गये।

राजाराम आंखो का नीर पौंछता बोला, 'मुझे दुख इस बात का है, मैं स्वय उसको कार मे छोड आता तो ठीक रहता, परन्तु क्या बताऊं मजबूर था वैसे उसके पास कार छोड देता परन्तु होस्टल मे कहां रखता।'

माया फिकी सी मुस्कराके, 'वह तो गया अब पछताने से क्या होगा ?'

इसका राजाराम ने कोई उत्तर नही दिया और चुपचाप स्टेशन छोडकर सडक पर आ खडा हुआ। जहां जनजीवन मे हल्की हल्की सी हलचल मची हुई थी। दोनो के एक से विचार उठ रहे थे। वह कैसे रहेगा, उसको खाना समय पर मिलेगा या नही अगर उसकी तबियत खराब हो गयी तो, वहां उसका कौन ? किसी से लडाई झगडा हो गया, फिर............?

बहुत लडके आते होगें इतना बडा कालेज है, हर चीज व वस्तु तथा रहने की तो सुव्यवस्था होगी ही। पर कौन जाने ये सब बातें कहा तक सत्य है ? हम कहा सिर्फ विचार है, विचार..............'

इस प्रकार के बहुत विचार उठते और खत्म हो जाते थे। जैसे ओस की बूदें पडती हैं और खत्म हो जाती है।

राजाराम कार को सम्भालता हुआ, व्यवस्थित जनजीवन मे होता अपनी मजिल की ओर चला रहा था।

जब वे मकान पर पहुँचे तो माया मुस्करानी, 'जयदेव न होने के कारण कितनी सूनता नजर आती है।'

राजाराम हाँ में हां भरता, 'हा यह तो है ही, हरेक को क्या मालूम ? सूनता जब तक ही नजर आती है तब तक की हृदय में उस व्यक्ति की याद बसी रहती है।

वे दोनो इसी प्रकार बातें करते कुछ समय व्यतीत कर देते जयदेव कुछ कुछ यादो का स्मरण करके मुस्करा देते।

× × × ×

बेटे बेटी की याद मे कुछ दिन तो गुम सुम सा रहा थोड़े दिन बाद राजाराम अपने व्यापार मे फिर व्यवस्थित हो गया।

रेल्वे स्टेशन पर पूरी तीन गाड़ीया अनाज की भरवाकर विभिन्न प्रान्तों व विभिन्न व्यापारियो के नाम दर्ज करवा कर।

खुश होता हुआ पूरे काम धाम से निवटकर तथा व्यापारियों से मिलजुल कर अपने घर चला आया।

राजाराम को हिसाब तैयार करना था। वह दुकान मे बैठा मुनिमो की सहायता से सारा कार्य कुशलता के साथ करता जा रहा था। जिनके रुपये देने थे उन सब के हिसाब के अनुसार गिन गिन कर वह थैले मे रुपये रख रहा था। जो बडे व्यापारी थे उनके नाम से चैक काट कर पहुंचा दिये गये था।

आसमान पर पिला पन छा रहा था। क्षण प्रति क्षण ऐसा लग रहा था कि तेज आंधी के आने की सम्भावना है। अन्धेरा बढता जा रहा था पर सूर्य अभी अस्त न हुआ था। फिर भी आसमान पर गर्द छाई हुई थी। राजाराम मुनिम को नोटो का थैला देकर एक तरफ रखने को कहा।

उसी क्षण तीन व्यक्ति जिन की बहुत ही सभ्य पोशाक थी। वे उट-पटाग अनाज का भाव पूछने लगे उनमे से एक व्यक्ति मुनिम से बडी ही विनम्र और सत्यता के साथ, कहा कि 'कृपा, आपको एक बन्धु बाहर याद फर्मा रहे है।'

मुनिम चुपचाप उठकर बाहर चला आया।

उसी क्षण उपर फोन की घण्टी बजने लगी। राजाराम झुंझलाहट के साथ उपर गया।

दोनों को इधर उधर चले जाने के बाद एक व्यक्ति आराम के साथ बड़ी सफाई से रुपयो का थैला उठाकर उस गर्द भरे मौसम मे गायब हो गया।

राजाराम जैसे ही ऊपर से नीचे आया, बनिया होने के नाते प्रथम दृष्टि ही थैले पर गयी जो गायब था।

मुनिम अभी एक से बातचीत कर ही रहा था। राजाराम तेजी से इधर उधर देखने लगा परन्तु कुछ भी न मिला। वह एक दम सन्न सा खड़ा रह गया जैसे दिमाग ने कार्य करना ही छोड़ दिया हो।

आधी तेज हो जाने के कारण आसमान मे गर्द छा गई थी। इसलिए मुनिम उससे अधिक बातचीत न करके थोडी ही देर मे वापस आ गया।

'रुपयो का थैला ?' 'वह तो यही था।'

'इसका मतलब क्या वह गुण्डे थे।'

मुनिम जगह की जगह खड़ा रह गया उसका चेहरा एक दम पीला पड गया सोचता ! बरसो की इज्जत पर आज पानी फिर जावेगा। लोग नमक हराम बोलेगे। मुंह छिपाने के लिए कही भी जगह नही मिलेगी ? यह सारे प्रश्न उसके दिमाग मे एक साथ ही घूम गये। इतने मे आधी का एक झोका आया जो मेज पर कागज पडे थे वे उड़कर अन्दर चले गये।

दोनों एक दूसरे की ओर शका दृष्टि से देखे और अपने आप ही मुंह निचा हो गया।

मुनिम सोचता, 'पुलिस को सूचना दूं।'

'उससे क्या होगा ?'

मुनिम चुप हो गया उसको अपने पैरो तले की जमीन घूमती सी नजर आ रही थी।

उसकी चुप्पी पर राजाराम बोलाना, "तुम जानते हो पुलिस कैसी है ? सौ, दो सौ रुपये और एठ लेगें। इसके बाद वे अपनी सर गर्मी दिखायेगें और कालान्तर उपरान्त बोल देगे कोशिश कर रहे है।

मुनिम सुझाव रखता, "फिर भी पुलिस को सूचित कर देना अच्छा ही हैं आगे दूसरो के साथ तो नहीं होगा।"

राजाराम को यह सुझाव एकदम सही और बहुत अच्छा प्रतीत हुआ उसने बिना सोचे समझे बोल दिया, "आप पुलिस मे रिपोर्ट दर्ज करवा

दीजिये, ताकी ग्रोरो के साथ तो ग्रच्छा कार्य साबित होगा यह ग्रापने ग्रच्छा सुझाव दिया ग्रौर चाबियों का गुच्छा मुनिम की ग्रोर फेंक दिया जैसे की रोज ।

ग्राधि ग्रधिक तेज होने कारण बिजली गुल हो गयी थी । भयकर ग्रन्धकार छा गया था हाथ से हाथ सूझाई नही दे रहा था ।

राजाराम जिन्दगी के भूतकाल को सरसरी निगाह मे देखता जा रहा था जैसे कोई बिजली की डोरी कही से तो मोट नही हो गयी ।

उसकी जिन्दगी मे ऐसी कोई बात नहा हुयी थी जैसा कि ग्राने वाले समय मे हर बात-बात पर छल ग्रौर कपट खेला जा रहा था ।

उसको इस दुनियाँ से नफरत सी हो गयी । वह दुनियाँ को एक गदगी के रुप मे ग्रादमी की तुलना कर रहा था यदि ग्रादमी राक्षक होकर देवता बनकर ग्राजावे तो नरक के कीडे ही हीरे के समान हो जाते है यह प्रश्न उसके मस्तिष्क मे तडफडाते सर्प की भाँति एक छोर से दूसरे छोर तक चक्कर काट रहा था ।

बडी मधुर ग्रौर शान के साथ पास पटा फोन बोल उठा । राजाराम ने बड़ी उत्सुकता के साथ उसको कान से लगा लिया, जैसे उसके दस लाख रुपये मिलने का कोई सदेश सुनायेगा ।

"मैं स्टेशन मास्टर बोल रहा हूँ बड़े खेद के साथ कहना पड रहा है ग्राप की एक गाडी.. "

ग्रौर बीच ही मे चुप हो गया ।

राजाराम धडकते कलेजे ग्रौर बैठे स्वर मे "कहा रुक क्यो गये, कहो क्या हो गया ?"

"जैसे ही गाडी एक नाले पर पार हो रही थी बाढ ग्रधिक तेज गति पर होने के कारण पूरी की पूरी गाडी ही उस नाले मे समा गयी । यह तो ग्राप को मैं सूचना दे रहा हूँ लिखित मे पूरी रिपोर्ट ग्राप के पास पहुँच जावेगी ।

राजाराम के हाथ का चोगा छूट कर फर्श पर गिर गया । उनके मुंह पर एक दम पसिने उभर ग्राये । वह ठूंठ सा मूर्ति चारपाई पर बैठा

लेट गया। उसके कानो मे स्टेशन मास्टर के शब्द गूंज रहे थे। "पूरी की पूरी गाडी ही ...."

प्रकृति का उसके साथ एक अजीब ही मजाक सा हो रहा था दुख: आया तो ऐसा कि एकदम पहाड जैसे टूट कर ही गिर गया हो।

प्रकृति, प्रकृति ही है, उसकी जो मे आवे जैसे खिलाये इसमे, तुम्हारा हमारा कोई वश नही।

मेज पर माया ने मोमबत्ती रखी और कमरें मे नजर डाली तो, राजाराम के माथे पर सलवटें पडी थी, जैसे गहरे चिता के विचारो मे पडा हो। विन पानी मीन की भांति चटपटा रहा हो। माया आश्चर्य से उसकी हालत देखती रही, पर दूसरे ही क्षण, मे राजाराम को झिझोडती," हुई बोली क्या हो गया आप को ?"

राजाराम लम्बी लम्बी सासे भर रहा था। उसने तुरन्त ही दूरभाषी-के कानो को ऐंटा पर माया ने दुख के साथ उसे रख दिया क्योकि दूरभाषी चीखा चिल्लाया नही वल्कि सुस्तिनाथ की भांति चुप ही पडा रहा।

माया फिर दर्द भरे शब्दो मे, "वोली आप को ?" क्या हो गया।

लडखडाती टूटती भाषा मे, "तुम चुप रहो माया मेरे पास चुप चाप वैठ जाओ।"

राजाराम का शरीर थर्र थर्रा रहा था जैसे तीव्र सर्दी का वेग पड गया हो।

माया मेज से कम्वल उठाकर राजाराम के ऊपर डाल दिया, और कहां 'आपको अधिक सर्दी तो नही लग रही हैं यदि लग रही हो तो रजाई और डाल दू।"

राजाराम धैर्य और संतोष दिलाता हुआ, "तुम वैठे जाओ माया, किसी प्रकार कि चिन्ता मत करो मै ठीक हूं।"

माया घवराहट और आश्चर्य से उसकी ओर देखे जा रही थी जिसका झुर्रिमय चेहरा और आँखों मे एक चमक भी गायव हो गयी थी।

राजाराम को इतनी चिता रुपयो की नही थी जो मनुष्य जाति के

लए पग-पग पर काँटो का जाल बिछाना जा रहा हो, जिनमे से मनुष्य क्या जानवर का भी निकलना मुश्किल हो जाता है। फिर ईमानदारी और सच्चाई तो एक कौने में हाथ पाँव जोडे खडी भी रहे और बेईमानी ल० चोटो हँसती मुस्कराती प्रत्येक रास्ते मे निकल जाय, सच है जब युग बदल है तो हर वस्तु भी बदल जाती है इसमे सच्चाई और बेईमानी का ठ० नही हो सकता।'

राजाराम आखिर चारपाई पर लेट गया माया हल्के हाथो से उन सर को दबाती सी जा रही थी।

× × × ×

जयदेव के दिमाग मे अचानक जाने क्या सूझा। तुरत ही तैय ोकर बात की बात मे टक्सी स्टैण्ड की ओर चला गया उसको हल्की हू० और मिठी मिठी माँ की याद सता रही थी।

जब वह स्टेशन पर आया तो गाडी रेंग रही थी। वह अपनी छो० पेटी को झुलाता सा दोडा और देखते ही देखते प्रथम दर्जे के डिब्बे म० चढा।

गाडी अपनी गति पर हो गयी थी। वह एक लड़के के साथ अन्द० गया तो कम्पार्टमेन्ट मे तीन लडकियाँ सोई पडी थी। उनमे एक बै० पत्रिका पढ रही थी।

जयदेव भी अपनी सीट पर लेट गया और पखो पर नजर डाली उसमे एक बज रहा था। पत्रिका पढ़ने वाली लडकी चोरी-चोरी से उसे दे० रही थी और जयदेव अपने विचारों की महफिल मे लेटा किस नृत्यकी ० नृत्य देख रहा था।

अचानक गाडी हलके से झटके के साथ खडी हो गयी जयदेव विचार शृखलायें टूटे तो देखता है वह एक स्टेशन था।

चढने और उतरने वालो के कारण शोर हो रहा था। इस गुल गपा० मे सोयी हुयी लडकियो की आखे भी खुल गयी।

जयदेव एक ठेले वाले से ठण्डे पय की एक बोतल ली और धी० धीरे पीने लगा। माथे पर पंखा लटका घर घर की आवाज के साथ ० गति से ठण्डी हवा छोड रहा था।

पत्रिका पढने वाली लडकी, जयदेव को ठण्डा पेय पीते हुए चहरे को एक टक से देख रही थी जैसे ही जयदेव वापसी के लिए नजरे पसारी तो, दोनो की नजरें जा मिली, लडकी होटो ही होटो मे मुस्करायी और गर्दन निची कर ली। पास मे दोनो लडकीयाँ बैठी ऊघ रही थी। ऊंघते ऊघते गर्दन से गर्दन जा लडी जयदेव मुस्कराहट और डिब्बे मे छायी हुई मौन को तोडता हुआ बोला आप "कहाँ जाओगी।"

ऊघती हुई लडकी नीद से भरी भारी पलकें उठाई, "आपको क्या ?" पर इसी के साथ पास मे पत्रिका पढने वाली लडकी उसने मुँह पर हाथ रखती हुई बोली "जी हम तो शहर नगर जावेंगे।"

उन दोनो लडकियो ने कोई खाश ध्यान नही दिया और वापस सीट पर लेट गयी।

"क्या आप भी वही जायेंगे ?"

"जी, हाँ।"

जयदेव अपनी शका समाधान करता हुआ बोला "क्या आप शहर नगर मे रहती हैं ?"

"नही हम तो एक सहेली की शादी मे जा रहे हैं। और आप ?"

"मैं शहर नगर का ही रहने वाला हूँ।"

"आप क्या काम करते है ?"

"जी, मैं तो अम्बर के मैडिकल कॉलेज मे पढता हूँ ?"

इसके बीच ही मे एक लडकी बोली।

"जहा उतरना हो आशा जगा लेना।"

ठीक है रेखा निश्चित होकर सोओ।

"आप ?"

"मैं इन्टर की परीक्षा दे आयी हूँ।"

इसके बाद आशा ने कोई खास बातचीत नही की और पत्रिका उठा कर उसी मे खो गयी।

जयदेव भी आखे मूँद कर हलकी नीद मे सो गया।

× ×

सात

• • •

"माँ"

इसी के साथ ही जयदेव ने माया के चरण स्पर्श किये।

इसी के साथ ही माया के मुँह से अनायास ही निकल गया, "अरे तू..........? बड़ा अच्छा किया, तेरे दादा साहब की तबियत भी खराब है।"

जयदेव आश्चर्य से, "क्या ? कहां है वो ? यह सब एक ही वाक्य में बोल गया।"

"माया का दिल खिल सा गया था जैसे सूरज के निकलने से कमल।"

प्रसन्नता से, "वो, अपने कमरे में है तू चल, मैं आती हूं।"

जयदेव प्रणाम, पिता का आशीर्वाद लेकर कुर्सी खींचता हुआ, "क्या हो गया आप को ?" राजाराम जयदेव के आने पर खुश था। इसलिए फीकी सी मुस्कराहट के साथ, "अरे बेटे, अब तो बूढ़ा हूं कमजोरी के कारण बात बात पर बीमारी तो आ ही दबोचती है।"

जयदेव के दिल में संदेह हो रहा था कि यह तो केवल एक तसल्ली है, वास्तविकता कोई और ही चीज है। उसका दिल इस तसल्ली भरी बात पर विश्वास नहीं कर रहा था। पर फिर भी पिता होने के नाते चुप रहना ही नेक समझा।

पूर्व दिशा की ओर आसमान पर बादलों का एक ऐसा व्यूह रच गया था। जिससे उष्मा की लालिमा का कोई नाम निशान न था। यह भी मालूम न हो रहा था कि भास्कर देव उष्मा के स्वागत सत्कार को भी शायद भूल गये हो पर इतना ही कहना अच्छा लगेगा कि वे गगन से इस प्रकार गायब थे जैसे गधे के सिर से सिंग।

दोनों के मध्य में जो शान्ति छा गयी थी उसको तोड़ता राजाराम बोला, "तुम तो ठीक हो बेटे ?"

हां, "आपके आशीर्वाद से मैं तो सकुशल हूं पर.......... ।"

इसी के मध्य में दूर भाषी यन्त्र चीख उठा।
जयदेव चोगा उठाता हुआ बोला, हलो !
"आप सेठ राजाराम बोल रहे है क्या ?"
"नही, मे उनका वेटा जयदेव वोल रहा हू"
"तो सेठ साहव है क्या ?"
"जी, हैं।"
इसी के साथ चोगा राजाराम की ओर बढा दिया
"हां साहव फर्माइये ।"
"वड़े खेद के माथ कहना पड़ रहा है। आपकी दूसरी गाडी
बहुत कुछ माल नासल लाईट ने गायव कर दिया है। यह सब रेलवे सरक
लिखित मे देती मैंने आपको घर के नाते सूचना दे दी है।"
राजाराम मूर्ति वद्ध सन्नसा जगह की जगह वैठा एक टक देख
था। कुछ समय आँखें मूंद कर ही रह गया। कापती सी आवाज मे, "बे
यह कम्बल मेरे ऊपर डाल जाओ और फिर तुम जाओ।"
शायद यह सोच कर की मेरा पिता को अधिक चिन्ता क्यो ?
लिए अधिक सोचने का मौका ही नही दिया जावे। क्योंकि यह इसके खे
के दिन है।
जयदेव कम्वल उठाता सोच रहा था, हो सकता है, इनको फोन
कोई धमकी दे रहा हो या किसी प्रकार का कोई राज तो नही हैं हो न
किसी प्रकार की कोई वात जरूर है। वह वहां से सीधा माआ के सा
जाकर वैठा, "क्या वात है दादा साहव इतने उदास क्यो है ?"
माया खिन्न भाव-से, "उनकी एक अनाज की रेलगाड़ी वह
और शायद कुछ रुपये भी गुण्डे लूट लिये।"
"पहले तो वो खुश थे परन्तु अभी फौन आया तो फिर उदास
गये। वहुत समय तक वे मां-वेटा अपने-अपने विचार पेश करते रहे।
अचानक दोनों मुस्करा उठे जैसे दोनों के एक ही विचार हो।
राजाराम के झुरियां भरे चहरे पर एक खुशी की लहर वह
गम के विचारो की तह दूर भाग गयी थी जैसे सूर्य के निकलने से कोह
इसी के साथ विचारो की झडियां लग गयी। ऐसा कोई पेड नही है जि

किसी की हवा न लगी हो। कोई भी व्यक्ति ऐसा नही है जिसने दुनियां में दुःख न देखाहो फिर मैंने सारी जिन्दगी सुख देखे है जरा सा दुःख आ गया तो क्या हो गया ? लोगो को तो समय पर रोटी भी नही मिलती है, अभी तक मेरे पास तो सुख और चैन की दाल रोटी तो है। इसके साथ ही उसने सारे गमके विचार छोड दिये।

शाम होने होते राजाराम कुछ भी परेशान नजर नहीं आ रहा था वह हमेशा की भाति खुश नजर आ रहा था।

तीनो जब बैठे थे, तब राजाराम मुस्कराता बोला, "जब भाग्य खराब आता है तो नुकसान पर नुकसान लगता है।"

"कैसे ?" तुरन्त ही जयदेव प्रश्न पूछ बैठा

"मैंने मेरी जिन्दगी मे कभी व्यापार मे नुकसान नही खाया पर जब विधाता का विधान ही पल्टा खाता है। तो होनी को कौन टाल सकता है।

इसीलिए तो पुलटुटी, माललूटा और दुकान से रुपयो का थैला भी गायब हो गया।

पहले तो मुझे बडी चिन्ता हुयी। फिर विचार आया सुख और दुःख तो एक ही पेड के फल और फूल हैं। इसलिए अब मैं बहुत खुश हूं जो करता है भगवान अच्छा ही करता है : "इतने बोलने के उपरान्त भी राजाराम हलका हलका मुस्करा रहा था।

माया मुस्कराती, बोली चाय ठण्डी हो गयी।"

राजाराम चाय पीता जयदेव को समझाता हुआ बोला "मुझे तो अब इन बातों का ज्ञान करके लेना भी क्या है। मैं तुम्हारे लिए चाहता हू कि इस युग मे भटक न जाओ। भटकने से पहले मैं चाहता हू कि सब रास्ते साफ हो जावें।"

जयदेव हां मे हां भरता जा रहा था राजाराम समझाता जा रहा था।

कुछ समय बाद बोला "अब मैं व्यापार छोड रहा हूं तुम्हारी खुशी और चैन से रहने के लिए मेरे पास बहुत कुछ है।" तीनो मुस्कराके सहमत हो गये इसलिए की बुढापा है।

कार छोड दोनो अपने अपने घुन मे खोये स्टेशन पर की सिढ़ियों पर पांव रखता हुआ राजाराम बोला, "तुम चाहो तो तुम्हारे लिए अम्बर मे नया मकान बनवादूं ।

जयदेव गम्भीरता को तोड़ता हुआ बोला "फिल हाल तो आपने व्यापार छोड दिया है ।"

राजाराम का हाथ छोटी-छोटी सफेद मूच्छो पर चला गया, और बोला यदि तू अगर सारी जिन्दगी भी बैठा बैठा खाये तो भी मेरे पास खत्म होने वाला नही हैमकान की क्या बात है ।

राजाराम ऐसे बोल रहा था, जैसे लाख दो लाख तो उसके लिए मायना ही नही रखता है ।

इतने मे इन्जन चीखता और हांफता हुआ एक ही झटके मे सारी गाडी को रेंगाने लगा ।

आज दोनो के दिलो मे इतना दुखः न था फिर भी हलका दुखः जरूर हो रहा था ।

जब राजाराम जयदेव की आंखो से ओझल हो गया तो गर्दन के एक झटका सा दिया और सीट पर जाकर बैठा तो आशा पहले से ही बैठी थी ।

जयदेव को देखते ही उसके हृदय मे प्रसन्नता की एक लहर बह गयी । जब दोनो की नजरे चार हुयी तो, आशा हलकी शर्म के साथ शर्मा गयी ।

जयदेव बगैर कुछ बोले ही अपनी छोटी पेटी खोल कर एक कागज पेन्सील निकालकर कुछ लिखने लगा तो आशा मुस्कराती, हुई बोली "ये आप के पिताजी ही थे न ।

जयदेव उसकी ओर देखा नही लिखता ही "जी ।"

"यहाँ के अच्छे आदमी नजर आते हैं ।"

"अच्छे का मतलब ?"

अब तो जयदेव कागज पेन्सिल वापस रख कर आशा की ओर देख रहा था आशा ने उसका कोई जवाब नही दिया सिर्फ मुस्कराके ही रह गया ।

जयदेव उसकी खुबसुरती को निहारता, "आप के साथ दो साथी भी थे।"

"साथी कौन ?"

"जी, आप की सहेलियो मे आपका मतलब है।

आशा झेंपती गर्दन निचे कर ली शायद उसने अपनी ना समझी पर हलका सा सोचा हो।

कुछ समय तक दोनो शान्त रहे। कानो मे सिर्फ खट खट की आवाज ही गूंज रही थी।

क्या आप मुझे आपकी पत्रिका दे सकती हैं।

"क्यो नही ?"; बिजली की भांति उठाकर आशा ने पत्रिका जयदेव की ओर बढा दी। जयदेव को पत्रिका पढते समय आशा ने ऐसा महसूस किया, जैसे उसकी नजर तीर की भांति उसके हृदय को छिदती हुई चली जा-रही हो और उसके दिल मे उस दर्द के कारण शोर उठ रहा हो। वह उसका हर बार दमन करने की कोशिश कर रही थी और उसको उसी वक्त कुचलने का भी पूर्ण प्रयत्न कर रही थी पर वह सफलता के साथ आगे बढ रहा था।

शोर गुल कम होता जा रहा था। दोनो ही स्टाल पर खडे दही की लस्सी का गिलास खाली कर के बाहर आते ही एक टैक्सी को पास आने का इशारा कर दिया आशा की ओर देखता हुआ बोला, "अगर आप मुनासिब समझें तो कुछ समय के लिए और साथ दे सकती हैं।"

आशा सकुचाती सी, "आप किधर जायेंगे ?"

आशा होंटो ही होंटो के मध्य मुस्कराती "हमारा मकान भी तो मैडिकल होस्टल के बिल्कुल पीछे है।"

जयदेव ही ही करता, "जब तो मैं किस्मत वाला हूं, पिंक रंग की बडी हवेली आप ही की हैं क्या ?

"नही उसके बराबर मे गुलाबी रंग की उससे भी बडी।"

आशा इधर उधर देखने लगी, जयदेव उसकी घूमती हुयी दृष्टि को देख कर बोला, "शायद आपके लिए गाडी आवेगी।"

जी, आनी तो चाहिये, घडी पर नजर पडी तो कहा शायद मैं समय से पूर्व आ गयी हूं।

"गुड़ गुड ।"

इसी के साथ ही आशा जयदेव के पीछे चुम्बक की भाँति बराबर मे बैठ गयी।

"क्या आप किरायेदार रखती हो ?"

"लेकिन, आप तो होस्टल मे रहते हो ने ?"

जयदेव सतर्कता के साथ उत्तर दिया, "फिलहाल तो होस्टल मे ही हूं, मेरे भाई होस्टल मे हिटर विटर जलाकर फ्यूज उड़ा देते हैं। कभी कभी ड्रिंक भी कर आते हैं मुझे गंदा वातावरण पसंद नही है।

कुछ देर चुप रहकर बोला, सोचता हूं जयदेव बोला, "अच्छा सा कमरा मिल जावे तो बेहतर होगा।

आशा निराश के शब्दो के, साथ, "हम तो किरायेदार नही रखते हैं।"

इतने मे टैक्सी रुक गयी जयदेव धन्यवाद और हाथ हिलाकर पाँव बढ़ाया ही अचानक स्मरण हो आया ओहो।

अरे भाई रूक रूक...................... ...."

और जेब से नोट निकाल कर टैक्सी की ओर बढ़ता हुआ, 'ये तो ले जा यार।"

आशा मुस्कराती, "इसकी क्या जरूरत थी ?

हम इतने तुच्छ थोडी ही है। पर..................."

जयदेव मुस्कराता, "आप गलत ना समझें आप तो मेरा साथ देने के लिए बैठी हैं इसका यह मतलब नही......................."

आशा मुस्कराके, "गलत ही काम है।"

जयदेव उसको रूपये देकर मुस्कराता धन्यवाद; कभी समय आयेगा तो फिर कभी मिलेंगे।"

आशा के दिमाग मे वे शब्द गूंज रहे थे धन्यवाद, समय मिलेगा.........

कितना सुहावना सफर था जो चन्द ही मिनटों मे खत्म हो गया। कैसा युवक है हर वक्त मुस्कराहट के फूल बरसाता है।

आशा को रह रह कर उसकी बातें यादगार के रूप मे सता रही थी।

आठ

• • •

जयदेव और उसका दोस्त दोनों लक्ष्मी के सामने ।
लक्ष्मी उसके दोस्त को सम्बोधित करती, 'आओ बेटे कमल, आज कैसे इधर आ निकले ।'

कमल मुस्कराता, 'सोचा फूफी से ही मिलता चलूं अब्बा भी उनके पास भी आने लग गया ।'

'आजाया करो हम तो तुम्हें ही देख कर जी रहे हैं ।

कुछ इधर उधर की बातें करने के पश्चात् जब जयदेव का प्रश्न आया तो तुरत ही कमल पूछ बैठा हा फूंफी इनके लिए कोई कमरा तो बता ।'

'कमरा तो मेरे पास हैं पर पचास रुपयो से कोई कम न होगा ।'

लेकिन फूंफी पैसे तो तू इतने ही ले लेना ।

'पर हमको कार के लिए गैरेज भी तो चाहिये ।'

'गैरेज का तुमसे कोई किराया नही लेंगे ।'

जयदेव मुस्कराता, 'इसके लिए आप को धन्यवाद ।'

कुछ इधर उधर की बातें करते कमल और जयदेव कमरे को देख कर आये और लक्ष्मी को पचास रुपये दे दिये ।

अभी वे दोनों बाहर निकले ही थे कि ऊपर से फूफी का बेटा दिनेश हलके व्यंग के साथ मुस्कराता, 'नीचे वाला कमरा दे दिया ।'

'हा ।'

दिनेश विचार करता हुआ बोला, मैंने तुमसे कहा था कि यह कमरा मत देना पर अब तुम से क्या बोलूं ? समझदारी का ही अनादर होता है ।'

लक्ष्मी उसके बड़े बोलों पर एकदम क्रोधित हो उठी, 'अगर तुझे यहां अनादर ही महसूस होता है, तो चलाजा अपने पिता की कोठरी में ।'

दिनेश कुछ न बोला और चुपचाप वापसी आकर सोचा, 'ऐसी भी क्या मा बात जो बात नहीं म ने ? फिर मैं ही क्यो उसकी बात मानू ? बडे, वडे अपनी जगह पर है पर इस समाज मे तो वो ही चल सकता है कुछ मानें और कुछ मनायें ।' वह आइने मे खडा खडा कर्घी करने लगा। वह अपनी अवहेलना के वारे मे कोई तात्कालिक उपचार कुचलने के लिए उपचार सोच रहा था।

उसने सिग्रेट सुलगा कर धुंऐं छोडी ही और आशा ने खिडकी खोली, और वह तुरत बोला 'अरे तू कब आयी आशा ?'

'कल शाम को।' इसके साथ ही उसने गली मे कचरा डाल कर, खिडकी बन्द कर दी जब आशा ने दिनेश से कोई व.तचीत नही की बल्कि खिडकी और बन्द करदी तब वह मा की बात को तो भूल गया था। और आशा पर खिजता सा बुद बुदाया, 'यह लोंडिया है या आफत।'

मैं इसके जितने करीब जाता हूँ वह उतनी हो दूर भागती जाती है, पर मैं देखता हूँ मिया जी की दौड कहा तक है ?

इसके साथ ही जलती सिग्रेट अंगुलियो से जा मिली और हाथ से छूट कर फर्श पर जा पडी।

वह दर्द करती, अंगुली को देखने लगा कितना जला ? सिग्रेट फर्श पर पडी पडी धुऐं छोड रही थी।

जब उसका ध्यान अंगुली जलाने वाली सिग्रेट पर गया तो एक टाग लम्बी करके बुझाने का प्रयत्न करने लगा तो वह फर्श पर फिसल गया और सीधा फर्श पर गिरा। वह तुरत टाग से सिग्रेट को दूर कर दिया फिर हलकी कराहट के साथ उठ कर प्रेम पूर्वक सिग्रेट को गंदी नली मे फेंक दिया। फिर हलकी सी जवक आये हुए भाग को सहलाने लगा।

+ + + +

जयदेव अपना सामान जमा रहा था। लक्ष्मी कुछ देर तक तो खडी खडी मुस्कराती उसे देखती रही फिर वोली, 'अरे, बेटा तुझे तो सामान जमाना भी नही आता है।'

जयदेव मुस्कराता 'फुपी, यहा कौनसा घर संभालना है।'

लक्ष्मी उसी प्रकार मुस्कराती 'तो ले मैं जमाऊं, तू तो मैं बताऊं जैसे जैसे कर।'

वह उसकी पेटी उठाकर आलमारी मे जमाने लगी और जयदेव अपनी पुस्तके जमाने लगा लक्ष्मी के हाथ तेजी से सामान जमाने मे लग थे।

वह मुस्कराती जा रही थी उसका चिड़चिड़ा पन खत्म सा हो गया था उसके हृदय मे जयदेव के प्रति ममता की धारा निकल रही थी, शायद ही उसने अपनी जिन्दगी मे किसी नये किरायेदार को इतना सहारा दिया हो जितना कि जयदेव को, पर उसका मन भी जाने उसको देख कर क्यो उल्लास से भर गया था ?

जयदेव के हृदय मे किसी प्रकार की हलचल न थी। वह तो ऐसे कामो मे मा को ही याद किया करता था। घर का सामान जमाने मे तो वह महिलाओ को ही अधिक प्रवीण समझता था यह उसकी मान्यता था।

हो भी क्यो ! नही जब सारा घर का प्रबन्ध ही महिलाओ के हाथो से होता है।

कुछ ही समय मे लक्ष्मी ने सारा सामान, जो इधर उधर बिखरा अव्यवस्थित पड़ा था वह दिवारो मे समा गया था बाहर वालो को दिखाई न दें, उसके लिये उन पर परदा डाल दिया गया था।

जब सारा सामान लक्ष्मी सुनिश्चित और व्यवस्थित ढंग से जमा दिया, तब जयदेव मुस्कराता बोला 'फुफी कमाल कर दिया, जिस कार्य के लिए मुझे दो घन्टे चाहिये थे उसको तो आपने पलक झपते ही पूर्ण कर दिया।'

वह खड़ी होती हुई बोली 'सामान तो जगह पर जम गया न ?'

'बिल्कुल, सही मुझे अब सोचने विचारने की कोई जरूरत नही है इतना कष्ट के लिये धन्यवाद।'

लक्ष्मी जांचती निगाह से इधर उधर देखती जयदेव की ओर मुस्करा के बोली 'तो मैं चाय बनाती हूँ ऊपर चल, जयदेव मुस्कराता 'वाह, फुफी चाय तो मुझे पिलानी थी न्योता तुम दे रही हो यह तो बड़ी विचित्र बात है काम मेरा बना और मिठाई तुम खिला रही हो।'

लक्ष्मी कृतिम लताड़ झाड़ती 'बेटा बेटी का कार्य पूरा होता है तो उसके मा बाप को भी खुशी होती है। इसमे तेरा मेरा क्या ? यह तो

चाय की बात है और इस जमाने मे गर्म पानी के सिवा हमारे पास है ही क्या ? तो………।'

जयदेव उसको नाराज होनी देखकर मुस्कराता 'अरे । वाह । फुपी इती छोटी बात पर नाराज और फिर हम तो मस्त आदमी है जिधर न्योता दे उधर ही चलने के लिए तैयार रहते हैं ।'

लक्ष्मी उसकी यह बात सुनकर मुस्करायी और सोची 'इतना बडा हो गया । खैर, बच्चे ही तो है जभी तो ऐसी बातें करते है अगर समझदार होते तो आदमी बातें करते है ।'

लक्ष्मी मुस्कराके, "फिर भी छोटी सी चीज के लिए मना थोड़ा ही करते हैं ।"

जयदेव विवश सा होता गर्दन के एक झटका दिया । उसने बोलने मे तो बोल दिया था कि जिधर न्योतो दें उधर ही तैयार, पर उसका मन नही मान रहा था, जब लक्ष्मी उसका मुंह ताके खडी ही रही तो वह दरवाजा बन्द कर दिया ।

धूप और छाया का बडा विचित्र संगम था । एक ओर से ठण्डी बहार के झोके आते दूसरी ओर तेज कटार की भाँति धूप उसको काट देती और प्रवाह विहिन कर देती । न धूप ठण्ड को बढने दे रही थी न ठण्ड धूप को ।

लक्ष्मी दो कप और एक मिठाई की प्लेट भरकर जयदेव के सम्मुख रख मुस्कराती बोली चाय पी यह एक विचित्र लडका है । बोलने चालने मे अपना एक अलग ही व्यक्तित्व खडा करता जा रहा हैं । सयम, धर्य और प्रेम का तो एक सागर है जिसमे कभी कम न होने वाला है । हर समय, एक अलग निखर, अलग ढंग और मधुर वाणी से रस बहता ही रहता है ।

जयदेव मुस्कराता, "क्या सोचने लग गयी फुपी हमे तो सब साफ कर दिया और आपने चाय भी ………" इसी के मध्य मे लक्ष्मी चाय की चुस्की लेती, "न जाने विचार कहाँ चले गये थे ।

"क्यो मिठाई अच्छी बनी या नही ?"

मुझे आनन्द उसी मे आता है, जो प्रेम से कडवा टुकडा ही खिला दें;

फिर आपने तो जाने कितने मेहनत और प्रेम के साथ बनाया होगा। यो ही अच्छी नही तो फिर क्या…… … · ……?

जैसे जैसे लक्ष्मी जयदेव के चहरे को देखती थी साथ ही अतिथि की याद मे खो जाती थी। और फिर आखे मूंद कर विचार करती और फिर देखती जरा करीब मे होकर जब एक आध बार इस प्रकार देखा, तो जयदेव मनकी शंका समाधान करता "फूंफी तुम इतनी गम्भीर क्यो हो गयी।"

"नही तो।"

"कुछ बात जरूर है, बोल दो हृदय का गुबार निकल जायेगा।"

"ऐसी कोई बात नही, जो मैं तुमसे छिपाऊं जब कभी गुजरे समय की भी याद आती है इसके साथ ही दोनो चुप हो गये।

'लक्ष्मी के मुखर आकृतिया कभी मद कभी सामान्य। इन से मालूम पड रहा था। कि उसके हृदय मे एक प्रकार का ज्वर उत्पन्न हो रहा हो जो शान्त रहने का नाम नही ले रहा था।

जयदेव लक्ष्मी पर विचार करता, क्या सब ही मकान मालिक इतने प्यार से रखते है? हो सकता है, झगडा करते हो? नये आदमी है, आदमी से प्रेम करना बहुत जरूरी है। पर किरायेदार क्यों झगडेगा? वह तो कुछ समय के लिए आता है फिर चला जाता। नही…………नही झगडा करना भी तो मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है अन्यथा इसको जानवर ही क्यो गिने?

आखिरकार उसका हृदय बोला, फुंफी अपने लिए तोलाल दर्जी अच्छी है।

सूर्य को बादलो ने आ दबोचा तीव्र और ठण्डी हवा अटखेलियाँ खेलती ठण्डी तीक्ष्ण धार से शरीर मे चुभती सी चली जा रही थी। इसनी समीर ने दोनो की विचार अवस्था को भग कर दिया जयदेव उठा, "फुंफी कमरे मे जाओ, देखो मेरे ही रोम-रोम खडे हो रहे है सर्दी पडने लगी है। लक्ष्मी मुस्कराती, "मेरी तो कोई बात नही है पर वास्तव मे आज सर्दी अधिक है तू अपना जरूर खयाल करना।"

जयदेव ठण्ड से सिकुडता खिडकी वन्द करने लगा तो देखकर एक क्षण के लिए स्तव्घ सा खडा रह गया जो ठण्ड का खयाल था वह भूल गया सोचने समझने की शक्ति गायव सी हो गयी। पर दूसरे ही क्षण आशा ने हल्की मुस्कराहट के साथ मुंह मोड लिया।

जयदेव विगर हिले डूले एक ही नजर से उसको देख रहा था।

आशा की भी इतनी हिम्मत न थी कि वह वहा से दूर चली जावें। दोनो के मध्य एक शक्तिशाली चुम्वक अपना प्रभाव जमाये हुये है। जिसकी आकर्षण शक्ति के कारण दोनो हिल डुल नही रहे थे।

अजीव स्थिति थी दोनो होटो ही होटो के मध्य मुस्करा रहे थे। लभ चिपकी गयी थी। ठण्डी हवा के झोके के कारण आशा की गोद का वच्चा रो पडा और आशा ठिठकते कदमो के साथ वढने लगी जयदेव ठिठरते के साथ खिडकी को वन्द कर दिया।

× × ×

दरवाजे पर लगातार दस्ति पड रही थी। जयदेव चारपाई से उठकर दरवाजा खोलते ही अरे..........वलवीर............इस वक्त !

"रात थोडी ही हैं सवेरे के सात वज रहे है ?" उसकी बात सुनकर जयदेव मुस्कराया, "पर मेरे समझ मे नही आता, इस सर्दी मे इतनी जल्दी आने की क्या जरूरत थी ?"

जयदेव उसको इतने जल्दी और सर्दी मे आने पर परेशान सा हो गया। वलवीर उसकी स्थिति को समझता, "मैं इस वात के लिए सूचित करने आया हूं। साहव ने शहर नगर छोड़ दिया है और विक्रमपुरी चले गये हैं।"

विक्रमपुरी..................!

कुछ समय रुककर, "वो गाव क्यो चले गये।"

वलवीर फीका सा मुस्कराता, "इतना तो मालूम नही, पर उन्होने एक वार जरूर वोला था। मेरे मन यहाँ से जाने क्यो उव गया है और अव मैं मेरी जन्म भूमि पर रहना चाहता हूं।"

जयदेव सोचता विचारता, "मालूम नही दादा साहव को क्या हो गया है, खैर उनकी इच्छा, वो जो काम करते है ठीक ही करते है। और कुछ तो नही वोले ?"

"उन्होने मेरे साथ तुम्हारी गाटी भेज दी है और आते समय बोले है, उससे बोल देना किसी प्रकार की चिन्ता न करें।"

"हा उनकी तबियत तो ठीक है ?"

"हाँ ठीक है।" इसके साथ ही बलबीर रुपयो का लिफाफा जयदेव की ओर बढा दिया।

बलबीर गाव के समाचार सुनाता जा रहा था वह हा हूँ करता जा रहा था उसको एक चिन्ता भी हो गयी थी 'शहर क्यो छोडा ?' क्या बुराई थी ? बहुत कुछ सोचने विचारने के पश्चात् बोला, 'बुढापा एक ऐसी उम्र होती है जिसमे अधिकतर अपने जन्मभूमी की याद सताने लग ही जाती है। क्योकि बुढापा और बचपन एक ही सा जैसे कि बचपन मे मा की याद सताती है, और बुढापे मे मा तो होती नही है और जन्म भूमि वह क्या मा से कम होती है ?

'ठीक ही है उनकी जन्म भी............ " हा, जननी और जन्मभूमि एक ही है।

जैसे ही विचारो की लडिया टूटी और उसको ध्यान आया, 'अरे। सर्दी मे क्यो ठिठुर रहा है, यह कम्बल ले ले या मैं दूं।'

'नही नही मैं ही ले लेता हू।'

बलबीर की आखो मे एक चमक थी। गर्दन गर्व मे ऊंची थी। सच्चाई और इमानदारी की एक तीव्र ज्योति निकल रही थी। बुढापा और गरीबी के चिन्ह उसके शरीर से झाक रहे थे। राजपूत होने के नाते वह गरीबी का संतोष और वीरता से मुकाबला कर रहा था। वह कम्बल को शरीर से लिपेटता 'कितने का है बाबू यह ?'

जयदेव उसकी परखी निगाहो को देखता 'क्या करना है ?'

'वैसे ही............।'

'लेना चाहता है तो ले जा मैं और खरीद लूंगा विचार करके ही क्यो रह गया ?

'..ही नही' झिझक के साथ बोला।

जयदेव दृढ शब्दो मे बोला "नही क्या बलबीर मैं जानता हू.....।"

बलबीर ने गरीबी के नाते अपना सिर नीचा कर लिया क्योकि

जयदेव की बात वास्तव मे सत्य थी । वह भी ऐसा ही कम्बल चाहता था पर किसी का नही अपना जिस पर स्वय का अधिकार हो पर वह दान नही चाहता था कि कोई मेरी गरीबी पर तरस खा कर मुझे कुछ दें ।

जयदेव उसके स्वाभिमान को चांद न देकर भडावा देता बोला, 'यह हम तो को इनाम देते हैं क्योकि तुमने हमारे लिए कार लादी' इसलिए हमारी बहुत बडी इच्छा पूरी कर दी । हमारा तो शायद तुच्छ सा कम्बल है मै समझता हू""बलबीर मुस्कराता अधिक न बोलो तो अच्छा रहेगा । दोनो मुस्कराने लग गये ।

नौ

• • •

सूर्य अस्त न हुआ था । फूलों और कलियों पर ठण्ड के नाते, दुपहर मे जो कलिया कुम्हला गयी थी उन पर निखार छा रहा था ।

आशा सोचती विचारती सी सडक पार कर ही रही थी कि एक बार हलके झटके और हलकी आवाज के साथ रुकी आशा डर से कापती, फिर आश्चर्य से मिश्रित और फिर मुस्कान के साथ, 'मेरे ऊपर ही चढाने का इरादा है क्या ?'

जयदेव खिडकी से देखता, 'मेम साहब शायद चलना भी भूल गयी हो ।'

दूसरे ही क्षण गोर से देखता चश्मे को उतार कर देखता 'ओ हो । यू.........' और फिर खोपडी खुजाता, बडे बे दर्दी हो । जो अकेले अकेले ही घूमने चली आई हो और गाडी को सडक पर खडी कर दी ।

आशा मुस्कराती जयदेव के बराबर पांवो को चढाती, 'वैसे तो कोई बात न थी जो आप का साथ न देती परन्तु मेरी सहेली को जल्दी थी इसलिए मे यही उतर गयी ।'

जयदेव बडी अदा के साथ छूटते फँवारे के नीचे बैठ गया सामने सड़क पर घूमने वालो की कुछ कारें खड़ी थी कुछ लड़कियां तितलियो की

भांति इधर उधर घूम रही थी जो न जाने अपने आपको क्या समझ रही थी ? सड़क के मध्य एक पर्स पड़ा था कुछ लड़कियों उसको उठाने की कोशिश की शायद चुस्त ड्रेस के नाते न उठाई हो या वह फटा होने के नाते न उठाई हो पर कुछ वजह जरूर थी जिनके कारण नितलियां नहीं उठायी।

जयदेव सारी बात को देख कर फिकासा मुस्कराया 'हम तो तुम्हारे इतने नजदीक पड़ोसी है पड़ोसी के नाते तो बोला पर आप तो एक शब्द भी नही बोल रही हो और फिर मिलने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता है। आशा झेपती मुंह से 'नाखून काटने लग गयी। फिर तिरछी नजर से देखती, 'आपको क्या मालूम मिलने वाले कैसे भी मिल लेते है ?

जयदेव आसमान की ओर देखता हुआ 'ईश्वर मदद दे, बड़ी भूल हो गयी समय भी बहुत गुजर गया मेरे पास इतना अच्छा गार्डन था मिलने की राह बताने वाला पर मैं जान न सका फिर भी आज तूने राह बता कर मिला दिया इसके लिए सहस्र धन्यवाद।'

कुछ समय तक तो आशा जयदेव के अभिनय पर आश्चर्य हुआ देखती रही जैसे ही मिलने की राहो और गार्डन का नाम आया वह समझ गयी यह व्यंग तीर है जो मेरे ही ऊपर छोड़ा जा रहा है।

वह उसकी इस छोटे से वाक्य से ही अनुमान लगा बैठी बात चीत मे बड़ा माहिर है वाक्य को घुमा फिरा कर और व्यंग से मनुष्य की औकात नही है कि इसने बहस कर सके फिर भी अभी तो बहुत देखना है इसमे क्या है और क्या कमी है हो सकता है बातें ही बनाना जानता हो ? फिर भी उसनें अच्छा यही समझा बहस का दौर खत्म हो जावे। इसलिए तिरछे और प्यारे नयनो को दबाती 'आप बड़े खराब है।'

जयदेव उसी इस अदा पर, उस पर दीवाना पन छा गया फिर उसको सयम मे रखता बोला 'खराबी........।'

यही शब्द निकले थे आसमान से वर्षा की बूंदे गिरने लगी। सड़क पर एक ही झटके मे बत्तियां जल उठी। ऊपर देखा तो बादल नहीं थे। पर फवारे की गति शायद तेज हो गयी थी क्योंकि संध्या का समय हो गया था घूमने वालो की संख्या भी अधिक ही हो गयी थी।

दूर खम्भे की वत्ति से टकरा टकरा कर जो दीवाने परवाने थे वह उससे टकरा टकरा कर तडफडा कर सडक पर तडफडा रहे थे । कुछ अपनी अन्तिम यात्रा पर पहुँच चुके थे । वत्ति से मुस्कराता प्रकाश बिखर रहा था । सब परवाने वत्ति की मुस्कराहट पर दीवाने थे ।

जयदेव उनको देखते ही मेरे वगल मे भी तो श्यमा हैं न जाने इस पर भी कितने परवाने थे वे भी इसके लिए लडेगे और खत्म हो जावेगें ।

दोनो ओस के मोती तोडते, वो परछायी पर कदम रखते और एक दूसरे के हृदय की थाह पाते गुम सुम वढ रहे थे ।

जयदेव जेव मे हाथ देता, तो "फिर अपने शहर दिखाने का कब का समय रखा आशा की ओर देखने लगा वह चादनी रात मे गुलावी ड्रेस मे वडी खूब मूरत लग रही थी । जैसे अब स्वर्ग की अप्सरा नृत्य करने के लिए उतर कर आयी हो "आप कल दस वजे चलिये ।"

जयदेव तपाक से वोलता, "एक ही दिन मे सारा शहर......... ..."

आशा ने कुछ भी नही वोला तिरछे नजर करके देखने लगी । फिर घडी पर नजर गयी "चलो, वहुत समय हो गया पापा वाठ जोत रहे होगें ।

जयदेव मुस्कराता, "वडे दिनो तक मैं भी तो वाठ जोत रहा हू अब कव तुम मुझे से मिलोगी ? और कव तक तडफडाओगी ।"

आशा ने एक झटके के साथ जयदेव के हाथ से हाथ छुड़ा लिया और कृतिम क्रोध करती, "वड़े शरारती हो ।"

जयदेव मुस्कराता हलका सा हाथ दवाया अगर मै शरीफ होता तो मुझे जरूर तुम शरीफ नही वोलती और गुण्डा होता तो वदमास की उपाधी देती ।"

दोनो ने आंखो मे आंखें डाली, मुस्कराके फिर आशा ने जयदेव के

वक्षस्थल पर अपना सिर रख दिया। जयदेव उसको हल्के से बाहुपाश मे कस लिया।

आशा के कपोलो पर हल्के, मधुर और सौन्दर्यमय गुलाबी लालिमा छा गयी थी। दोनो एक ही नाव मे बैठे प्यार के समुद्र मे घूम रहे थे।

वे इतने शून्यतल मे खो गये थे कि उनको आने जाने वालो का भी खयाल नही था। आंख मूंदे एक दूसरे की धडकने सुन रहे थे उनकी भावनाये पुकार रही थी प्यार प्यार प्यार...... ....पर वे प्यार की अन्धी राह पर खडे थे। उन पर चादनी अपनी मुस्कराहट के फूल बिखेर रही थी। वे दोनो जवानी के मधुर आनद मे डूबे थे। फिसल, फिसल कर भी फिसल नही रहे थे। फिर एक झटका लगा, दोनो अलग हो गए। कार अपनी राह पर चलने लगी।

आशा जयदेव के कन्धे पर अपना सिर रख रखा था। जयदेव हैण्डल सम्भालता "तो फिर कल जरूर........ . ..।"

आशा आखें मूदें ही, "किस वक्त ?"

'वही दस बजे गार्डन मे, मैं पर यह न हो कि मेरी इन्तजार की घडिया इन्तजार मे ही कट जावें।

आशा होटो के मध्य मुस्कराती"

"नही नही..... .. .."

पतगो के ऊपर से कार चली जा रही थी। जो तडपते रहे थे वे दमतोड कर पहिये से सडक पर ही चिप गये थे। उनके हृदय मे, दयमा के लिए प्यार की धारा कम न हुयी थी। अन्तिम समय मे भी पतगो की आत्मा से आवाज आ रही थी प्यार....प्यार कार आशा की हवेली के सामने रुकी जयदेव आशा के नाक पर मारता, "तो कल दस बजे................"

"बिल्कुल," ...."

दिनेश मस्ति से अपनी छत पर घूम रहा था उसके दिल और दिमाग मे योजनाओ के जाल बिछे थे।

आसमान पर अनेक तारे थे फिर भी रात का अन्धकार दूर नही कर रहे थे पर अकेला चाद सारे अन्धकार को दूर कर देता है। वैसे ही दिनेश

योजनाये होने के नाते अभन करने के लिए कोई नही थी। सिर्फ वि॰
प्रेम की भाति छुप कर चले जा रहे थे।

अचानक चन्द्रमा वादलो की ओट मे हो गया दूधीया चादर सि
कर काले रंग मे रंग गयी। घूमती सी नजर सडक पर गयी तो ठिठक
दिनेशखडा हो गया और आँख फाड कर आशा को देखने लगा। दस वजे
आशा जब जाती हुयी आशा पर नजर पडी तो उसको पूर्ण विश्वास
गया आशा ही है।

दिनेश यह सब देख कर अवाकसा खडा रह गया; सास फूलने ल
और दम घुटने लगा, पर दूसरे ही क्षण दिनेश क्रोध मे दात चबाता 'आश
मेरी कोई नही ले जा सकता है ले जाने वाली का दिल गज भर का हो
चाहिए। जाने कितने परवाने आते हैं और खत्म हो जाते है वैसे
यह भी कोई दिवाना है जो अपनी एक लतेड मे खत्म हो जावेगा। फिर क
उसकी हिम्मत न होगी की दिनेश की राहो मे पत्थर फेंके।

इस प्रकार अनेक उत्साह के साथ उसके हृदय मे उथल पुथल म
थी पर उसे क्या मालूम ? उसी के घर मे ही तक्षक नाग है जो उसे ही का
खायेगा। और उसमे हिलने डुलने की भी हिम्मत न होगी।

थर थराते होटो पर सिग्रेट रखी जलाते ही लम्बी सास खिची जै
एक ही सास मे सारी सिग्रेट को गुल कर के रख देगा।

लम्बे लम्बे तीन कस खिच कर खुले वातावरण मे छोडा। उसक
सिर भन्नासा गया। सिग्रेट को फर्श पर पटक कर जोर से जूते मसल दिया
कागज फर्श पर ही चिपक गया जर्दा इधर उधर विखर गया।

× × × ×

हार्न की आवाज सुनकर आशा पितल की वाल्टी लेकर चली आयं
और दूध वाले जैसे ही जाने लगी दिनेश कार रोकता, "आशा……"

आशा ने घूमते ही, "क्या कार्य है ?"

दिनेश की आखो मे क्रोध की किरणे फूट रही थी पर सब सीमा
होने के नाते गम्भीरता से वोला, "एक मिनट यहां आओ, तुम से जरु
कार्य है।"

आशा दूध की बाल्टी नौकर को देती बोली, "अम्मा को दे देना ।

गर्दन के एक झटका देकर बालों को गर्दन के पीछे फेंकती, बोली "फरमायें" जैसे ही आशा नजदीक गयी, दिनेश गम्भीर शब्दों में बोला,

"तुम को मालूम होना चाहिये मैं तुमसे कितना प्यार करता हूं ? और तुम·········।"

आशा फिकी सी मुस्कराके मध्य में ही बोली 'दिल साफ होना चाहिये प्यार तो किसी से भी करें।'

दिनेश 'मतलब ?'

आशा उसी अदा से, "मतलब तुम बाद में समझ जाओगे। अभी तो मैं चलती हूँ। हाथ मिलाती, फिर मिलेंगे।"

दिनेश दांत पिसता क्रोध में इस प्रकार देख रहा था जैसे उसको एक ही निगाहों में देख कर, भस्म कर देगा। बीते दिनों का उसका स्मरण हो आया। आशा जरा चरखी पकड़ना जल्दी जल्दी'' ·····ओहो ! वह निली वाला अभी पतंग काट जाता है·······। "आशा मुस्कराके", मुझे उड़ाना तो आता ही नहीं मुझे दे मैं ·······।

जबरन से डोर छीन लेती है।

"एरे ! दिनेश सारे दिन ही क्या पढ़ता है ? कुछ·········।"

दिनेश झुंझलाट के साथ बेवकूफ ही तो है। 'न खुद पढ़ती है न मुझे पढ़ने देती है।'

'अरे ! परिक्षा के तो बहुत दिन है पढ़ लेना और हम··········'

और पुस्तक छीन कर मेज पर कर देती है।

रात का अंधेरा था·······दिनेश की बाहों में आशा तड़पती मुझे छोड़ दे दिनेश, यह बततमीजी··· ····।

आखिर छीना झपटी में, जोरा जोरी में आशा की कमीज फट गयी इसके साथ ही आशा के हाथ का चांटा दिनेश के गाल पर पड़ा और घृणा से देखती, मूर्ख·······।'

इतने में ऊपर से किसी की सिढ़िया उतरने की आहट हुई, आशा तेजी

से नीचे उतर गयी। दिनेश गर्मी मे हांफते हुये कुत्ते को भांति हांफता ऊपर बढ़ गया।

दिनेश की आखो मे पानी भर आया था। गाडी को सम्भालता आंसूओ को दस्ति से पु छ कर गाडी को अपनी राह पर छोड दी।

दिनेश आशा की आश लगाये बैठा था जैसे वसन्त के चले जाने के बाद भी भवरा फूलो के खिलने की आशा मे घूमता फिरता है। यही हाल दिनेश का था जो आशा को शाम, दाम, दण्ड और भेद किसी भी निती से अपने जीवन मे लाने के लिए उतारू था, पर उन दोनो के दिलो मे दरार पड़ गयी थी जो क्षण प्रतिक्षण बढती जा रही थी। लाख कोशिश करने के बावजूद भी मिलने के कोई आसार नजर नही आ रहे थे। अब तो एक ही बात रह गयीथी कि विधाता के विधान के विषय मे ही कोई उलटीबात लिखी हो या ऐसी घटना घट जाये जिससे टूटे धागे मे गाट लग जाये ऐसा शायद कम ही होता है, तर्कस से निकला तीर छूटने के बाद वापस आ जावें।

आशा की हर नजर, हर मिनट बाद कलाई पर बधी घडी पर पड़ती थी और व्यग्रता और बेचेनी भी बढ़ती जा रही थी बाग मे इतने सुहावने दृश्ये होते हुये भी उसपर प्रकृति का कोई प्रभाव न था। नजरें चील की भाति सड़क पर आने जाने वालो पर मडरा रही थी। हर मिनट उसके लिये एक वर्ष से भी अधिक नजर आरहा था। इतने मे उसकी आखो को किसी ने अपने हाथो से ढक लिया।

आशा हलकी मुस्कराहट के साथ अपनी आखो से उसके हाथो को हटा कर देखा तो उसके शरीर मे क्रोध की आग फूट पड़ी नथुंन फुलाती बोली 'तुम········।'—

दिनेश मुस्कराहट के साथ साथ आशा की झलाहट को बढ़ाता, सिग्रेट का एक कस खीचकर आशा के मुंह पर छोड़ता बोला "क्यो, इतनी सी बात पर बुरा मान गयी ?" एक लम्बी सी सास खीच कर बोला तुम भी तो शायद किसी की इन्तजार मे बैठी हो ?"

'तुम्हारे इन्तजार मे नही।', यह वाक्य व्यंग और क्रोध के आवेश मे बोली।

दिनेश उसी प्रकार मुस्कराता 'मै आ गया तो कौन सा बुरा हो गया ?'

आशा ने इसका कोई जवाब नही दिया और उठ कर चलने लग गई। उसके पीछे पीछे दिनेश भी।

आशा भिन भिनाती तेज चलने के कारण हवा मे उड कर उसकी चुन्नी लान के काटो मे उलझ गयी। दिनेश चुन्नी को सुलझाने लगता इससे पहले आशा ने एक झटका दिया और चुन्नी को सुलझा लिया।

दिनेश परेशान सा होता बोला, 'अब बताओ, तुम्हारी चुन्नी इसने पकड लिया तुमने कुछ भी नही कहा.........और हम ... ...।'

आशा दात पिसती बोली "दिनेश, तुम भेडीया से कम नही हो। पर याद रखो तुम जानवरो की वसन्त को ही अपनी झोली मे डाल सकते हो मेरी वसन्त को नही।'

दिनेश आशा का यह वाक्य सुनते ही आग बबूल हो गया और उसको मारने के लिए हाथ उठाया, उपर की उपर ही रह गया। जैसे ही दिनेश का हाथ छूटा जयदेव मुस्कराता 'लडकियो पर हाथ नही उठाया करते है। प्रत्येक आदमी का दिल जीतने के लिए प्रेम सबसे बडा अमोघ अस्त्र है। फिर तुम जानते हुये भी गलती कर रहे हो। तुम यह भी जानते हो, औरत प्यार देने लगे तो सागर भी थोडा पड जाता हैं और नफरत करने लगे तो जान भी ले लेती है।'

इस बात से दिनेश का सारा क्रोध क्षण भंगुर हो गया। शर्म से नीची गर्दन करली जैसे सैकडो घडे पानी मे उडेल दिये गये हो। पर कुछ ही सैकिण्डो में उसके दिल के आवाज उठी 'तुम जानते हो मैं तो पहले से ही प्यार करता हूं।'

"मुझे मालूम हैं, पर अभी तुमने क्या देखा ?"

जो शब्द जयदेव बोल रहा था वह प्रमाणित सत्य था जिनके सामने हिंसा भी अहिंसा मे बदल जाती है सत्य मे प्रबल शक्ति होती हैं जिसके सामने झूठ–मूठ, पाखण्ड सब एक कोने मे खडे हो जाते है। वास्तव मे देखा जावे तो सत्य का ही राज्य है।

जयदेव के कटु शब्दो के सामने दिनेश जमीन मे नजरें झुकायें खड़ा

हो गया। जयदेव दिनेश का कन्धा ठोकता, 'यह उम्र ही फिसलने की है जिसमे आदमी गलतिया करता है।'

दिनेश उसके मीठे लब्जो के सामने झुक गया था वह सोचता बुरा चाहता था पर अच्छाई उभर कर सामने प्रकट हो जाती थी। उसने दिमाग पर वहुत जोर दिया पर जयदेव मे अच्छाई ही उसको प्रतीत होती नजर आई।

आशा और जयदेव दोनो ही अपने विचारो मे खोये पत्थरो से वचते हुये दूर साफ सुथरी लान मे चले जा रहे थे।

दस

• • •

"चलो, आओ, कूदो ?"

"नही, मुझे तैरना नही आता।"

"मैं किस लिए हूँ।"

हूं ! हूं ··· ·······। मैं नही·············।

इसी के साथ आशा झील मे जा गिरी और डुबकियाँ लेती पानी में कभी उपर और कभी नीचे आने लगी।

चारो ओर से झील पहाडियो से घीरी थी वादल पहाडो पर ऐसे लग रहे थे जैसे चोरी छुपे उनकी आंख मिचौनी देख रहे हो।

जयदेव हाथ का सहारा देता उसको तैराने लगा। कभी कभी आशा के शरीर से मछली छू जाती, तो सिहरन सी दौड जाती और कभी जब जयदेव का हाथ भी एक जगह से फिसल जाता तो शरीर मे गुदगुदी होने लग जाती थी।

जयदेव और आशा वृताकार तरगे वनाते आगे वढ रहे थे।

जयदेव मुस्कराये जा रहा था क्योकि आशा की दम फुली जा रही थी। आशा उल्टे सीधे हाथ पांव पानी मे चला रही थी वडा अजीव और रोचक-दृश्य उत्पन्न कर रही थी। कभी कभी तो स्वयं आशा भी अपने पर

मुस्करा देती थी। जब उसके हाथ पाव थक गये तो पानी मे तैरना कम पड़ गया। जयदेव आशा को हाथो मे उठाकर किनारे पर बिठा दिया।

आशा के कपडे गिले होने के कारण शरीर से चिप गये थे। वे अजन्ता और एलोरा की गुफा की सगमरमर की मूर्ति के समान अति सुन्दर दिखाई दे रही थी।

सास फूलने के कारण उसकी छाती ऊपर नीचे हो रही थी। जयदेव एक नजर से उसको निहार रहा था।

जयदेव और आशा की नजर एक हुई तो आशा शर्माती हुई जयदेव की ओर पीठ कर दी।

जयदेव उसके नीले ठण्डे होटो को देखकर पानी मे वापस तैरता बोला "खडी क्यो हो, सर्दी मे मरोगी क्या ?"

जयदेव झील के मध्य पानी मे मछली की भांति कभी ऊपर और कभी नीचे आता, मानो जैसे की पानी मे आख मिचौनी खेल रहा हो।

आशा ने स्टोव चला कर चाय का पानी चढ़ा दिया।

पहाडों की जडो मे पेड उस शान्त स्थान की शोभा मे ऐसे लग रहे थे जैसे भाषा मे अलकार और छन्द, और शान्ति मे महात्माओ से कम नही लग रहे थे।

शान्त झील मे वृताकार लहरे एक घाट से दूसरे घाट पर टकरा रही थी ठण्डी हवा, शान्त स्थान और सुरम्य दृश्य होने के नाते आशा का चित्त चिकोर चहक उठा।

जयदेव आशा के कपलो पर ठण्डे हाथ रखता बोला, "इधर भी तो ध्यान दो यह चाय पतिली से ही बाहर हो रही है।"

आशा हडवडा कर उस पतिली को नीचे उतार दिया।

जयदेव आशा के सामने पत्थर पर बैठ गया। आशा की गुलाबी रंग की साडी मे उसकी अनुपम शोभा निखर उठी थी। कोरे काजल के नयन वडे ही प्यारे लग रहे थे।

आशा कप मे चाय उडेल कर जयदेव की ओर बढाया वह कृतिम धुन मे खो गया। आशा कप को झुलाती हल्के दर्द के साथ बोली, "पकडोना मेरे हाथो मे दर्द होने लग गया।"

जयदेव गर्म चाय की चुस्की लेता "भारत मे गन्ना कब से कम पैदा होने लग गया ?"

"नहीं ! भारत तो लाखो टन चीनी निर्यात करता है कम होने का प्रश्न ही नही उठता है।"

"तो, फिर यह चाय फिकी क्यो ?"

इसके साथ ही आशा हल्की सी झेंपी और दो चम्मच चीनी की डाल दी।

जयदेव चम्मच से हिलाता, "लगता है मन मे ज्वार उठ रहा है ?"

आशा गुलाबी होटो से गर्म चाय की चुस्की लेती, 'और आपके....?' दोनो की नजरे चार हुयी और मुस्करा पड़े ।

झील के किनारे किनारे हाथो मे हाथ डाल कर जयदेव और आशा दूर निकल गये। एक पेड का सहारा लेकर जयदेव जगली फूलो के मध्य खडा हो गया। आशा को जाने क्या सूझा ? वह जयदेव के शरीर से सटकर खडी हो गयी। तुरन्त ही उसे महसूस होने लगा उसके शरीर से गर्म गर्म भाप निकल रही हो। और उसके शरीर मे समा रही हो। जयदेव ने आशा को एक हाथ से कस लिया। आशा ने सारा वदन जयदेव पर ही छोड़ दिया और निढाल सी जयदेव के शरीर से चिपक गई। यहा तक की कुछ क्षणो के लिए सब कुछ भूल कर एक हो गये।

दोनो हाथ हिलाते झील मे तैरती हुई मछलियो को देखते रहे थे। आशा वालो को हाथ से पीछे करती वोली, "अब आपकी परीक्षा कब होगी ?

"दो माह वाद।"

"इसका मतलव हमारी साथ ?"

"नही, तुम्हारे से वीस रोज वाद ।"

"फिर तो आप गाव चले जाओगे ?"

'विल्कुल, कुछ दिनो के लिए तो मा वाप से मिलने जाना पड़ेगा ही।'

आशा लम्वी सी सास खीचकर हा भर दी और फिर कहे हुये शब्दों पर स्वय ही विचार करने लगी।

सूर्य पहाडी की ओट मे आ गया था। ठण्डी ठण्डी और मतवाली बहार की लहरें बहे जा रही थी।

दोनो का मुस्कराता आलिंगन बद्ध का साफ प्रतिबिम्ब पानी में नजर आ रहा था।

× × ×

एक प्लेट मे मिठाई और दूसरी मे नमकीन मेज पर रख कर लक्ष्मी जाते जाते बोली, "बेटा इनको भी जरा चख कर देखना अच्छी बनी है या नही।"

जयदेव पुस्तक बन्द करता बोला फूंपी इसके लिए एक ही चक्की काफी है इतनी क्यो रख कर जा रही हो ?"

'ज्यादा थोडी ही हैं चखेगा भी।' इसी के साथ पर्दा हिलता नजर आया। लक्ष्मी की तबियत कुछ खराब थी इसीलिए उदास सी खिडकी के पास कुर्सी खिचकर बैठी ही थी कि रमेश मुस्कराता बोला, "फूपी उदास क्यो हो ?' 'ऐसे ही ....।'

'फूपी एक योजना बनाई है मैने ज्यादा रुपये खर्च नही होगे सिर्फ दस हजार रुपये खर्च होगे और कुछ ही समय बाद हजारो रुपये का फायदा होने की सम्भावना हैं।

लक्ष्मी ने जाने कुछ सोचा विचारा भी था या नही और टका सा जवाब दे दिया,' मेरे पास एक पैसा नही हैं "दिमाग खराब मत कर"

रमेश झट क्रोधित हो उठा और बोला, 'मैं हर चीज मागू और तुम कर देती हो, भैया मागते है तो झट निकाल कर दे देती हो यही तो मुझे.... ....लक्ष्मी अपने माथे पर हाथ रखती बोली, 'देखो, रमेश मैं साफ बात कहती हूँ मेरे पास कुछ नही है फालतू की जिद्द मत कर।'

पर रमेश कब मानने वाला था वह तो हलाहल विष उगले जा रहा था। लक्ष्मी कब चुप रहने वाली थी ? उसने मे भी तिखा विष उगलने मे कमी न रखी दोनो क्रोधित होने के नाते पूर्णत: झगड़ा उठ खडा हुआ।

रमेश जोर जोर से बोलता जारहा था और लक्ष्मी को पक्षपात का उल्लाहना देता जा रहा थी। बीच-बीच मे उसके मुंह से अश्लील गालिया भी निकल रही थी।

जब बहुत समय तक मा बेटे मे झगडा होता रहा। तो लक्ष्मी अपने क्रोध पर काबू नही पा सकी और कॉपने लगी अन्त मे वह कॉपते हाथो से एक डण्डा उठा कर रमेश के मारती बोली, "ले, तुझे मैं बताऊं, मेरे ही दोषो को बताता हैं, मेरी इच्छा आयेगे उसको दू गी तेरे बाप का मकान नही हैं।' पर दूसरे ही क्षण लक्ष्मी की नजर रमेश पर पडी, उसकी आखे क्रोध मे चमक रही थी मु ह तमतमा कर लाल हो गया था। लक्ष्मी उसकी यह हालत देखकर सहम गयी। अगर अधिक मारती तो हो सकता है वह भी वापस मार देता क्योकि रमेश भूल चुका है यह सामने उसी की मा हैं। उसके चेहरे पर डरावने और विकृत भाव देख कर डर गयी हाथ की लकडी छूट कर वही गिर गयी और सिर थाम कर कुर्सी पर बैठ गयी। आखें से आसूओ की धारा बहाने लगी।

क्रोध छन–छन कर आँखो से बाहर आने लगा। भूली विसरी पीछे की बातें उभर कर सामने आने लगी,। देखो, रमेश लक्ष्मी बडा होनहार बनेगा पर..................ससार मे मेरा नाम रोशन करेगा वह आसूओ कडे साडी के पल्लू से साफ करने लगी देखो लक्ष्मी मैं जा रहा हूँ सारा घर तेरे हाथ मे है पर मुझे मालूम पड रहा है कि मेरे चले जाने के बाद इन पर अ कुश उठ जावेगा और गदी राहो पर फिसल जावेगा।

नजर उपर की तो रमेश चला गया था। दीवार से लगा स्विच उपर करते ही धीरे–धीरे ठण्डी हवा बहने लगी।

आँसूओ का झरना तो बन्द हो गया था, पर हृदय का झरना लगा–तार बह रहा था। 'अच्छा ही होता कि यह मर जाते। इन्ही के लिए सारी सारी रात जागी, गीला हो जाता सूखा करती। इनकी हर इच्छा पूरी करती। मेरी इच्छायें तोड कर दवा लेती। कभी पैसे महिने से पहले ही चुक जाते। तो ऐसा नही किया इनकी दवा दारू के लिए हाथ खिंच लिया हो। आज अच्छाई का ही यह प्रणाम है कि बुराई उभर कर सामने आ गयी है। हे ईश्वर देख ली मैंने अब तेरी लीला और हाथ जोड दिये पर इसी वक्त टप–टप जूतो की आवाज सुनी लक्ष्मी ने नजर उठा कर देखा तो सामने जयदेव मुस्कराता उसी की ओर आ रहा था।

वह आश्चर्य से उसकी ओर देखता ही रह गया, और मुंह निकल गया, "तुम ....क्यों ? किसने क्या बोल दिया ?"

लक्ष्मी की आखो से फिर आंसू वह कर बाहर आ गये जैसे दुखी बहन अपने भाई के सामने आसू बहा कर अपना दुखड़ा सुना रही हो।

यह एक मानव मे प्रकृति की देन है कि कोई भी दुख' उसको सता रहा हो अगर उसको कोई प्रेम से बोलकर सतावना देता हैं तो उसके सामने अपने आप ही आसूओ के रूप मे दुखः उभर फर सामने आ जाता है।

लक्ष्मी को रोती देखकर जयदेव का हृदय भी भर आया। लक्ष्मी उठ खडी हुई। जयदेव लक्ष्मी का हाथ पकड़कर बोला, 'बोलो भी तो लक्ष्मी क्या हुआ ?'

लक्ष्मी जयदेव के गले से लगकर जोर-जोर से रोने लगी आसूओ की सतत् धारा फिर निकल आयी। उसकी दुख. भरी आवाज सुनकर, गिरते आसूओ को देखकर जयदेव की आखो की पुतलियां डुब डुब आयी।

जयदेव लक्ष्मी के आंसू पूछकर प्रेम पूर्वक सतावना देकर उससे आदि से अन्त तक सारी बातें मालूम की और अन्त मे ढाढ़स बधाता तो बोला "मैं करुगा, रमेश से बात करूगा और समझाऊंगा अगर वह समझ गया तो आगे आप से कभी नही झगडेगा।'

जयदेव जेब से रुपये निकाल कर उनमे से पच्चास रुपये गिनकर लक्ष्मी की ओर बढा दिये। फिर बोला, "चिन्ता मत करो फूंपी मै उसे समझादूंगा अभी तो यह रुपये लो।'

इस वाक्य से लक्ष्मी चौंकी, मेरे भाई की आवाज कहा से आयी ? यह प्रश्न बन कर हृदय मे चुभा और जयदेव की ओर देखने लगी पर पलभर पश्चात संभलती फिकी सी मुस्कराकर किराया लेने से मनाकर दिया।

जयदेव उसको हर प्रकार से समझाया देखो मैं किराये दार हू, अगर आप इस प्रकार किराया लेने से मना कर दोगी तो आपका घर कैसे चलेगा ? और फिर हमारा क्या आज यहा कल वहा स्थर तो हूं नही जो आपके दुखः पडने मे सहायक बन सकेगे न जाने यहा से जाने के बाद कितने दिनो बाद मिलेगे कब और कहा मिलेगें ? पर............।

'लक्ष्मी का आखरी जवाब यह था 'मेरा-यहा कौन तुम ही तो मेरे हो और अपने से किराया लेने लग जाऊगी - तो ·······।'

कुछ एक सैकिण्ड रुक कर फिर बोली 'तुम जहा भी रहो मेरे रहोगे, मेरा तुम पर पूर्ण अधिकार रहेगा इसलिये मुझे पूर्ण विश्वास है, ना समझ - गलती करेगा समझदार नही और आज तो फिर मेरे ही पराये··················· ·····················।'

जयदेव सोच रहा था जिस फूंपी के लिये पैसे ही सबसे महान् थे पैसो का ही राज्य समझती थी आज पैसो के ही ठोकर-मार रही थी दो शब्द बोलने वाले और समझाने वाले बहुत इस जमाने मे मिल जाते है और फिर मे, मैने तो कुछ कहा भी नही रोते हुये के हर कोई आंसू पूछ देता है मैने तो कोई बडा काम किया भी नही जिसकी वजह से यह आभार प्रकट करके किराया छोड़ रही हो। खैर, परिवर्तन शील स सार और उसमे रहने वाले भी तो सभी परिवर्तन शील है।

जयदेव विचार करता सिडियां ऊतर रहा था रमेश गुम सुम सा खोया ऊपर चढ रहा था।

जयदेव मुस्कराते उसके कधे पर हाथ रखता बोला 'आओ यार और हाथ पकडकर उसको अपने कमरे मे ले गया कुछ देर तक तो इधर–उधर की बाते करते रहे इसके बाद गम्भिर होता बोला 'आज फूपी ने तुम्हारी शिकायत की है। हो सकता है फूपी ही गलती पर हो पर मैं इतना जरूर कहूगा माँ कैसे भी हो ममता होनी हैं फिर मेरे भाई तुम तो समझदार हो एक ममता भरे दिल को दुखाया·····················नही, उससे माफी मांगो················वह सब कुछ भूल जायगी की उसके हृदय को किसी ने टेस भी पहुचायी है।' रमेश बोला 'मेरी तो कोई गलती है नही'

जयदेव बोला 'बिल्कुल, तुम्हारी कोई गलती नही हैं पर मॉफी मांगने मे कौन से घट जाते हो ?'

जयदेव के मीठे वचनों के सामने उसका क्रोध कपूर हो गया था। उसको यह महसूस हो गया था वास्तव मे मैं गलती पर हूँ मुझे ऐसा नही करना चाहिये। मा का हृदय ममता का सागर होता है मुझे माफी माँगनी चाहिये उसके बढते हुए दुखः को कम करना चाहिये।

इसी के साथ ही सडक की वत्तिया अंधेरा दूर करती हुई दुनिया वालो को राह दिखाने लगी। जो सारे दिन गर्मी की तडफ रही थी। वह खत्म हो गयी थी। अब तो ठण्डा ठण्डा मतवाला पवन चलने लग गया था। गरीबो का पखा मीठे मीठे और हल्के हल्के झोको के साथ वह रहा था।

ग्यारा

• • •

मानव, मानव ही होता है पर यू समझिये वह भी विधाता के विधान मे एक जानवर ही है। युग इतनी तीव्र गति से बदलता जा रहा है शरीर की नग्नता दिन भर दिन उभर कर सामने आती जा रही है।

यह हर कोई जानता है चीर के नीचे क्या है और क्या नही ? इसके बावजूद भी नग्नता का प्रदर्शन करना बडी तीव्र गति से फैलता जा रहा है। फैशन एक ऐसा शब्द है जो नग्नता आंखो मे खटकनी चाहिये वह इस शब्द से दब कर रह जाती है।

खूब सूरती के पीछे लडके इस ढग से घूमते है कुत्ति के पीछे कुत्ता। जिस प्रकार कुत्ते लड झगड कर आपस मे मास नोच लेते है उसी प्रकार लडके भी मर मिटने के लिए तैयार हो जाते है।

जयदेव की कार तेज गति से चलती रुकी और वह अभी उतर कर नीचे खडा ही हुआ था कि एक ठोकर उसके पीछे से लगी और सडक पर गिरता गिरता बचा। वह सम्भल कर रोकने वालो से बोला, 'मेरे भाइयो बात क्या है ?'

इसके साथ ही जयदेव के गाल पर चांटा पडा, 'हमारे सामने बोलता है ?'

और सबने मिलकर एक वृत बना कर चारो ओर खडे हो गये।

जयदेव मुस्कराता बोला 'मेरा गुनाह भी तो बताओ या यू ही जान ल लोगे।'

सव बुरी तरह से पान चवा रहे थे कपडो पर दाग भी पडे थे। उनकी गंदे और मैले कुचले कपडो मे डरावनी आकृति वनी हुई थी। एक, एक हाथ मे सिग्रेट और दूसरे से जयदेव का कान पकडता वोला।

'अरे ! तू दिनेश की प्रेमिका को कैसे ले भागा।'

'वह अव भी अपने वाप के घर मे हैं अगर लेकर भागता तो मेरे साथ होती।'

दानवो पर मीठे वचनो का कोई प्रभाव नही पडता है ठीक है साप को दूध पिलाने से उसका जहर नही दवता है।

वह चुपचाप खडा उन लोगो को देख रहा था। वे इस प्रकार खडे जैसे सूअर पकडने वाले सूअर को घेरे है। इतने मे जयदेव के दो दोस्त और आ गये और एक साइकिल पर से ही वोला 'अरे तू.........।'

इसी के साथ उन्होने साइकिले खडी करदी और उनमे से एक गुण्डे को धक्का देता वोला, 'तू हटवे :'

इतना वोलने की देरी थी कि गुण्डे उन तीनो पर टूट पड़े जैसे कवर पर गिद्ध ।

जो लोग खड़े थे वे दूर खडे खड़े लडाई का आनन्द ले रहे थे। उन सव को यही डर था कि तीनो बुरी तरह पिट जावेंगे।

देखते देखते ही जयदेव ने दो तीन को वुत वना कर फेंक दिया। जैसे ही वह दूसरो पर टूटने के लिए हुआ और उसके हाथ मे एक चाकू आकर लगा। जैसे ही दूसरे हाथ से चाकू निकाला खून, टप टप गिरने लगा।

कुछ तो भाग खड़े हुये कुछ के अंग भग हो गये थे। एक आध वेहोस पड़े थे। जयदेव के दोनो दोस्त दो गुण्ड़ो से जूझ रहे थे कभी ऊपर तो कभी नीचे। एक ने एक के सीने पर वैठ कर चाकू निकाला जैसे ही उपर हाथ किया और जयदेव का हाथ का चाकू उसके हाथ में जा लगा।

वह दर्द मे करहाया पलक झपते ही उसको सड़क पर फक दिया और साईकिलो पर जाकर गिरा।

कुछ देर वाद ही वहाँ एक गुण्ड़ा भी नजर न आया तीनों मुस्करा रहे थे। जयदेव के दोस्त जयदेव से हाथ मिलाने के लिए आगे वढे

वहा जो बेहोश पडे चिल्ला रहे थे उनके ठोकरें मारते जयदेव ने हाथ मिलाया।

जयदेव के हाथ से हलके हलके खून रिस रहे थे। उनके कपडो पर खून मिट्टी के दाग लग गये थे बाल बिगड गये थे। और बालो मे मिट्टी भी भर गयी थी। सडक पर खून के धब्बे ही धब्बे पड गये थे।

वे पूर्ण पसिनो मे भीग गये थे। होटो पर विष भरी हँसी खेल रही थी खून टपक रहा था। इतने मे पुलिस आधमकी। पुलिस ने बेहोश और जिनके अ ग भग हो गये थे, उनमे जयदेव को भी शामिल करके हॉस्पिटल भेज दिया। जयदेव के दोनो दोस्तो का नाम, पता और कक्षा नोट करके विद्यार्थी के नाते छोड दिया धीरे धीरे पुलिस वहा की सारी परिस्थितिया नोट करने लगी। जनता का जो झुण्ड अभी तक तमाशा देखने के लिए खडा था वह पुलिस आते ही धीरे धीरे वहा से निकलने लगा।

चन्द ही मिनटो मे वहा सामान्य सा वातावरण बन गया पुलिस वाले वहा अकेले ही रह गये।

\+ + + +

जयदेव पुस्तक के पन्ने उलट पुलट कर रहा था परन्तु हाथ के दर्द के कारण उसका मन नही लग रहा था। एक दो पेज एक अध्याय मे से एक आध दूसरे अध्याय मे से पढने का यह क्रम जारी था। कुछ समय बाद इससे भी ऊब गया और पुस्तक बद करके उठा ही 'आप ... ।'

और झट पिता के चरण स्पर्श करते ही सहर्ष के साथ राजाराम ने आशिर्वाद प्रदान कर दिया। राजाराम सारे कमरे को देख कर हल्का सा खुश हुआ परन्तु हाथ पर पट्टी बधी देख कर बोला 'हाथ मे क्या हो गया ?'

जयदेव के मु ह पर हवाइया उडने लगी परन्तु जल्दी ही सतुलन सम्भाल लिया। जी......वो........ ...मैं............हाँ .. ..हाँ सिढियो से गिर गया।'

राजाराम उसके झूठ कथन पर व्यग मे फिका सा मुस्कराया और बोला, 'हा, हा जब ही चोट लग गयी है।'

जयदेव पिता को विश्वास दिलाता बोला, 'नही, नही कोई खास चोट नही है बस, जरा सी चोट लग गयी है ।'

राजा राम दृढ शब्दो के साथ बोला 'मुझे चोट लगने का गम नह है, मुझे गम है कि तुम झूठ बोल रहे हो । तुम्हारा चेहरा साफ बता रहा वात कुछ और है ।'

जयदेव की अपराधी की भाति गर्दन नीची हो गयी पलकें झुक गय मुंह की सारी रौनक चली गयी और राजाराम के सामने अपराधी व भाति खडा हो गया ।

राजाराम जोर से हँसा, बोला 'बेटे तुमने सोचा होगा कि दाव साहब क्या जाने ? मैने व्यापार किया है व्यापार जिसका नाम छल कपट है इतनी उम्र यूं ही नही गंवाई है । खैर मैं तुमसे न बोलता तुम ही बताओ कम से कम इतना तो सोचा होता कि मे पिता कैसे झूठ बोलता हूँ ?

जयदेव ऐसे लग रहा था कि काटो तो खुन नही । वह अपने आ को धिक्कार रहा था । 'रे, बेवकूफ क्यो झूठ बोली ?'

उसके हृदय मे ग्लानी हो रही थी प्रश्न यह उठ रहा-था मैंने झू क्यो बोली उसकी आखो से अपने आप ही आसुओ के मोती आखो से निक कर गालो पर ढलने लगे ।

राजाराम ने गले से लगा लिया । जयदेव रोता टूटी भाषा मे बोल "मै,............ " मैंने आप से झूठ बोला.... ... " मैंने आप को धोखा..... मुझे मारो.... " ....मैंने बहुत बडा पाप किया ....मुझे स मिलनी..................।"

राजाराम गर्व से मुस्कराता हुआ कंधा ठोकता बोला, "अब मुझे इ वात की प्रसन्नता है कि तुम प्रायचिश्त कर रहे हो, तुम को स्वग्र को दु है इससे बडो सत्य क्या हो सकती है ?" कुछ देर रुक कर 'अब मुझे अप आत्मा पर विश्वास हो गया है तुम फिसल नही सकते हो....... ....।

आसू पोंछता बोला, "छोडो यह तो जवानी हैं छोटे मोटे झग चलते ही रहते हैं ।।

भूल जाओ तुमसे भी कोई लड़ाई झगड़ा हुआ है ।

जयदेव बोला, "मुझे दुख: इस बात का है कि मैंने आप ने झूठ बोली।"

राजाराम जयदेव का समझाता बोला, "प्रायश्चित ऐसी चीज है जैसे दवा लेने से रोग कट जाता है। उसी प्रकार प्रायश्चित करने से धर्म रूपी पाप भी सत्य मे बदल जाता है। और तुमने तो डर मे झूठ बोली है। पकड़े भी गये हो और प्रायश्चित भी हो गया है।

जयदेव मुंह लटकाये पिता के सामने बैठा था वह सोच रहा था। आदमी डरने से झुठ बोल देता है पर अपनो ने क्यों झूठ बोले? अपनो से झूठ बोलता है वही सबसे बडी मूर्खता है।

अचानक जयदेव को खयाल आया।

"हा, मा तो ठीक है न?"

"हा ठीक है।"

"तो शाम को मेरी साथ अपने गांव चलोगी?

"नही, पन्द्रह दिन बाद मेरी परीक्षा है।"

"तेरी परीक्षा अप्रेल मे होती है क्या?

"हा।"

इतने मे खिडकी से हवा के झोकें के साथ पर्दा दूर हो गया राजाराम की सिधी नजर सामने खिडकी पर पडी, "आशा गम मे डूबी सी खडी थी उसका मुखडा पिला पड गया था होटो पर खुश्की एक पर्त जम गयी थी जो बता रही थी कि होटो की सरसरता ही चली गयी है। उसको इतना भी खयाल नही था कि वह किसी की नजर मे कैद है।

राजाराम को समझते शायद देर न लगी वह मुस्कराया और जयदेव से बोला।

"कपडे बदलो जयदेव लो शहर मे घूम आयें वैसे भी तुम्हारा मूड खराब हो रहा है, घूमने से वापस स्फूर्ति आ जावेगी।

जयदेव आज्ञा कारी बालक की भाति उठा और कपडे बदलने लगा

बारह

* * *

रजनी के नीले दामन मे श्वेत तारो का टिमटिमाता प्रकाश फैल रहा था। सडक पर लगे वृक्षो के पत्ते पीले हो गये थे और हवा के झोको के साथ गिर रहे थे। जो वसंत के आवगमन की सूचना दे रहे थे।

रात मे सिग्रेट चिगारी की भांति चमक रही थी दिनेश लम्बे लम्बे कस खीचकर होले–होले धुऐं छोड रहा था जो ऊँचाई की ओर ही बढती जा रही थी। फिर उसको हलकी सी बैचेनी हुई। कुछ स्मरण हुआ, "तुम तो समझदार हो………….।" मैं आदमी हूं, मैंने वास्तव मे बडा खराव काम किया जो मुझ से प्यार ही नही करती है वह……………" ………औरत जान भी ले सकती हैं।" वास्तव मे ठीक ही है, मैं क्यो उसके बीच में दीवार बनू ?

मैंने इतनी बडी बेवकूफी की, फिर भी उसके प्रेम का श्रोत कम न हुआ……………… वह देवता है और मैं राकक्ष……………

जिनकी सहायता के लिए भगवान भी तड़प जाते हैं।…………तुझे रहम तक नही आया। सिर्फ खुबसूरती के पीछे……अब भी वक्त है दिनेश माफी मांग लो ऊँचा उठ जाओ किसी ने ठीकही कहा है गलती करके उसको स्वीकार करना ही बुद्धी का कार्य है। धिक्कार है दिनेश धिक्कार……….। और आखे मूँद कर सिग्रेट के कस खींचने लगा जव जलती सिग्रेट की गर्मी उसकी अँगूलियो को मे आने लगी तो उसको गली मे फेंक दी। इतने मे उसके कन्धे पर हाथ पड़ा और चौंकता सा ऊपर देखा ओहो ! फूँपी……तू ?

लक्ष्मी आख दिखाती सी "मैंने कितनी आवाजें दी अब तक कहां था तू।"

दिनेश मुस्कराता वोला, "यही तो वैठा था मैं।"

"चल उठ खाना खा।"

दिनेश उठता वोला, "जयदेव सो गया क्या ?"

"मालूम नही।"

पूर्व दिशा से चाद गुलाबी रंग मे नीले आसमान को रंगता, तारो का राज्य समाप्त करता, प्रेमियो की आग को सुलगाता, रात रानी की खुशबू को बढाता और रात की काली चादर को चादनी मे रगता अपनी मजिल की ओर बढ रहा था।

दिनेश गम्भीरता से पानी का गिलास पीकर रखा ही था कि लक्ष्मी बोली "आज इतना उदास क्यो है ? दिनेश फिका सा मुस्कराके बोला" 'नही तो.........!' लक्ष्मी सोचती सी बोली "कुछ बात जरूर है दिनेश नही तो, तुझे वहम हैं और बाहर जाता बोला" राम राम फूंपी।

दिनेश के दिल मे रह रह कर विचार उठ रहा था माफी मागना स्वाभीमान को ठेस पहु चाना, पर माफी भी कौन मागता है ? जो समझदार हो वास्तवविक गलती समझे। तर्क और वितर्क के साथ अनेको विचार आ जा रहे थे। वह चादनी रात मे छत पर खडा था कि फुस फुसाती आवाज सुनी तो निगाहे गली मे गई तो कोई नही था। दिनेश की नजर चलती हुई खिडकी के प्रकाश मे रुक गयी।

आशा खिडकी मे से मुस्करा रही थी।

जयदेव मुस्कराता बोला पढो ! आशा मुझे क्या देख रही हो ? यही दिन है इसके बाद कोई तुमसे नही बोलेगा कि तुम पढो यह सुनहरा अवसर है हाथ से निकल जावेगा वापस नही आवेगा। इसलिए बेहतर है कि पढो।

आशा पर इन शब्दो का कोई असर नही हुआ और मुस्कराती बोली, "अपने साथ तो दो ही बात लागू होती है या उस पार या इस पार।" जयदेव गम्भीर होकर बोला "सोचो और समझो क्या तुम्हारा यही फर्ज है कि तुम अपने पिता का पैसा बर्बाद करो।"

"मेरा पिता ही मेरे ऊपर स्पेशल पैसा खर्च नही करता है सभी के पिता करते है और फिर मुझे तो आपकी साथ रहना है चिन्ता तो है ही नही।"

"अगर तुम्हारे पिता न चाहे तो..........?" "पिता क्या करेंगे ?" शादी मेरी होगी न की उनकी यह बात तो मैं मानता हू शादी तुम्हारी होगी

संतान का भी तो कुछ फर्ज होता हैं हर चीज की एक सीमा होती है उसे पार करके वाहर आना । खतरा..........आशा एक आख को हल्की सी दवाती वोली "फालतू के प्रवचन मत झाडो मस्ति के दिन है गुजर जाने दो ।

जयदेव मुस्कराके वोला, वाह ! आशा............ ...।"

"जव ही तो मैं वोलती हूँ जीना है तो मस्ति मे जीवो तुम्हारी तरह कितावी कीडो की भाति नही ।"

अगर हम कितावी कीड़े वनते है तो सुख और चैन भी तो तुम्ही को मिलेगा । इसी के साथ जयदेव ने खिडकी वन्द कर ली और आशा मुस्कराती हुयी घूमी तो सामने उसकी माँ खडी थी । किरण मुस्कराती वोली, "क्यो, क्या देख रही हो ?" इसी के साथ गली मे झाँक कर देखा तो कुछ भी नजर न आया तो फिर थूकी जैसे की किरण थूकने के लिए ही गर्दन निकाली हो ।

"वहुत रात वीत चुकी है सो जाओ ।"

"मा परीक्षा भी तो है ।"

किरण विचार करती, यह अभी किससे वोल रही थी । मैं इससे वोलूगी तो झट पुस्तक निकाल कर सामने रख देगी, देखने के पश्चात भी किरण के दिल को विश्वास नहीं हो रहा था जव कुछ भी नजर न आया तो सवसे वडी चुप ही होती है ।

किरण चुपचाप इधर उधर देखकर वोली, "सो-जाओ आशा ।"

"वस माँ ।"

किरण जाती हुयी दीवार से लगा हुआ वटन दवाया सारे कमरे मे अन्धेरा फैल गया ।

दिनेश का सिर अव चकरा उठा था सव वातें सुनकर वह परेशान हो उठा । सुनी हुयी वातें दिमाग में गू ज रही थी "मुझे तुम्हारी साथ जीना है..........आशा को जोर जवर से जरूर मैं उसको अपना सकता हूँ पर वह मर गयी तो मेरी वह हालत हो जावेगी जैसे धोवी का कुत्ता घर का न घाट का ।'"मेरा दिल तो उससे प्यार करता है ?

दिल, दिल वाजार की हर वस्तु को लेने के लिए दौडता हैं पर पैसे होगे जव ही तो लेगे । ठीक इसी प्रकार तुम्हारे चाहने मे कुछ नही होगा वह भी तो चाहे ।

दिनेश एकदम परेशान हो गया स्वयं के विचारों का जब स्वयं को ही समाधान नही मिला तो कानो से अ गुलिया देकर चीख उठा नहीं, नही नही........ ...' मैं उसके मध्य मे नही आऊ गा। जब उसके दृढ विचार हो गये तो स्वय ही अपने उपर मुस्कराने लगा।

आशा अन्धेरे मे पडी पड़ी उन कबूतरों के जोडे को देख रही थी जिनकी आखें अन्धेरे मे भी चमक रही थी चुपचाप किसी प्रकार को आहार न किये हुये बैठे थे ठीक हम भी तो एक जोडा है हमको भी इसी प्रकार रहना चाहिये इनके कौन से शादी विवाह होते है ? दिलो की शादी हैं यह मे तो सच्य है।

+ + + +

आशा दूब पर लेटी थी उसका सिर उसकी सहेली के पैरो पर था उसकी सहेली मुस्कराती उसके चेहरे पर नजर जमाती बोली 'आशा तू तो हमेशा परीक्षा मे बैठी ही नजर आती थी।'

आशा लापरवाही के साथ बोली, 'बस, पढ चुके थे।' रमजानी उसकी लापरवाही पर मुस्करायी और बोली 'देखो, आशा तुम पढ लिख जाओगी तो तुम्हारे ही काम आवेगी कोई ले नही जायेगा। 'जब मैं ही किसी की हो जाऊं तो पढाई किस काम की।'

आशा धरती पर पेड की सलाख से कुछ लिखती, "देखो रमजानी मेरे पढने मे दिल नही लगता है इस कारण किताबो मे मूंड फोडना बेकार है।'

तुम पागल हो कल हो सकता है कि 'तुम्हारे दरम्यान लडाई झगडा उठ खड़ा हुआ प्यार व्यार सब धरा रह जावेगा नफरत की आग भर जावेगी उस वक्त कौन काम आवेगा।'

'हर अच्छाई के पीछे बुराई भी होती है पर ऐसी हम मे कोई सम्भा वना नजर नही आती है।'

रमजानी मुस्कराती बोली, 'दूर के पर्वत बहुत सुहावने दिखाई देते है जब उनकी चढाई करते है हाथ पाव फूल कर पसीने टपक आते है। ठीक इसी प्रकार शादी मे पूर्व लम्बे लम्बे वादे होते हैं पर बाद में एक भी वादा पूरा नही होता है।'

'हमने कोई वादा नही किया ।'

रमजानी की दृष्टि आशा के अक्षरो पर गयी जिस पर लिखा था I love you Jai dave रमजानी होटो ही होटो के मध्य मुस्कराती बोली, 'इसलिए तुम तो यह जानती ही हो । ' आशा ने उसी वक्त उन अक्षरो पर हाथ फेर दिया ।

रमजानी आशा के सिर मे हलकी सी चपत मारती, 'पागल, भावनायें छुपाने से छुपती नही हैं ।'

आशा झेंप गयी, मुस्कराके बैठी हो गयी । रमजानी उसके मु ह के आते जाते भावो को देखकर मजाक के तोर पर बोली, 'न्योता कब का ?'

आशा नाखून कुदेरती 'पहले तू देगी या मै ?'

'अरे ! मेरे मिया के तो पहले ही दो हैं तीसरी मै हो जाऊ गी करे क्या ? अब्बा की पसद ?

दोनो गुलाब की क्यारीयो की ओर बढती जा रही थी आशा हलके दुखी शब्दो के साथ बोली 'यह तुम्हारे बड़ा गदा हिसाब हैं कि........................।'

रमजानी गुलाब के फूल की एक पंखुडी तोड कर मुंह मे चबाती बोली, 'तुम नही जानती हो प्यासे की प्यास बुझती हैं तो पानी की कीमत जानता है और हमेशा हम पिते हैं तो विचार भी नही करते हैं । आशा ने तुरन्त ही जवाब दिया 'लोमडी के अंगूर हाथ न आये तो क्या बतायेगी ....?'

रमजानी आशा की ओर देखी, जो लगातार पुस्कराये जा रही थी सोच रही थी कितनी खुशी है ? पल दो पल के लिए ऐसी खुशी हमेशा नही आती है जीवन चन्द ही दिनो आती है ।'

आशा तिखी नजर से उसकी ओर देखती बोली मेरी ओर घूर घूर कर क्या देख रही हो जैसे आजकल गली का कूडा.... ....'

रमजानी ने आशा को बाहूपास मे कस कर 'बडी बढ बढ़ कर बातें बनाने लग गयी है । 'तू छोड़े भी तो, ऐसे तो ऐसे तो बड़े मियाँ को कसना मेरे मे हिम्मत नही है ।'

रमजानी आशा की चचलता पर खिल खिलाकर हस पड़ी और आशा को जोर से कस कर उसके चुम्बन ले लिया।

आशा हल्की झुँझलाहट के साथ चुम्बन वाले भाग को दुपट्टे से पोंछ डाला। दोनो सूखे पत्तो पर पाँव रखती बढ़ती जा रही थी पीले पेड़ पत्ते हवा के झोंको के साथ उन पर गिर रहे थे। ऐसा प्रतित हो रहा था जैसे खुशी मे फूल वर्ष रहे हो।'

× × ×

किरण तेजी से कमरे मे आयी और मेज पर रखी कापी का पन्ना फाडकर जाने लगी कापी के दूसरे पेज नजर पर पड़ी जिसके ऊपर मोटे मोटे अक्षरो मे लिखा था I Love you Jay' जाती हुई के पाँव जगह की जगह छिटक गये और गौर से देखने लगी फिर कापी उठा कर पढी कुछ मिनट सोची कौन है जय लडकी या लडका और फिर अपनी साथ कापी को ले गयी लेकिन उसका दिल और दिमाग किस काम मे न रहा था रह रह कर यही प्रश्न उठ रहा था जवान बेटी है कही फिसल न जावे अगर फिसल गयी तो हम कही मे भी नही रहेगे वर्षो से बनाई हुई इज्जत मिट्टी मे मिल जायेगी इसलिये हमको चाहिये कि उसकी हर गति विधि पर नजर रखी जावे पर दूसरी ही पल नही, ऐसा नही हो सकता किसी एक लडकी ने मजाक मे लिख दिया होगा और कापी को उन स्थिति मे बच्चे के सामने पटक दिया वह उठाकर उसे चूमने लग गया इससे उसके थूक ने गिलाकर दिया और जय शब्द को ही मिटा दिया अब उसका मतलब कुछ भी समझा जा सकता था पर पूर्णतः न मिटकर धुधला हो गया था।

आशा ने बच्चे को उठाया और आंखे मूद कर नाचने से लगी कुछ देर तक प्यार और मस्ती में उसको झुलाती रही हसाती रही और बुलाती रही पर जब उसकी दृष्टि नीचे पडी और वह चौंकती सी इधर उधर देखने लगी जब उसकी नजर मे कुछ भी दिखाई न दिया, तो झट से पन्ने को फाडकर उसके टुकडे टुकडे कर दिये और खिडकी से बाहर हवा मे उड़ा दिया।

किरण बच्चे को आशा की गोद से लेकर दूध पिलाने लगी और बोली 'यह जय कौन है, लडका है या लडकी ?'

आशा फिकी सी मुस्कराती बोली 'तुझे क्या लगता है ?'

'मुझे तो लडका लगता है ।'

'तो होगा कोई लडका ।'

किरण ने पास पडी कापी को उठाया और तेजी से इधर–उधर करती पन्ने उलटने लगी पर उसको कुछ भी नजर न आया और आशा की प्रश्न दृष्टि से देखने लगी ।

आशा पहले से ही कापी को ऐसी दृष्टि से देख रही जैसे उसको कुछ मालूम भी न हो । जब वह उसको अपनी ओर देखते देखा तो बोली 'इसमे क्या देख रही हो ? मा ।'

वो 'ही जय ·· ········?'

'कौन················?'

'जिसके बारे मे मै बोल रही हूँ ।'

आशा के बच्चे को गोद मे लेती बोली 'अजीब बात है मै जान ही नहीं पायी ।'

फिर बच्चे को ऊपर निचे उछालने लगी बच्चा कभी मुस्कराता और कभी कभी खिल खिला कर हंस पडता तो आशा उसको चुम लेती थी । वह उसको यह महसूस न होने देता चाहती थी कि उसी ने पन्ना फाडा है इसी लिए वह बच्चे के साथ दत्त चित होकर खेल रही थी उस पर उछाल उछाल कर खुश कर खुश रखने का प्रयत्न कर रही थी ।

× × ×

'अभी तक इसका घाव नही भरा ।' जयदेव लापरवाही से बोला, 'मिट जावेगा फूपी ।' 'बड़ी लापरवाही बरता हैं ?'

जयदेव पट्टी को लक्ष्मी की ओर बढाती बोली, 'यह पट्टी लेकर इस पर ठीक ढंग मे बाध दें ।'

लक्ष्मी जयदेव के हाथ के घाव को गोर से देखती बोली, "बहुत चोट आई है रे । तू तो मुझे उस दिन झूठ ही बोल दिया ।"

जयदेव दर्द को दबाता मुस्कराता बोला ।

"नही यह तो जरासी है················।"

"अच्छा" और लक्ष्मी मुस्कराती हाथ पर पट्टी बांधती बोली, "कहा दर्द तो नही हो रहा है।"

"नही।"

"और तनाऊ ?"

"हा।"

"और·········।"

"हा।"

"और · ·····,,

बस।

"ठीक है। और उसी जगह पर गाठ लगाती मुस्कराती बोली" यह नही बताया।

"लडाई किस बात पर हुयी ?"

"ना समझी पर।"

लक्ष्मी उसके जवाब सुन कर मुस्कराने लगी और चुपचाप सोचती उसके चहरे को देखने लगी जिसके आनन पर खुशी की लहरो के साथ साथ ग·भीरता अपना रूप चढा रही थी।

'अजीब लडका है ? खैर कुछ भी हो समझदार है। गलती, गलती तो होती रहती है। लडके ही तो हैं और फिर उससे बगैर कुछ बोल ही खडी हुयी।

जयदेव बोला, "जा रही हो फूपी।"

"हा, नीद आ रही हैं और फिर बैठे-बैठे करें भी क्या ?

जयदेव ने कुछ भी जवाब नही दिया। दिन ढल गया था। जयदेव कुर्सी पर ही बैठा-बैठा नीद निकाल रहा था। खास नीद तो नहीं आ रही थी कि ऊंघ सा ही रहा था, पर चाय की अवाज सुन कर वह चौंका और आखें खोल कर देखा, और आखो को मसलता हुआ बोला, "आओ दिनेश।"

दिनेश मुह लटकाता कुर्सी पर बैठता बोला, "मुझे माफ कर दो जयदेव मैंनें तुम्हारी साथ बहुत बरा किया। इतनी मूर्खता को शायद कभी न की हो·········· ···।"

जयदेव बोला, "क्या बोलते हो दिनेश, गलती मानव ही करता है,

ग्रोर गलती करता रहेगा पर जो गलती करके गलती स्वीकार करता है वह ग्रादमी ही तो है।"

मैंने तुम को पिटवाया पर भगवान ने तुम्हारी रक्षा की ··· ···फिर भी तुम्हारे प्रेम का सागर कम न हुग्रा वास्तव मे तुम एक देवता हो देवत" इसी के साथ दिनेश की पुतलिया डबडबा ग्रायी जयदेव ने दिनेश को कुर्सी से खिच कर गले से लगा लिया, "वास्तव मे दिनेश'तुम दिनेश ही हो तुम्हारे ग्रन्दर ग्रपने ज्ञान की किरण फूटी ।,,

ग्रादमी वही होता है जो स्वय भूल सुधारे जमाने की गलती.पकडना तो ग्रासान है ग्रोर ग्रपनी गलती पकडना वहुत ही सरल काम समझता हू,,

दोनो मुस्कराते एक दूसरे को देखते रहे "भूल जाग्रो दिनेश तुम ने जो कुछ किया ग्रोर ······· ········,,

कुछ देर तो इधर उधर की वार्ते करते रहे ग्रौर फिर दोनो घुल मिल कर एक हो गये ग्रौर वे भूल गये थे कि उन्होंने ग्रापस मे कुछ किया भी है या नही।

जयदेव मेज की रैक से एक मिठाई की प्लेट निकल कर मेज पर रखता वोला "ग्ररे। बैठो दिनेश खडे क्यो हो ? जाना ही तो है चले जाना ।,,

दिनेश मुस्कराके, "नही, नही जा नही रहा,,

जयदेव पानी का गिलास कुर्सी पर रखता वोला, "चलाग्रो हाथ किस का इन्तजार कर रहे हो ?,

दिनेश मुस्कराके कुल्ले करने लगा।

× × × ×

तेरह

• • •

रग विरगे फूल मुस्करा रहे थे। रंग विरगी पौशाक मे तितलियाँ उनको ग्रपना नाच दिखा रही थी। झिल के किनारे जयदेव हाथ सहारा लिए, करवट लिए लेटा था। ग्राशा उसके सिर की ग्रोर वैठी वालो को ग्र'गूलियो

से सहला रही थी। जयदेव मुस्कराता बोला "आशा तुम मालिश करो। मैं सोता हूँ मैं यह देखूगा कि क्या तुम मुझे सुला सकती हो ? आशा जयदेव की बात पर बोली, "वाह। वाह। आप सो गये तो फिर मैं.........,,

"तुम्हारे बोलने के अनुसार ही तो तुमने मुझे यहाँ लाकर पटक दिया तो फिर अब मेरी भी बात मानो।,,

"क्या... ....?,,

"झील में उतरो.................।,,

आशा कृतिम रूआँसी के भावों को ला कर बोली, नही, मैं नही,,

जयदेव मुंह विगाडता, "नहीं मे नही....... और उठ बैठा।

बादल आसमान पर छा गये थे। सुहावनी घटायें एक पर एक चली आ रही थी। उनके आगे आगे सफेद-सफेद से बादल ऐसे लग रहे थे जैसे कोई बच्चा अपनी माँ के आगे आगे खेलता हुआ चला आ रहा हो।

दोनो मुस्कराते, लटखडाते कदमो से एक दूसरे पर गिरते कभी एक दूसरे के बगल मे हलकी सी चुटकी लेते ही जयदेव मुस्करा देता आखिर उसकी साडी का पल्लू पकड कर अपनी कमर पर लिपेट ने लगा आशा खिचती सी रूआसी शब्दो मे, "बोली छोडो ना.... ....।,,

पर क्यो .... ?,,

आशा का साडी का पल्लू जयदेव एक झटके के साथ छोडा आशा का सतुलन विगड गया और फिसलकर उसका पाँव झील मे चला गया जैसे ही दूसरे पाँव पर जोर रखा और दूसरा पाव भी फिसलकर झिल मे चला गया। क्योकि पत्थर पर फिसलन थी देखते देखते ही आशा पानी मे डूब गयी पहले तो जयदेव मुस्कराता रहा फिर जब उसका फिसल कर दूसरा पाव भी झील मे चला गया तो जोर से हसा परन्तु वह पूर्ण डूब गयी तो सारी हसी मुस्कराहट गायब होकर घबराहट के साथ झील मे कूद गया जैसे ही आशा उपर आयी और निचे जाने लगी तो जयदेव ने उसका हाथ पकड कर सहारा प्रदान कर दिया।

आशा हापती और डरती बोली, "अभी तो.......मैं....... डू.........व ....जाती।" जयदेव मुस्कराता बोला "मै किस लिए था।" हाथ का सहारा देता जयदेव आशा को झील के मध्य मे ले गया। आज झील ने

ग्रौर लोग भी उछल उछल कर नहा रहे थे, हँस रहे थे। कुछ एक लड़कियों का भुण्ड पहाड़ की चोटी पर दूर मुस्करा रहे थे ग्रौर ग्रपनी ग्रपनी ग्रदा मे चल रहे थे।

जयदेव झील के मध्य मे जाकर फिर हाथ का सहारा हटा लिया ग्रौर ग्राशा डुबकी लगाती बाहर ग्रायी तो जयदेव मुस्कराके वापस थाम लिया। ग्राशा निराशा के भावो मे बोली, "ग्रब हम को बाहर ले चलो।"

जयदेव किनारे की ग्रोर बढता "तुम मेरी जिन्दगी भर साथ रहोगी ग्रभी से ही डर रही हो।"

वह उसी भावो मे बोली, 'लेकिन पानी में थोडी ही।"

जैसे जैसे किनारा पास ग्राता जा रहा था ग्राशा के शरीर मे जान मे जान ग्राती जा रही थी। ग्रब उसके शरीर से मछली छू जाती तो कभी तो सिहरन भी दौड जाती दिल मे गुदगुदी होने लग जाती। कभी कभी तो कमल से हल्के नीले होंट भी खिल जाते। वे किनारे पर ही ग्राये ग्रौर बादल बरसने लग गये थे। घटायें पहाडो की चोटियो पर बैठ गयी थी ग्रौर झील मे गहरा नीला सुहावना प्रतिबिम्ब बना रही थी।

वर्षा के कारण मौसम मे गर्माहट ग्रा गयी थी। जो झील का ठण्डा पानी हृदय को काट रहा था उसकी जगह बरसाती पानी ने ले ली थी जिस मे न ठण्ड थी न गर्मी बल्कि एक शरीर मे स्फूर्ति भरने वाला पानी बरस रहा था।

पेड ग्रौर पौधे मु ह खोले वर्षा का पानी से दिलों से लगी प्यास को बुझा रहे थे जो चातक कुछ समय पूर्व परेशान सा होता इस वृक्ष से उस वृक्ष पर जा जाकर बैठ रहा था ग्रौर मलिन सी ग्रावाज मे पुकार रहा था वह पूर्ण ऊंची चूँच किये ग्रपनी प्यास बुझा रहा था।

ग्राशा शर्माती सकुचाती एक ही जगह जयदेव के बदन का सहारा लिये स्तर खड़ी थी।

ग्रचानक बिजली चमकी बादल गर्जे ग्रौर वर्षा की गति तेज हो गयी। पहाड़ो से ग्रनेक छोटी—छोटी नदियाँ की धारायें फूट कर तेज गति से झील की ग्रोर भागी ग्रा रही थी।

ग्राशा जयदेव के वृक्ष स्थल से चिपक गयी थी जयदेव ने उसको जोर

से बाहु पास में कसा आशा के शरीर की हड्डिया कूडवडा उठी और उनके मुंह से दर्द की एक हलकी सी आह निकली ! और मुस्कराके वापस सीने मे लग गयी।

झील मे पानी की मोटी-मोटी बूंदें बुलबुले उठा रही थी जैसे की पकने के पश्चात खिचडी से बुलबुले उठते है।

मछलिया पानी के ऊपर आ गयी थी और जिधर मे वर्षा का पानी वह वहकर आ रहा था उसमे ऊपर ही ऊपर चढती जा रही थी। कुछ छोटी मछलियां झील के बाहर भी आ गयी थी जो छिछले पानी मे दौड लगा रही थी।

झील के किनारे कोई-कोई मेढक भी अपनी तान निकाल रहा था।

आशा के शरीर मे वासना की आग बुरी तरह लग गयी थी। जैसे जैसे पानी पडता जा रहा था उसकी आग भी बढती जा रही थी। उसने अपना सारा शरीर जयदेव के हवाले कर दिया और सीने मे जा लगी। उस की साडी छाती से हट गयी थी। ब्लाउज के बटन खुल गये थे आंखो मे एक नशे की चमक चमकने लग गयी थी जैसे जैसे जयदेव का हाथ आशा की पीठ पर चलता, उसके शरीर मे एक अजीब गर्माहट की तरगे फैल जाती थी। जयदेव अपने प्यासे आशा के गुलावी अधरो पर रख दिये।

वादल वरस कर हलके होकर ऊपर चढ रहे थे झील मे जो गहरी घटाओ के प्रतिविम्ब थे उसकी जगह सुहावने अवारा बादलो ने जगह ले ली थी।

हवा का वेग तेज हो गया था। जो फूल और पोधे मुंह फाडे खडे थे अब वे मस्त, हवा के झोको के साथ इधर से उधर डोल रहे थे। उनके फूल और पत्तो मे एक अनोखी ताजगी आ गयी थी।

+ + + +

वाजार मे भीड खचाखच भरी थी रिक्शा, तांगा, मोटर और जन समूह मिलकर एक शोर उत्पन्न कर रहा था।

जयदेव और आशा के सामने साडियो का ढेर लगा था। आशा तो रंग पसंद करती ही झिझक रही थी। जयदेव ने उनमे से हलके गुलाबी रग की साड़ी उठाकर दुकानदार से बोला, "इसी रग मे दो साड़ियां बाध दो।"

दुकान मे ग्राहको की हलकी भीड थी कुछ कपडा देख रहे थे सीम्टे रहे थे तो कुछ वापसी की राह ले रहे थे। अन्धरा फैलता जा रहा था सडक की वत्तियां मन्द मन्द रोशनी फैलाने लग गयी थी।

जयदेव आशा की ओर देखता बोला।

"क्यो पसद है।"

"पर..................अभी नही।"

"दोनो नही तो इनमे से एक ले लो।"

"नही।"

"वो तुम्हारी इच्छा ...."

मेरी इच्छा की बात नही हैं, मेरी इच्छा तो लेना चाहती है परन्तु मा-वाप...... ....

जयदेव फिका सा मुस्कराता, "ऊँहूं।"

आशा मुस्कराती, वात को पलटती वोली, "गाव कव जाओगे ?"

"वस, जल्दी ही ...."

आशा उत्सुकता वस वोली, "कितनी जल्दी........?"

"कितने दिन रहोगे ?"

"यही दस पन्द्रह दिन................" कार चीखती हुयी, भीड को चीरती हुयी धीरे धीरे आगे वढ रही थी।

आशा उदास होती वोली, "इतने दिन क्यो............?"

"इसलिए की वहा मेरी इच्छा नही माँ-वाप की इच्छा है।"

"पर मेरा.... ....?"

"वस, तुम्हारे दिन तो इन्तजार मे कट जोवेगे।" और आशा की ओर देखकर फिका सा मुस्कराया आपको तो हँसी आ रही है पर मेरा दिल जल रहा है "अगर आपके घर वालो ने मुझे पसद करने से इन्कार कर दिया तो ?"

मुझे अपने पर विश्वास है, मेरी इच्छाओ का हनन कुदरत नही कर सकती हैं और.......... चंचल............वो वचपना था............वो न जाने वहन के रूप मे आती या पत्नी के रूप मे था एक सुनहरा प्यार अमिट छाया।

वहीदा और उसकी आंखो मे पानी भर आया। उसने दामन से आँसू पोंछ डाले और आशा की ओर देखा जो हलकी सी बेचैनी के साथ विचारो मे डूबी थी ।

कार हलकी सी आवाज के साथ रुकी जयदेव हाथ हिलाता, "गुड नाईट ।"

"तो आप कल ही जा रहे हैं ?"

"बिल्कुल,....... .... ।"

"पर मुझे..... ....।"

जयदेव उसका वाक्य भी पूरा नही होने दिया और बीच मे ही बोला, "तुम तो मेरे रोम रोम मे समा गयी हो तुम को तो चिन्ता ही नही करनी चाहिए ।"

आशा जयदेव की ओर देखती आगे पाव बढ़ा रही थी । उसे इतना भी खयाल न था सडक पर कोई पत्थर होगा तो ठोकर लग जायेगी । वह तो प्यार की दिवानी बनी लगातार अपनी आंखो मे उनकी छाया बनाती जा रही थी । हृदय पर उसी की सूरत उतारती जा रही थी । उसको भूरी भूरी बीती यादे सता रही थी । कितने मादक क्षण थे कितने प्यारे थे ? पर आज विरान.........आशा ने दीवार से लगा स्विच दबाया तो आश्चर्य के एक धक्के के साथ दीवार से जा सटी जो अब तक जयदेव की छाया मडरा रही थी दब गयी थी। रोम रोम से पसीना छूटने लग गया था ।

देवदास सडक पर लगातार देख रहा था कमरा सिग्रेट की धुऐ से भर गया था आशा का दम घुटा जा रहा था। देवदास लगातार सिग्रेट की धुऐ निकालता जा रहा था।

जैसे ही उसने कुर्सी घुमायी आशा एक दम सकपका सी गयी । देवदास क्रोध की नजरो से देखता बोला, 'इतनी रात गये कहां से आ रही हो ?'

आशा उसकी नजरो का सामना नही कर सकती थी उसने अपनी नजरे नीची करली, क्रोध से होट चबा रही थी जिन मे खून भी निकल आया था। वह बोलना चाहती थी परन्तु उसकी जबान तल्लु मे चिपक गयी थी उसको डर था कि पिता है पिटाई भी बनादे ।

देवदास क्रोध की आवाज मे हलका गर्जता बोला, 'क्या तुम ही वह लडकी हो जिसके पिता की इज्जत सितारो के समान चमक रही है और तुम उसकी इज्जत को धूल मे मिलाना चाहती हो ।'

आशा का चेहरा पीला पड गया था। आखो कें सामने तरमरे से छा गये थे। दिल की धडकनें मिटती सी नजर आ रही थी और दीवार के सहारे अपने को छोड कर वह खडी थी।

देवदास के पुट मे, 'मेरे यहा कुछ दिन स्थर न रहने के कारण तुमने क्या क्या कर लिया ? और उन सब काले कारनामो का मुझे आज आभास हुआ।'

फिर कुछ रुक कर बोला, 'ईश्वर ने अच्छा ही किया और कुर्सी से उठता, 'कोई बात नही हैं, अभी तो मैं हूं ......पर आज से तुम अपनी माँ के कमरे मे सोओगी।' इतना बोल कर देवदास भारी कदमो से कमरे के बाहर हो गया। उसके चले जाने के बाद आशा की जान मे जान आयी और रेंगते हुऐ कदमो से कुर्सी मे आकर धस गयी उसकी नजर लगातार खिडकी पर जमी हुयी सोच रही थी। जयदेव देखले तो मैं उसको बोल दूं। सब कुछ बता दू। उसको भी तो मालूम हो पर उसको तो उसके कमरे मे अन्धेरा नजर आ रहा था जैसे उसमे कोई नही है और होगा भी तो सोया हुआ।

इतने मे किरन की आवाज उसके कमरे मे गूंजी 'आशा ऊपर चलो।'

आवाज पडते ही आशा का रोम रोम काप उठा उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसके प्राण निकले जा रहे हो। उसके सारे होंट सूख गये पर आवाज उठ रही थी कि उसी के सहारे वह लड़खडाती सी उठी और फिर अन्धेरे मे वह बल्ब गुल कर के खड़ी हो गयी। उसको अन्धेरा बडा प्यारा लग रहा था उसका दिल चाह रहा था कि मैं हमेशा हमेशा अन्धकार मे खो जाऊ।

\+ + + +

चौदह

• • •

'देख मां.........' और पेटी खोल कर माया के सामने रख दिया। माया मुस्कराके बोली 'अच्छा है।' और साडी को उलट पुलट करके, 'रंग और रूप भी अच्छा है। पर मेरे पास बहुत कपडे हैं, अब तो मैं गाव में भी आ गयी हूँ।'

जयदेव मुस्कराता बोला 'तू........?'

'बच्चा ही रहा रे अभी तक तो।'

'दादा साहब कहा है ?'

'अपनी जमीन पर एन्जिन लगा लिया है खेती करने लग गये हैं।'

'अजीब आदमी है। मेरे पास गये थे, मुझे कुछ बोले भी तो नही।'

माया मुस्कराती बोली, 'तुझ से क्या बोलता ? तू तो अभी बच्चा ही है।'

इस उत्तर को सुनकर जयदेव चुप हो गया 'जिधर देखो सब बच्चे ही बच्चे समझते है आखिर मैं बडा कब होऊंगा ....खैर बच्चा रहने मे ही फायदा है।'

'तो मा अब अपन भी चलें।'

'हां, कमला को बोल दिया कमला टिप्पन मे उनके लिए खाना बाध दो।'

माया मुस्कराती जयदेव के सिर पर हाथ फेरती बोली, 'तुम्हे मेरी याद नही आयी ?'

जयदेव बोला, 'कभी कभी तो मा, तेरी ऐसी याद आती थी, कालेज छोड कर हो घर भाग जाऊ........।

'झूठा..............।'

'मां मैं हर एक रोज छोड कर तुझे पत्र डालता था अब बता तेरी........।'

इसके बीच मे ही माया बोली 'तो मै क्या······?'

और बीच मे ही कमला ने टिप्पन सम्भला दिया और दोनो उठ खडे हुए।

खेतो मे कटी फसल के ढेर पडे थे। कुछ एक पर भूषा से दाना अलग कर रहे थे। कुछ एक में हल चल रहे थे कुछ एक में गहरी हरियाली छायी थी।

जयदेव और माया बच बच कर कदम उठा रहे थे। क्योकि उनको चलने का इतना अभ्यास नही था। मुडे हुये खेतो में किसान खुशी में झूम रहे थे कमजोर भी उत्सव साहस और आसा के साथ काम में जुटे हुये थे। बच्चे तुतली पर मीठी आवाज में गीत गा रहे थे। औरतो का यह हाल था कि तपती दोपहर में भी काम में जुटी थी हलका घू घट मन्द मुस्कान के साथ कभी कभी बात कर लेती थी और फिर अगली फसल की चर्चा होने लग जाती। जिसमें आने वाली उपज के बारे में अच्छी खाशी योजनायें पेश करती।

यह ठीक ही है, आदमी की मेहनत सफल हो जाती है तो वह और भी इच्छा करता है, मैं अच्छा पैदा करू कुछ आराम मिले और तडफता न जी कर खुशी के साथ जीऊ, पर सृष्टि ने निर्माधार मे दुख: और सुख का एक मधुर सम्बन्ध बना दिया गया है जैसे शहद से मधु मक्खी का।

राजाराम मेड का सहारा लिये खडा खडा आदमियो को समझा रहा था कि 'वहाँ जाओ वह धोरा ठीक करो।' जब उनको काम बताते बताते ही उनकी नजर पडी चहरे पर खुशी की लहर दौड गयी। राजाराम के जब दोनो करीब से आगये तब बोला, 'अरे गाड़ी ले आते पैदल ही क्यो आये? गाडी ले आते।

जयदेव पिता की बात सुन, 'हां, हा ठीक·········।'

माया, 'यहा क्या अच्छे लगते? सब तो पैदल चलते हैं।'

जयदेव बोला, 'और मैं भी तो पैदल चलने का इच्छुक था।'

एक बूढा राजाराम से बोला, 'लडका बड़ा होनहार है सेठजी हर बात पर तसल्ली शान्ति और धर्य के साथ काम लेता है।

राजाराम की छाती दो गुना फूल गयी और मुस्कराता बोला, 'नहीं रे। अभी तो बच्चा ही है काहे का समझदार है।'

और राजाराम, अच्छा माया छप्पर तले बैठो, मैं आता हूं।'

जयदेव और माया गाव और शहर की तुलना करने लगे। जयदेव अधिकतर गाव की अच्छाइयो का ही पक्ष ले रहा था माया कुरेद कुरेद कर गाव की बुराइयो को सामने रख रही थी और शहर की अच्छाइया। जयदेव माया को उन अच्छाइयो मे भी बुराइया बता रहा था।

राजाराम छप्पर मे प्रवेश करता बोला, 'पसद आयी या नही।'

जयदेव मुस्कराके बोला, 'भला आपकी पसन्द और मेरे पसन्द न आवे·······?

'अब तो गर्मी गर्मी यही रुकोगे ?'

'हा, क्यो नही।'

'पर पखे वखे नही है यहा ?'

जब बिजली ही नही हैं तो पखे कहां से होंगे ?

और राजाराम के मुंह से अनायास ही निकल गया शाबास शाबास ··························मुझे मेरा बुढ्ढा दिल तुमसे यही आशा करता था कि तुम जरूर मेरी बात मानोगे।

राजाराम कुछ समय तक तो जयदेव की परीक्षा के बारे मे पूछा ताछी करता रहा फिर आचमन कर के बोला, 'देखो भाई मैं तो चलता हूं अगर मैं काम करूंगा तो जरूरी है आदमी भी काम करेंगे।

लू तेजी से चलने लग गयी थी। सूर्य पूर्ण यौवन से चमक रहा था। धूप मे चलना तो बडा काम था पर देखना ही मुश्किल था। हवा ऐसे चल रही थी जैसे अपनी साथ अग्नी के सोले बहा रही हो।

धूल भरी हवा चलने के कारण जयदेव के मुंह पर मिट्टी की एक हल्की सी पर्त जम गयी थी। जो मुह मोती गेहु कि भाति चमक रहा था वह काला पड गया था।

जयदेव की यह हालत देखकर माया का दिल तड़प उठा, क्या मुंह था इस धूप ने क्या हालत कर दी ? अच्छा यही होता कि यह शहर ही रहता आदमी है अब भी काम कर रहे हैं और इसके बाद भी काम करेंगे अभी

तो इसके खेलने के दिन है और अभी यह काम करने लग गया तो ....
नही नही इतना बुरा नही होने दूंगी । आज ही बोल दूगी इसे शहर भेज दो पर बोलने से क्या होगा ? स्वय भी तो सहमत हो । और गम्भीरता के साथ माया बोली, ''जयदेव बेटे तू तो वापस शहर ही चले जा, देख तेरी क्या हालत हो गयी मुझ से नही देखी जाती है'

जयदेव मुस्कराता लापरवाही के साथ मुह से पसीने पोंछता बोला, दादा साहब भी इस धूप मे मजदूरो की साथ है और मैं सिर्फ बैठा ही हू।'

'पर देख तेरे मुह पर कितनी मिट्टी जम गयी है ?'

'जम जाने दो मा, एक आध दिन और जम जायेगी इसके बाद नही जमेगी।' जयदेव का जवाब सुनकर, "कहते है, माँ के दूध असर आता है पर इसमे मे कुछ भी नही आया देखते है वक्त मे कहा तक साथ देता है ?'

अपन तो सारे दिन परेशान हो जायेगें इन्हे ही यहां रहने दो !'

जयदेव ने कुछ भी जवाब नही दिया और माया की साथ उठ खड़ा हुआ ।

सारे दिन गर्म हवा चलती रही, गर्द उड उडकर आसमान पर छा गयी । आखिर शाम भी आ पहुँची उसी के साथ आधी आ धमकी । गर्मी थी,

जयदेव लगातार पखा झुला रहा था परन्तु गर्मी पीछा नही छोड़ रही थी । हल्के पीले मिट्टी तेल के प्रकाश मे भी जयदेव खुश नजर आ रहा था । आदमी को हर परिस्थिति का डटकर मुकाबला करना चाहिये, गिरकर भी संभलना चाहिए ये तो एक दो दिन की गर्मी है खत्म हो जायेगी । माया उसको लगातार पखा झुलाता देखकर बोली, "हाय दर्द करने लग गये होगें मैं झुला दूँ ।"

"थोडे दिन की वात है और.............."

"बस, वे भी यही वात करते हैं कोई भी काम करो यही बोलेगे थोड़े दिनो का दुःख है ।"

जयदेव मुस्कराता बोला, "मां दादा साहब तो जाने वाले नही है और अपन शहर मे रहे अच्छा थोडी लगता है इसलिए भला यही है वो

बोले उसमे हां मे हां भर लो और फिर गांव मे भी तो अपने भाई.........."
इसके बीच मे ही माया बोल पडी, "रहने दे तेरे प्रवचन।"

इस पर जयदेव जोर से हंस पडा।

सुबह का वातावरण बडा सुहावना हो गया था। ठण्डी ठण्डी और मस्ती भरे पवन की एक लहर पर दूसरी लहर आ जा रही थी।

रात को अधिक देर तक नीद न आने के कारण जयदेव की आंखो मे नीद भरी थी परन्तु सूर्य की किरण खिडकी मे आ जाने के कारण वह मजबूर होकर उठा और दरवाजा खोला इतने मे एक बूढ़ा सा व्यक्ति जयदेव के पास आता बोला, "यही है न भाभी जो लडका तुम्हे मिला था।

माया क्रोध के भावो मे बोली, "कौनसा लडका मिला था मुझे ?"

ओहो !............... मैं भूल गया।

जयदेव आश्चर्य से उसकी ओर देखकर बोला, "कौन है मां यह ?"

"यह तेरे चाचा है, बेटे"

"नमस्ते चाचीजी।"

वह ही ही..........करता नमस्ते ! नमस्ते !

जयदेव कुछ देर तक तो उनके पास रहा और थोडी देर बाद जयदेव का चाचा जयदेव को जाता देख और "बहुत बडा हो गया है भाभी।"

"देखो, धर्म यह लडका मेरा है तुम फालतू की बातें बन्द करो।

धर्म उठता बोला "भाभी सही बात हमेशा ही कडवी लगती है।"

"तू ही सच बात बोलने वाला मिला हैं और तो कोई हम को मिला ही नही।" "वरना गाव छोडकर क्यो जाते ?" जाने किसका खून है ? अपना बना रही हो।" धर्म,...............और क्रोध की निगाहो से उसकी ओर देखने लगी।

जयदेव सारी बात सुनकर इसका मतलब मैं समझा नही ? लेकिन तूने तो देखा ही इनको है। मैं किसी का भी हूं पर मेरे मां-बाप यह ही है। दुनिया झूठ बोलती है यही तो मा थी जो मेरे लिए सारी-सारी रात बैठी रहती थी। गिले मे स्वयं सोती थी और सूखे मे मुझे ....मैं नही मान सकता कि मेरे मा-बाप यह नही है दुनिया ही बहकाती है बात का बतंगड बना कर रख देती है। मा-बाप वो ही होते है जो उसका लालन

प्रकार पालन पोषण करता है पैदा करने वाले ही मा बाप नही हो जाते है। मैं इनसे अलग नही हो जाऊंगा चाहे यह मुझे अलग कर दें पर मै इनसे अलग नही जाऊंगा जब तक भी यह जिन्दे है। मे अलग नही हो जाऊंगा.....................।

माया को धर्म की बात सुनकर चक्कर आने लगा और चारपाई पर जाकर लेट गयी। जिसको मैंने इतने लाड प्यार से पाला था मुझसे अलग हो जावेगा ? जिसके लिए स्थनो से दूध आ गया था। वह मुझ से अलग हो जावेगा ? -- .... हे भगवान और लेटे लेटे ही हाथ जोडती है।

इतने मे जयदेव प्रवेश होता बोला, 'मा आज उदास कैसे बैठी हो ?'

मा शब्द का माया पर ऐसा असर हुआ वह सब कुछ भूल गयी और पतिली से दूध गिलास मे उड़ेल कर जयदेव के सम्मुख रख दिया।

जयदेव दूध की घूंट को गले से नीचे उतारता हुआ बोला, "मैंने आज दिन तक तुम्हारे को इतनी उदास नहीं देखी।" क्या बात है ?

"बेटे जो देवर जेठ होते है तो वे ईर्ष्या की आग मे जलते रहते है। अब हमे ही देख लो, हम यहा पर आ गये तो अब यूही ताने मारने लग गये।"

जयदेव दूध पीता जा रहा था पर उसके चेहरे पर किसी प्रकार की उदासी नही थी माया को उसके चेहरे से लग रहा था कि जैसे उसने कुछ सुना ही न हो।

सारे दिन माया विस्तार पूर्वक सोचती जा रही थी पर उसके अन्तर तल इच्छा मे आखिर यही होता कि मेरा दूध मुझे धोखा नही दे सकता है।

आखिर रात आई। जयदेव शान्ति से सोया पडा था और माया उसके ऊपर पंखा झुला रही थी। राजाराम ने आवाज दी "माया एक गिलास पानी का देना।"

राजाराम गिलास का पानी खत्म करते ही माया बोली "देखो, आज तुम्हारा धर्म...................."

राजाराम सारी बात सुनकर स्तब्ध रह गया उसका हृदय खिल मिला उठा और बेचनी के साथ बोला, "माया, उसका नाम जयदेव है, फिसलने वाला लड़का नही है, वह समझदार है। जिन्दगी मे कभी गलत कदम नही

उठायेगा दुनिया उसको बोल देगी, तो भी वह तुम को मा मानने से इन्कार नही होगा सारा वाक्य दृढ विश्वास और एक ही साम मे बोल गया फिर विचार करता "भगवान को याद रख उसके घर न्याय है अन्धेर नही है हमारी साथ यह नही होगा जाओ सोओ विचार करने की कोई जरूरत नही है।"

माया तो चली गयी पर राजाराम बोलने मे बोल दिया था, हो सकता है जवान खून है फिसल भी जावे पर है ईश्वर इस पग को अटल मन बनाना वह हाथ जोडकर बोलता जा रहा था "ईश्वर मुझे जैसा गुनी तो, खुशी ही रखना यह नही हो लोग मेरी इज्जत पर अंगुलियां उठावे और तू देखे.................."

\+ \+ \+ \+

पंद्रह

• • •

जयदेव की कार सडक पर भागती जा रही थी। धूप के कारण कोलतार पिघल गया था जहा तहा अधिक पिघल गया था वहा कार के पहिये की साथ लग कर दूर तक फैल जाता था। सडक पर कोई स्थान वाहन न थे पर, शायद सभी अधिक धूप के कारण बन्द थे।

पश्चिम दिशा से धूल भरी आंधी आने की सम्भावनायें बन रही थी। सूर्य के इर्द गिर्द बादल भी छा गये थे। कुछ समय बाद सूर्य की गर्मी तो बन्द हो गई पर धरती से गर्मी बहुत तीव्र वेग से निकल रही थी। हर व्यक्ति पशु-पक्षि तडफडा कर छाया की तलाश मे थे क्योकि धूप का दौर तेजी पर था।

शाम होते-होते जयदेव अपने कमरे का दरवाजा खोला, उसके कमरे की चमकती हुई फर्श पर हल्की सी धूल की पर्त छा गयी थी। जयदेव ने किसी ओर भी ध्यान न दिया और सीधा खिडकी का दरवाजा खोला और तड़फड़ा कर रह गया क्योकि माया की खिडकी बन्द थी।

नील गगन मे धूल के वादल छा गये थे। गर्ज के साथ छीटे गिरा रहे थे और हवा वहुत तेजी पर थी। वादलो के वरसने के कारण धूल तो नीचे आ गयी थी परन्तु वे मौसम की अधिक गर्ज के कारण जयदेव ने खिड़की से देखा कि वादल गर्ज ही रहे थे पर छीटो का गिरना बन्द हो गया था। वह घूमा ही और उसको किसी चीज की ऊपर से गिरने की हाट हुयी, घूमा, देखा, उठाया और खोला।

प्रिय जयदेव,

तुम्हारे पन्द्रह दिन के लम्बे इन्तजार के वाद भी मैं तुम से नही मिल सकती हूं। मैं मजबूर हू, मेरी स्वतन्त्रता वन्द हो गयी है और मेरा घर से वाहर निकलना, पाव पाव का जवाव मागना………।

वैसे मै तुम से जरूर मिलू गी मेरी हर घडी, हर साँस तुम्हारे मिलन के लिऐ तड़फ रही है। चाहे घर वाले मुझे कितना ही बन्द रखे पर मेरी अन्तिम मञ्जिल होगी, तुम्हारा हमारा मिलन।

मुझे मालुम नही मेरे पिता क्या क्या जाल विछा रहे हैं ? मेरे तुम्हारे वीच मे कितने काटे विछा रहे हैं………?

पर मुझे विश्वास है मैं तुम से जरूर मिलू गी…… सारी जिन्दगी तुम्हारी छाया वनकर रहूँगी।

तुम्हारी आश की ………
आशा।

जयदेव विचार मग्न सा हो गया, 'क्या मैं प्रेम के लिये सारी जिन्दगी आसू वहाता रहूगा ? क्या अपना कहने वाला कोई नही मिलेगा मेरे हर प्यारे आदमी के पीछे एक जाल है, मिलन के लिये एक दीवार है और काटों भरा रास्ता है जो पांव पांव मे चुभ कर ऐडी से चोटी तक दर्द के घावो के जैसे खटकते रहते हैं। पर नही ……………… नही …………………… है भगवान ……………… कव तक यह दीवार रहेगी ? कव तक हम दूर रहेगे ? और कव तक गम के आसू आँखें पीती रहेगी। इतने मे दरवाजे पर दस्ती पडी जयदेव कुर्सी पर हल्कासा चौकता सा उछला इधर–उधर देखा तो स्वय के हाथ पाव काप रहे थे झट से तौलिया उठाया और पसिनो से भीगा शरीर पूंछ कर दरवाजा खोला तो सामने लक्ष्मी मुस्कराती वोली, 'अरे इस गर्मी मे दरवाजा वन्द करके गर्मी मे वैठा है।'

जयदेव चाटी खुजाता बोला 'बात ऐसी है फूंपी इतनी दूर गाड़ी चलाने मे मैं थक गया था इसलिये मै आराम के लिये लेट गया।'

'झूठा ...।'

और कोने मे से झाड़ू उठा कर लगाने लगी 'अरे फूंपी तुम क्यो परेशान होती हो ? मै अभी निकाल देता हूँ।

'तू नहा धोकर आ अभी थकान उतर जाती है।'

'अभी जाता हूँ जरा पसीने सुखालूं।'

लक्ष्मी धीरे-धीरे धूल भरी पर्त को हटाती जा रही थी और पीछे चमकती हुयी चिप्स की फर्श नजर आ रही थी।

सारी फर्श की धूल झाड कर एक कोने मे इकट्ठी करदी और मेज से कागज उठाने लगी तो जयदेव पर नजर पडी 'तारा नकर की सी झलक नजर आयी और आश्चर्य से देखती स्तब्ध सी खडी रह गयी पर दूसरे ही क्षण जयदेव तौलिया उठा कर स्नानागार की ओर चला गया।

लक्ष्मी उसके कमरे की हर चीज को चमकाने की कोशिश कर रही थी। वह उनको चमकाने मे इतनी व्यवस्थ हो गयी थी जैसे कि स्वय की चीजें हो।

जयदेव बनियान और चड्डी को सुखाता बोला, 'ओहो ! यह तो सब सुबह करने का कार्य है और आप.........।'

इसके साथ ही लक्ष्मी बोली, 'बेटा बात यह है मेरे से कोई चीज गदी नही देखी जाती है।'

जयदेव मुस्करा के चुप हो गया। लक्ष्मी यह वाक्य तो बोल दी परन्तु उसका मन स्थर न था हर चीज गदी नही देखी जाती पर तेरा मन ......? तेरा मन ......? मेरी मन मे क्या गदगी है ? यही झूठ छल कपट क्या कम है ? भाई की निधी जिस पर तेरा क्या अधिकार है ? पर अधिकार पर ......अधिकार......और कानो मे अगुलिया लगा और पसीने उभर आये।'

जयदेव अखबार पढ़ता बोला, 'फूंपी कान मे दर्द है क्या ?

'नही।'

'फिर इतनी परेशान क्यो होती है।'

'नही तो ।' और सामान को सुनिश्चित जगह पर रखने लगी ।

जयदेव मुस्करा के बोला, 'एक ताली मैं तुम्ही को दे देता जिससे तुझे कोई तकलीफ नही होगी और हर रोज जरासी सफाई मे चल जावेगा । इसी के साथ रैक से निकाल कर ताली लक्ष्मी की फेंक दी ।'

लक्ष्मी चावी को उठाती बोली 'अरे हा, मैं भूल गयी । माँ दादा साहव तो सकुशल हैं न ?'

'हाँ सकुशल हैं ईश्वर की कृपा से ।'

'आयेगे क्या वो भी ?'

'हा, परसो तक आने वाले हैं ।'

'पर देख अव के मुझ से जरूर मिलना कही ऐसा मत करना की जैसे वो आके भी चले जावें और हमे खवर भी न हों ।'

नही नही·······अवके दादा साहव ही नही मा भी आ रही हैं ।'

'सच·······?'

'तो झूठ थोडी ही वोल रहा हूँ ।'

वाहर से किसी ने लक्ष्मी को आवाज दी और मुस्कराती वह व इतना याद रखना मुझ से जरूर मिलाना····देख ·····।'

नही·······नही·······जरूर मिलाऊ गा ।'

× × × ×

जयदेव करवट पर करवट बदलता जा रहा था परन्तु कि यादों की परेशानी के कारण उसकी नीद आखो से दूर थी । पास राजाराम आखें मूंदे पडा था । जिसको कोई परेशानी नही थी शान्ति अपने भविष्य के बारे मे विचार कर रहा था ।

चांद की सफेद चादनी पीली पड गयी थी जैसे कि पाला पड़ के कारण जवान पौधे पीले पड़ जाते हैं । फिर भी रात बड़ी भली प्रतीत हो रही थी ।

आशा ने अपनी मां पर नजर डाली जो गहरी नीद मे सोयी थी । वह अ धेरे मे दवे पाव चलने लगी, कभी कभी सोयी हुई अपनी को भी देख लेती थी ।

अभी वह दो चार कदम भी मुश्किल से उठायी थी कि पैर की ठोकर लगते ही गिलास चिल्ला उठा आशा कापती सी सास बन्द करके दिवार से जा सटी।

कुछ समय उपरान्त गिलास की कम्पन ध्वनी मे परित हो गयी और वह आशा धीरे धीरे पाव बढाने लगी। दरवाजा हल्की सी आवाज के साथ खुला आशा ठीठकते कदम के साथ रुकी पल भर मे सारी स्थिति की जांच की और फिर बाहर आकर रुकी इधर उधर देखी। फिर छूटने कदमो के साथ कदम बढ़े।

गदी गली से मलिन सी करकस सी और फुसफुसाहट मे आवाज आई "जयदेव।

जयदेव ....जयदेव.................."

जयदेव कब का चुपचाप था उसके भी दिल मे अन्धाधुन्ध विचार उठ रहे थे हलकी सी आवाज का आना था और चुपके से उठा राजाराम पर नजर डाली वह शान्ति से लेटा था।

गली से हलकी दुर्गंध उठ रही थी चाँदनी और ठण्डी रात मे उसमे आशा के पाँव पड जाने के कारण दुर्गन्ध और भी तेज हो गयी थी।

चादनी रात मे कीचड साफ नजर आ रहा था। आशा के पैरो तले का कीचड गदा पानी रिश-रिश कर निकल रहा था। मानो ऐसा प्रतीत हो रहा था कि आशा का हृदय खुशी से झूम उठा आखो से नीर उमड पडा, फैला पडा चेहरे पर एक दम गुलाबी रग फैल गया। शरीर मे चचलता कि लहरें दौडने लगी। दोनो की जभ तल्लु से चिपक गयी। हृदय खुशी मे गद-गद हो गया। दोनो बोलना चाहते थे पर न जाने कौनसी शक्ति थी जो उनकी वार्ता को रोके रखी थी।

आखिर दोनो गले से जा मिले एक दूसरे मे समा जाना चाहते थे पर दोनो के मध्य एक सरल दीवार थी जिसके टूटने की कोई आशा न थी। इसके बावजूद भी दोनो गले से जा मिले रहे थे। जो दिन पहाडो की भाँति गुजरते थे वे समारिती। अब नये वादे और नये सिरे से उनका मिलन था।

रात मे आशा अधीर हो उठी हृदय मे इतने दिनो से विचार उठ

रहे थे वे एक साथ फूट पड़े और उन्ही के साथ आँखो का झरना भी तेज गति से झरने लगा।

"मैं विवश हूँ जयदेव .... ,

जयदेव अपने होटो पर सिधी अंगूली रखकर उसके आँसू पोंछता बोला, "मेरे पिता.................,,

"तुम बताओ अब मैं क्या करूँ ?,,

जयदेव फुस फुसफुसाहट मे बोला, "उसका समाधान मिल जायेगा।,,

उसके हृदय मे जयदेव का अधूरा वाक्य गूजने लगा पिता....पिता .... पिता....यह अडिग दीवार है अमिट छाप है।

"जयदेव मैं तुम्हारे ....और जयदेव से प्यार से उसके होटो पर हाथ रखा "अगर तुम नही मिलोगे तो मैं मर जाउँगी।,,

"आशा, धर्य मत खोओ, धर्य खोना जीवन का सब से बडी पराजय है इसीलिए इतनी अधीर न हों मैं और तुम जरूर मिलेगें भगवान के घर देर है पर अन्धेर नही। ' हिम्मत से काम लो दुखो से मत डरो ...एक दिन जरूर आयेगा कि जमाना अपने रूप को वास्तविक रूप मे मानेगा "पर वो दिन आयेगा कब ?,,

जयदेव आशा को समझाता बोला, "देखो आशा, मैं........,,

आशा दृढ शब्दो मे बोली, "जो कार्य करना है झटपट करो और सुनो, "अपन कह, भाग चले और पिता रूपी दिवार में निकल चलें।,,

तुम्हारा कहना किसी हद तक ठीक समझता हूँ, तुम यह जानती हो मैं और तुम दोनो ही नही कमाते हैं। इसलिए भाग कर खायेगें क्या ?,,

मैं इतना लेकर चलूंगी कि अपन दोनो दस साल तक कुछ भी न कमाये तो आराम से खा सकते हैं।,,

आशा के इस विचार से जयदेव के मन मे एक भूचाल सा उठा। एक तो उसकी बेटी ...और उसी का धन नही नही यह नही हो सकता है।

किसी की अमानत बतौर वस्तु को हजम कर जाऊँ। प्यार इतना गंदा थोडा है ? जो आने वाली पिढी के लिए भी एक कलक बन कर सागने आवे बल्कि प्यार तो इस ढग से प्रस्तुत होना चाहिए साफ सुथरा और सुन्दर

आने वालो के लिए एक आदर्श होना चाहिये, पथ प्रदर्शक होना चाहिए जिससे जीवन की प्रत्येक राह पर सफलता ही सफलता नजर आवें। नहीं इतना गदा रूप मैं नही अपनाऊँगा। मैं हर विपत्ति मे आदर्श ढग से लडूँगा।

आशा उसके भावो को देखती बोली, "क्या विचार करने लग गये जयदेव ?

"नही"""नही ' परेशान सा होता बोला।

"इतना गदा रूप मैं नही अपनाऊँगा वैसे मैं कोशिश करूँगा तो मुझे जरूर सफलता मिलेगी। पर यह रूप, तो भयकर है""

और बिल्ली उछल कर किचड मे पटी छिंटे उछल कर आशा पर जा गिरे आशा के मुँह से डर से एक चीख निकली और जयदेव की गर्दन मे हाथ डाल दिये। तुरत बाद ही जयदेव और आशा मुस्करा पडे आशा के हाथ पाँव डर से थर थर से कांपते रहे।

दूर सडक पर पूर्णतः शान्ति थी। सडक के जन्तु भी चीख और चिल्ला न रहे थे। रात बडी शान्ति और तीव्र गति मे गुजरती जा रही थी। वे दोनो इस प्रकार मोन खडे थे जैसे कि अभी अभी उनका आपस मे वार्तालाप ही शुरू हुआ है।

मेरी बात मानो जयदेव""तुम चाहो तो मैं इसी वक्त यहा रह सकती हूँ मुझे दुनिया की लाज, शर्म नही है पर मेरे देव मुझ से यह मत करना मुझे मझदार मे ही छोड दे।""मैं तुम्हारे हाथ की कट पुतली हूँ तुम नचावोगे उसी प्रकार नाचूँगी"""" बस, इतना खयाल रखना मेरी नाव भवर मे फस गयी है""उसे""किनारे पर लगा देना।"

बीच बीच मे वह रुक-रुक कर बोलती जा रही थी उसकी सास फूलने सी लग गयी थी ऐसा मालूम पड रहा था जैसे बहुत से रुपये जमीन पर पडे हो और उठाने मे कुछ तो जमीन पर ही रह जाते हैं योही हाल आशा का था बहुत से विचार एक साथ आ रहे थे उनमे से छाँट कर बोलने मे उसकी भाषा टूट रही थी।

पूर्ण विश्वास और दृढ शब्दो मे जयदेव बोलता हुआ हाथ के हाथ मे वचन बद्ध कर रख दिया, मैं पूर्ण कोशिश करूँगा इसके बाद या तो कोई

मुझे रजा मंदी दे देगा अन्यथा मैं तुम्हारे लिए गलत से भी गलत तरीके अपनाने के लिए तैयार हूँ। पर अच्छा मैं इसी मे समझता हूँ कि माँ-बाप का आशीर्वाद भी हमारी खुशी मे सरिक हो हमारी खुशी भी उन्ही की एक खुशी है।

"पर यह वो समझें जब न।"

"समय सब को समझा देता हैं, जब हमारा तुम्हारा प्यार पक जावेगा को किसी की क्या हिम्मत है हम को एक होने से रोक लेगा।"

आशा को इन सब बातो मे यह प्रतीत हुआ जो कुछ बोल रहा है वह एक सत्य है अपना भला भी इसी मे है कि दोनो की एक राय हो मैं और यह अलग अलग होगें तो कैसे मिल सकते हैं ? विचार धारायें एक हो, समान विचार हो, यह हा कहे तो मुझे भी हाँ बोलू चाहिये वह कार्य गलत ही हो। तर्क वितर्क से क्या लेना देना ? जीवन मे सुख और शान्ति-चाहिये तो तर्क वितर्क मे नही जाना चाहिये।

फिर मुझे और इसे तो जीवन मे एक आदर्श स्थापित करना चाहिये। अनेक प्रकार की विचार धाराओ का अन्त न हो रहा था।

चाँद तारो की माला पहने, मुस्कराता हुआ ढलता जा रहा था। मंद मुस्करान ठण्ठा व मादक पवन धीरे धीरे अपने पाँव पसारते जा रहा था।

गली मे मकान की प्रतिछाया उतर आयी थी आशा उस काली चादर में लिपट गयी थी।

उनके होट सूख गये थे। गालो पर धब्बे पड गये थे। जो खुशी मिलने मे छायी थी उसकी जगह उदासी क्षण प्रतिक्षण जगह लेती जा रही थी। दोनों मोन, नजरो ही नजरो मे एक दूसरे मे समाये हुये थे। दोनो एक दूसरे का हाथ थामे खडे थे। वे इस प्रकार खड़े थे जैसे कोई शक्तिशाली चुम्बक उसके हाथ पांव जकड़ रखे हो।

"अब, जाओ आशा, मैं कल से ही कोशिश करूंगा कि.........।"

जयदेव फिकासा मुस्कराता उसकी ओर मुंह बढ़ा दिया। आशा ने एक बार तो कपलो को नजरो के साथ दूर हटाया। पर क्षण भर पश्चात् कंप कंपाते अधर आशा के अधरो पर जा टिके।

धमनियों में रक्त का सचारण तेज हो गया। गालों में विद्युत की भांति गुलाबी पन छा गया। कुछ मिनटों के लिए दोनों दिल एक हो गए। जो हृदय ये सोले जल रहे थे, वे शान्त हो गये जो नमन्ना थी वह गरम हो गयी।

आशा मुस्कराती फिर बोली, "जरूर......"

"बिल्कुल।"

आशा नजरो मे नजरें मिलाती जयदेव की ओर देखती हुयी, धरी मंदी चाल से, किचड मे पाव जमाती हुयी आगे बढ़ने लगी।

जयदेव मोन, आंखें फाडे उसको जब तक देखता रहा जबतक की आशा उसको एक परिछाया की भांति दिखायी दी।

जयदेव का अ ग अ ग दर्द करने लग गया था उसको नाग्दार्ई नक चलना भी कठिन लग रहा था। उसका सिर बुरी तरह दर्द करने लग गया था वह चाह रहा था दर्द से चीखू परन्तु वह डरता मा दिवार के सहारे धीरे धीरे चलने लगा।

× × × ×

धूल मे एक पिंड कि भाति सूर्य मगर्मी चमक रहा था। गर्द पल पल बाद बढती जा रही थी। सामने देख कर चलना तो बडा मुश्किल था, फिर भी जरूर कार्य वश होगा हवाझोको के धक्के खाते उनके साथ उडे चले जा रहे थे। हर कमरें की फर्श सडक आदि पर एक पर्त जम गयी थी। धूल के कारण वातावरण मे निरशता और भयकरता बढती जा रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे कि जैसलमेर के ठिले उडकर आ जा सारे शहर पर धावा बोल रहे हो।

पेड और पौधे जमीन को छू-छू कर जा रहे थे। जानवरों का तो पेडो पर बैठना ही दुर्लभ हो गया था। उडान भर कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना भी उनके लिए खतरे से कम न था फिर भी रक्षायत वे उड ही रहे थे।

यातायात भी स्तर हो गया था बडे बडे चिम काय पेड़ो के भी गिर निचे हो गये थे और पाव उपर जैसे की व्यायाम वाले।

दीवार से लगी घण्टी बजी किरण दरवाजा खोलती बोली, "किसको........?"

राजाराम देवदास जी है ?

"है, मैं अभी भेजती हूँ।"

राजाराम विचार मान सा हो गया उसकी दृष्टी पेड पर गयी। जिसमे फूल डालिया और काटो से भरा पडा था। पत्तो का नाम निशान भी न था। वडे ही प्यारे फूल खिल रहे थे। जो फूल हवा के धक्के सह नहीं सकता था वह भी टूट टूट कर निचे गिर रहे थे।

राजाराम सरसरी निगाहो से देखता हुआ घूमा ही "आइये अन्दर आइये।"

और धूल झाडता वोला, "आँधी ने तो वडी वुरी हालत कर दी है सारे धूल ही धूल फैला दी है।"

राजाराम हाँ मे हाँ भरता वोला, " हाँ, हाँ सब ही गति हीन पड़े हैं।

देवदास फिकासा मुस्कराता वोला, "तसरिफ रखीये।"

दोनो कुछ समय तक गुम सुम वैठ गये आखिर कुछ समय वाद तो मौन को तोडे और राजनितिक पर देवदास वोला सरकार को जाने क्या हो गया है जव देखो जव अमीर अमीर। जव वे जानते हैं, हर इलेक्सन मे अमीरो के सामने ही हाथ फैलाना है। सब से बडी मूर्खता हैं इसके वावजूद भी उनकी नजरो मे अमीर ही रहते हैं।"

"सरकार तो सब वडी वेवकूफ है, वह नही समझ सकती है, उनके पास लाख रूपया है। न जाने उनके व्यापार मे कव नुकसान हो जावे और कव खकपति वन जावे। भाग्य है भाग्य कौन छीन सकता है।"

"विल्कुल......विल्कुल।"

हँसते मुस्कराते कुछ समय तक इधर उधर की बातें करते रहे।

देवदास के मन मे प्रश्न उभारी मार रहा था कौन ? कैसे आया है? क्या कार्य है। "वह प्रश्नो को दवाये हुये था।

धूल जालियो से छन–छनकर हाल मे जमा होती जा रही थी। जो पर्त हल्की थी वह गहरी होती जा रही थी। अन्धेरा वढता जा रहा था। राजाराम एक क्षण विचार करता वोला, "मैं सोचता हूँ वोलूँ या न वोलूँ प्रश्न रह रह कर उठ रहा है।"

देवदास शंका का समाधान करता बोला "नही शंका किस चीज की बोलिये ?"

"मैं आपकी बेटी का हाथ मांगने आया हूं ।"

देवदास फिका सा मुस्कराता बोला, "लडकी..................लडकी का हाथ तो किसी को देना ही है, मैं सोचता हू कि अच्छा घर हो, अच्छा लडका भी तो हो ।"

"हा, यह बात तो है ही ।"

कुछ क्षण तक दोनो चुप रहे ।

"क्या कार्य करता है लडका ?"

"मैडिकल कॉलिज मे पढता है ।"

"कहा का है ?"

"यही गाव का है एक छोटे से सेठ का लडका है ।"

"आप लडके के क्या लगते है ?"

"एक हितैषी ।"

देवदास फिकासा मुस्कराके बोला, "देखो बुरा न मानना मेरी लडकी का एक जगह से और भी रिश्ता आया हुआ है और मैं समझता हूँ जो रिश्ता आपने बताया हैं उससे कही अच्छा है । और इतना धन है वह सारी जिन्दगी बैठी खार्ये तो भी खत्म होने की कोई सभावना नही है ।"

राजाराम उसका उत्तर सुनकर गम्भीर हो गया और बोला, "अगर मेरे भाई की लडकी और लडका एक मत हो तो ।"

देवदास जोर का ठहाका मारा सारा कमरा गूंज उठा । राजाराम आखे फेरे उसकी ओर देखा जो ही.................. कर रहा था । वह सोचा पागल तो नही हो गया, या जान पहचान कर ही मेरा परिहास उड़ा रहा है । पर अभी तो 'सभ्यता के साथ पेश आ रहा था । कही इसके दौरे तो नही पड रहे है । हो सकता है कोई बीमारी हो ' लगता है मुझे आप आछे आदमी नजर आते हैं जवानी मे तो हर आदमी फिसल जाता है और यह फिसल गयी तो कोई बात नही आखिर बेटी के नाते मेरा भी तो उस पर अधिकार है इसलिए उसके चाहने से कुछ नही..................।"

"कभी कभी जवानी भी तो दिवानी बन जाती है इसलिए......"

"फालतू की बातें नही ।"

राजाराम को इतना क्रोध आया की इसके झापट मार दू और इस को कान पकड कर बताये कि अब तेरी बेटी तेरे अकुश मे नही हैं तू कितना भी अधिकार या कानून का हाथ पकड कर बैठ जा वह तेरे हाथ आने वाली नही है । पर सारे क्रोध को घूंट पीकर रह गया और थूक निगलता उठ खडा हुआ और बोला "धन्यवाद आप पैसे से अधिक प्यार करते है न की ....।"

देवदास बीच ही मे बोला, "आप तो पत्थर से प्यार करते है ।"

राजाराम को अपनी बे इज्जती नजर आती देखी तो वह निश्चिय किया कि मेरा अब यहा एक मिनट भी रुकना सारी इज्जत को धूल मे मिलाना है । इसलिए वह चुपचाप हाल से बाहर हो गया ।

देवदास व्यंग के शब्दो मे बुद बुदाया, "अगर इनको पैसो से प्यार न होता तो इस करोड पति के पास क्यो आते ?" और जोर से दरवाजा बन्द कर दिया ।

+ + + +

सोलह

• • •

आसमान पर सूरज ऐसे लग रहा था जैसे रात मे चांद, गर्द के कारण रोशनी हीन हो गयी हो उसकी साफ रोशनी पृथ्वी तक नही पहुँच रही थी । फिर भी मैली चादनी से कम न थी ।

जयदेव उदास, खामोश, तेज वाहिनी की भांति सोचता जा रहा था पर समाधान का कही नामों निशान न मिल रहा था । वह प्यार.........प्यार और प्यार की धाराओ से ही निकल नही पा रहा था । आगे पीछे की यादो मे ही उसकी वाहिनी चक्कर काट रही थी ।

राजाराम कुर्सी पर बैठता बोला, "यहां रहने का विचार है या मेरे संग ?"

जयदेव प्रश्न ही नही समझ पाया इसलिए वह बोला "हैं ......"

राजाराम उसकी हालत को देख कर हल्का सा मुस्कराया और बोला हूं ....क्यो ?

इस बार जयदेव सतर्क हो गया था इसलिए वह बोला, "मैं समझा नही।"

राजाराम ने दुबारा प्रश्न दोहराया तब जयदेव ने उसका उत्तर दिया, "एक जरूरी कार्य है, इसलिए मुझे एक दो दिन यही रुकना है।

"मुझे बता सकते हो रुकने का प्रयोजन ?" जयदेव राजाराम की ओर एक टक देखने लगा जैसे की राजाराम के विचार पढ रहा हो। फिर विचार करता, सकोच की दृष्टि से देखता बोला, "अगर आप न डाटे तो ?"
"निसकोच.... ....।"

जयदेव झिझकता बोला, "मैं .... "एक...................लड़की से ....प्यार.... ....।" इसी के मध्य राजाराम बोल पड़ा "मैं उसके पिता से मिलकर आ रहा हूं जिसके पिता का नाम देवदास है। जिसका यह पास वाला गुलाबी मकान है ?"

जयदेव आश्चर्य युक्त की नजरो से राजाराम की ओर देखने लगा 'यह सब ....'

राजाराज मुस्कराता बोला, "इस प्रकार क्या देख रहे हो मुझे तुम्हारी आदि से अन्त तक सब बातें मालूम हैं।"

जयदेव की पलके नीची हो गयी, हल्की शर्म के साथ नाखून काटने लगा और जयदेव राजाराम की नजरो से हल्की सी नजरें चुराने लगा।

राजाराम को जयदेव ने कोई जवाब नही दिया, तो बोला, 'अगर तुम फिर भी कोशिश करना चाहो तो कर सकते हो मैंने मेरी ओर से पूरी कोशिश कर ली है। वैसे मुझे कोई सफलता के आसार नजर नही आते हैं फिर भी मैं तुम को किसी प्रकार की मनादी नही करता, इतना जरूर कहूंगा किसी की लडकी को भगा कर मत लाना और ....।"

"वैसे तुम स्वय पढ़े लिखे हो, समझदार हो, मुझे आशा है तुम गलत कदम नही उठाओगे।"

कुछ समय तक दोनो चुप चाप बैठे रहे। राजाराम मौन को तोडता,

बोला, "और कोई कार्य हो तो बोल दो, (मेरे पिता रुपी दीवार............?)

"इस प्रकार के प्रश्न करना बेकार है। जिस प्रकार तुम उदास खोये हुये बैठे हो मैं तुम्हारी, यह उदासी नही देख सकता हू। इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी साथ चलोगे तो खुश रहोगे क्योकि जवानी है जवानी मे फिसलना कोई बडी बात नही है तुम कही अनुचित कदम उठा लो तो बहुत बुरा हो सकता है।"

"इस पर मैं विचार करूंगा।"

"हां, विचार कर लो अभी तो बहुत समय है।"

जयदेव कुर्सी से उठता बोला, "यहा भी मकान मालिकन तो आपसे मिलना चाहती है इसलिए मैं.. ....।"

"हा ....हा.......जरूर जरूर..................।"

हवा के नाम पर पत्ता भी नही हिल रहा था धूल गगन मे इतनी अधिक हो गयी थी कि सूर्य की जो रोशन, मैली चांदनी के समान थी वह भी लुप्त हो गयी थी। सम्पूर्ण व्योम ऐसा लग रहा था जैसे की पीली मिट्टी से लिपाई कर दी गयी हो। बादलो का कही नामो निशान भी नही था वे तो आसमान पर से इस प्रकार गायब थे जैसे गधे के सिर से सीग। वर्षा का स्थान तो धूल ने ले लिया था धूल वर्षा की भाति धीरे धीरे गिर रही थी। सारे भू तल पर सुहावनी बालू रेत के कणो की एक पर्त जम गयी थी।

जयदेव बालू रेत पर पद चिन्ह छोडता हुआ लक्ष्मी की देहली पर पाँव रखा और बोली, "आओ बेटे कैसे आये ?"

दादा साहब आये हुये हैं अगर आप बात करना चाहो तो कर सकती हो।

"नीचे है ?"

"हा ....।"

लक्ष्मी कुछ समय तक विचारी और फिर तेजी से कदम उठाती रामायण की पुस्तक मे से एक फोटो निकाली जैसे ही कमरे का पर्दा हिला राजाराम तेजी से उठता बोला, 'नमस्ते बैठिये................कुशल तो है आप ?"

"जी, ईश्वर की कृपा से फिल हाल बिल्कुल ठीक हू" लक्ष्मी कुछ देर तक इधर उधर खोजती नजरो से देखती रही फिर हवा का एक धक्का सा लगा और पीछे देखी पर कुछ भी नजर नही आया। आखिर अपनी शंका का समाधान करती वह बोल ही पडी, "जयदेव तो बोलता था मा भी आवेगी ?"

राजाराम फिका सा मुस्कराता बोला, 'हा, आने के लिए तो उसने जिद्द की थी। मैं ही छोड आया घर पर भी रहना एक को जरूरी है।"

"आप आज ही वापस जा रहे है ?"

"देखो, पक्का विचार नही।"

लक्ष्मी विचार करती। बोलू या नही···· ········ नही बोल दू कुछ तसल्ली मिल जावेगी।

तीव्र हवा का झोका आया और चौक मे जो बालू मिट्टी अभी तक हवा न होने के कारण एक साफ सतह बन गयी थी वह उखड कर एक मोटी पर्त मे बदल गयी और चम चमाती फर्श निकल आयी।

"क्या आप मुझे एक बात सच सच बता सकते है ?"

राजाराम कुछ गम्भीर होता बोला, "बोलिये।"

"जयदेव आप ही का लडका है ?"

"आप किसका समझती है ?"

लक्ष्मी के हृदय मे यह प्रश्न चुभता चला गया जैसे को तीर, उनके शरीर के सारे तार झन झना उठे मुंह पर हवाइया उडने लगी पर तुरन्त ही सारी परिस्थिति पर काबू पाती हृदय को दृढ बनाती बोली, "देखिये इसकी सूरत हू बहू मेरी मेरे भाई से मिलती जुलती है।"

राजाराम तस्वीर को एक क्षण तक देखा और वापस करता बोला "आज मैं जा रहा था तब मेरे दोस्त को आवाज दी वह रुका नही। जब मैं उसके बराबर मे जाकर कन्धे पर मारी और वह घूम कर देखा तो मैं भी चक्कर खा गया मेरे दोस्त की शक्ल सूरत उनसे बहुत मिलती जुलती थी जैसे की आपकी तस्वीर················

"मैं तो आपसे पूछ रही हू बहस थोड़ी ही कर रही हूं।"

"इसके पीछे आपको प्रमाण देना होगा वास्तव में सच क्या है और झूठ क्या है ?"

तो सुनो मैं आपको एक कहानी सुनाती हूं सुनो :—

आज के बाईस साल पहले की बात है मेरे भाई (तार शंकर) के पुत्र जन्मे अभी दस ही रोज हुये थे। उसके नाम करण सस्कार के लिए यज्ञ वेदी पर बैठे थे। अभी कुछ समय ही हुआ था कि पंडित ने तिलो की आहुतो दी हल्का सा विस्फोट हुआ और भाभी की साडी पर उछल कर आग गिरी ...... भाभी खत्म हो गयी भाई उसके गम मे खत्म हो गया।

मेरे भाई के पास रुपये पैसो की कमी न थी अच्छा नामी सेठ था हमारे पास भी अभाव तो न था पर इतने अधिक न थे जितने मेरे भाई के पास और मेरे पति को मनुष्य से अधिक पैसो से प्यार था।

सुहावनी रात थी, चांदनी का अभाव न था बिजली का प्रकाश खिड़कियो से होता लान मे गिर रहा था लक्ष्मी, लक्ष्मणसिह की जाघ पर सिर रख रखा था और लक्ष्मणसिह भीना भीना मुस्कराता उसके बालो को उलट पुलट सा कर रहा था। जैसे ही लक्ष्मणसिह का हाथ उसके शरीर से छूता और विद्युत की भाति तरगे सारे शरीर मे तरगें फैल जाती।

लक्ष्मणसिह अपनी जेब से गुलाब का फूल निकाल कर लक्ष्मी के जूड़े मे लगा दिया और बोला, "देखो अब तुम्हारी सुन्दरता में कितना निखार आ गया है।"

लक्ष्मी अपनी तारीफ सुन कर उठने लगी तो पास सोये हुये बच्चे ने उसकी साडी मे पिशाब कर दिया। गिली साडी को झाड़ती सी, हल्की सी नफरत के साथ बुद बुदायी, "कैसा बच्चा है··· ···········?"

लक्ष्मणसिह लक्ष्मी की नफरत को भांपता बोला, "तुम बोलो तो कर दें इसकी छुट्टी।" लक्ष्मी साडी बदलती "विचार तो अच्छा है।"

लक्ष्मणसिह अपने विचार पर फिका सा मुस्कराया पर देखा जावे तो जवानी जवानी ही होती है हर आदमी जवानी में सब कुछ भूल जाता है मां बेटे को जब पहचानती हैं जब वह प्रसव की पीड़ा मे तडफती है।

लक्ष्मी मुस्कराती हुयी ज्यो ही लक्ष्मणसिह के सामने गई लक्ष्मणसिह दोनो हाथो से उसके कपोलो को थप थपा दिया हल्की सिहरन के साथ

आँखों मे एक नशा सा उतर आया और दोनो हाथ मे हाथ डाले दूसरे कमरे मे चले ।

बच्चा जोर जोर से रोने लगा रोने मे वह मात भी भूल जाता था । उनका उस पर कोई खयाल नही था । वे तो क्षणिक आनन्द मे डूबे थे उनके लिए वो सुख था जिसके लिए शायद वह स्वर्ग के सुख को भी तुच्छ समझते हो ।

चाँद उस गरीब जनता का परिहास कर रहा था । जो यौवन मे आग भर रहा था ठण्डी-मीठी और मद हवा उस आग को सुलगा रही थी । दोनो मस्त अलिगन बद्ध पडे थे ।

बच्चे के अधिक देर रोने के कारण उसकी आवाज भर्राने लग गयी थी , और उसकी चीख दर्द के साथ निकल रही थी । जो ऐसी थी जिनका पत्थर सा दिल हो उसे भी बेधती चली जावे ।

आखिर मस्ती का दौर टूटा लक्ष्मी ने उसे गले से लगा लिया । वह चुप तो हो गया पर रोने की हिचकिया लगातार उभर रही थी ।

लक्ष्मण सिह शीशी मे एक पाउडर डाल कर लक्ष्मी की ओर बढा दिया ।

क्या है इसमे ?'

यह जानवर तुम्हारे पास जो है....और हम दोनो के बीच मे....'

लक्ष्मी शीशी के दूध को हिलाती बोली, 'मेरे समझ मे नही आता कि...'

बीच ही मे लक्ष्मणसिह बोला कुछ नही, सारी जायदाद का मालिक यह बनेगा और इसकी सेवा भी हम कर रहे है और हम ही को निकाल देगा । सोचो........ ....।'

'कुछ नही मेरे भाई की एक मात्र निधि है मैं इसको पालूगी । पता हो गया अपन इसको बडा करेंगे तो जब तक इतनी जायदाद लायेंगे भी ।' लक्ष्मी के दृढ वाक्य के सामने लक्ष्मण सकपका गया । हाथ से शीशी छूट कर नाले के पास जा गिरी और दूध नली मे चला गया ।

दूसरे रोज तूफानी रात थी । तेज वर्षा पड रही थी । लक्ष्मणसिंह बिजली के प्रकाश मे बच्चे को देखा जो सुख दुख , छल कपट, और पाप और पुण्य से परे निश्चिन्त था । बिजलियो की चकाचौंध और बादलो की गर्जना से पृथ्वी भी कापती सी नजर आरही थी ।

लक्ष्मण सिंह लक्ष्मी की ओर ललचाई हुई निगाहों से देखता बोला, 'क्यो किस सोच मे डूबी हो ?'

'नही तो………।'

'लेकिन, आज तुम जरूर परेशान नजर आ रही हो ।'

'आज सारा दिन हो गया इसको हिलाते हिलाते पर, अब जकर आया है । 'मेरी बात मानो देखो तूफानी रात है…………मैने ऐसा रास्ता ढूढा है, सांप भी मर जावे और लाठी भी न टूटे ।'

वर्षा बेधडक पड़ रही थी । बिजलियां अपना नृत्य दिखा रही थीं । बादल गर्ज-गर्ज कर सहनाइया बजा रहे थे ।

लक्ष्मण सिंह इधर उधर की गप्प और लक्ष्मी को फायदा ही फायदा बता कर फुसला लिया ।

जिन्दे शिशु का क्लोरो फार्म सुंघा कर, मृत घोषित कर दिया गया । अब उसका हिलना डुलना बन्द हो गया था ।

लक्ष्मी का हृदय पत्थर बन गया था जो कल तक भाई की अमानत समझती थी आज उसी को स्वयभू समझ रही थी । जो बच्चे के पालन पोषण का ध्यान रखना चाहती थी आज पीछे हट गयी थी ।

लक्ष्मणसिंह बरसाती पहन कर लकडी का बक्स उठा कर निकल गया , रात का गहरा अन्धकार बढ़ गया था । जिधर नजर जाती उधर पानी ही पानी नजर आ रहा था । लक्ष्मण सिंह भी खुश था क्योकि आज के पाव के तले भी रुपये पैसो की स्वतन्त्र गंगा बह रही थी ।

वह उस लकडी के बक्स को पहाड़ी नाले मे गिरा दिया और तेज गति के साथ पहाडी नाला बहता, पत्थरो के लतड़े मारता उसको अपने सग ले जा रहा था ।

\+ \+ \+ \+

जवानी गुजर गयी बेटी-बेटो के मा-बाप बन गये । दिवाना पन उतर गया । पाप और पुण्य का मतलब समझने लग गये । जवानी की हर गलती का प्रायश्चित करने लग गये ।

बहुत ठण्ड थी । कुहरा इतना घना था कि हाथ से हाथ सुझाई नही देता था । लक्ष्मणसिंह कुछ जरूरी कारणवश कुहरा मे निकल गया ।

कार की बत्ती का प्रकाश एक दो फुट से आगे न जाकर कुहरे में ही अटक जाता था। कार धीरे धीरे चलती आगे बढ़ रही थी। सड़क पर कोई नजर नहीं आता था। जन जीवन ठप्प हो गया था।

सर्दी की अधिकता के कारण वह बदन से कोट को भी बार बार चिपका रहा था अचानक जाने उसके दिल मे कौन से विचारो का दौरा पडा ? कि लक्ष्मण सिंह की कार संतुलन खो बैठी वह सम्भालने का बार प्रयत्न किया कि वह न सम्भल सका। खम्भे से टकराने भर की देर थी कि शिशा चूर चूर हो गया। कांच के टुकडे उसके शरीर में जगह जगह पार हो गये। यहाँ तक कि उसकी एक आंख मे भी चला गया।

सारा शरीर खून से लथपथ हो गया। सर्दी के कारण खून निकलते ही बर्फ हो जाता था। वह दर्द मे कराह रहा था पर उसकी आवाज उस कुहरे मे दब कर रह जाती थी। कुछ समय छटपटा कर बेहोश हो गया।

दिन के बारह बजे। कुहरा पहले से कम हो गया। लक्ष्मी का दिल बेचैन था पर फिर भी स्वटर पर तेजी से हाथ चल रहा था। पास रखा फोन की घण्टी बजी।

'हलो !........?'

दूसरे ही क्षण आवाज कान के पर्दो से टकराई और हाथ की सलाइया फर्श पर आ गिरी। सलाइयो मे हलकी कम्पन हो रही थी ऊन का गठ्ठा लुडक कर एक कोने मे जा लगा था उसके सामने आधा स्वटर पडा था।

वह अपना सिर पकड कर जगह की जगह बैठ गयी। उसके शरीर में एक भू-चाल सा आ गया था। उसके सोचने समझने की सारी शक्ति क्षीण हो गयी थी।

तिखी और ठण्डी हवा सरो की भांति शरीर में चुभती चली जा रही थी उसके हाथ-पाव सर्दी के कारण थर थर काप ले रहे थे।

आखिर कुछ हिम्मत के साथ उठी और कुछ कपड़े पहने। कोई विचार और झटपट होस्पिटल में प्रवेश हुई। सूखे होटो की पपडी को जीभ फेर कर गिली करते हुए कमरे में पाव रखा और आंखो के सामने न

हास्पिटल घूमने लगा और पल भर पश्चात वह अस्तित्व हीन होती फर्श पर गिरने लगी परन्तु पास खडी नर्स ने हाथ का सहारा दे दिया।

कोहरा कम हो गया था। जरूरत की वस्तुओ का आदान प्रदान होने लग गया था पर ठण्डो हवा पहले से अधिक ठण्डी चलने लग गयी थी।

लक्ष्मी पूर्णतः होस में थी। उसकी आंखो के कुछ फासले पर लक्ष्मणसिह दवाइयो की पट्टियो से लिपटा पूर्णतः बेहोश पडा था।

कुछ समय उपरान्त लक्ष्मण सिह को हल्कासा होस आया पास ही नर्स ने दवा पिलादी और डाक्टर ने आकर उसके इन्जक्सन लगा दिया। जो गति उसके शरीर मे सचारण हुयी थी वह वापस गति हीन हो गया।

डाक्टर समय समय के उपरान्त आता और देखते ही उसके ललाट पर चिन्ता की गहरी रेखायें खिचती जाती थी।

लक्ष्मी बाहर निकलते डाक्टर से बोली 'तबियत तो...... ।'

डाक्टर, बोला 'कोशिश है चिता की कोई बात नहीं फिर भी अभी खतरा अधिक है।'

डाक्टर के मु ह से साफ जाहिर था कि बचने की कोई उम्मिद नही है मैं भरसक प्रयत्न पर हूँ फिर भी सफलता के कोई लक्षण दिखाई नही देते। पर डाक्टर, तो अन्तिम सास तक भी चली जाती है तब भी नही बोलता है कि खत्म हो गया।

खिड़कियो से ऐसा नजर आ रहा था जैसे कि सारे बर्फ ही बर्फ के पर्वत खड़े हो गये हो। लक्ष्मी मोटा कम्बल ओढे बैठी थी फिर भी तिक्ष्ण हवा की धार उसके शरीर मे चुभती चली जा रही थी।

कुहरा अधिक बढता जा रहा था। अचानक नर्स आकर बोली, आप को याद फर्माते हैं और लक्ष्मी उठ खड़ी हो गयी।

लक्ष्मण सिह आंखें खोली और बोला लक्ष्मी..................?

लक्ष्मी का हृदय प्रेम से भर आया। आखो की पुतलिया डबडबा आयी और लक्ष्मणसिह के हाथ मे अपना हाथ थमा दिया।

लक्ष्मण सिंह लक्ष्मी की ओर देखा और फिकासा मुस्कराता बोला, जीना बहुत मुश्किल है।"

"नही यह नही ".............।'

लक्ष्मण सिंह दर्द मे चुप हो गया था परन्तु उसकी सांस की गति टूट टूट कर चलने लग गयी थी।

"लक्ष्मी, मेरा तुम्हारा अन्तिम मिलन है। मैंने अपनी जिन्दगी में कोई गलत कार्य नही किया। सिर्फ.......मैंने तारा शकर का नाम.......इस पृथ्वी पर से.......खत्म किया.......फिर भी.......मुझे आशा.......एक... रोज......जरूर.......आयेगा...उसकी.......पूरी....जा....य... जा.......द ......वा......प.......अ.......क.......र.......दे.......ना.......ह.......स ....का.......मु....झे ...व....च......."

इन्ही शब्दो के साथ लक्ष्मण सिंह का हाथ चारपाई के निचे लटक गया।

लक्ष्मी के मुंह से जोर से चीख निकली।

"मेरे राम ....।" और फर्श पर जा गिरी

"अब मुझे बताईये, आपको क्या अन्दाज लगा ?"

कुछ समय राजाराम विचार करने लग गया। वास्तव मे सच क्या है और झूठ क्या ? वह इसका समाधन सोच ही रहा था कि इससे पहले जयदेव बोल पडा, "क्या तुम मेरे बुढे मा-बाप का सहारा है वो भी छुड़वाना चाहती हो ?

उस मा को छुड़वाना चाहती हो जिस मां का मैंने स्तन पान किया .... 'मुझे दुख इस बात है तुम अपने एक मात्र भतीजे को भी नही पाल सकी ।"

लक्ष्मी आखें भर आई, दिल का दर्द बाहर आने लगा मुझे तुम सब कुछ भी बोल सकते हो.......आखो के आसू पोंछ कर बोली, "पर मै यह जानना चाहती हूं वास्तविक बात क्या है ?"

राजाराम लक्ष्मी की बात सुन कर बोला, "वास्तविक बात यही है कि मैंने इसका पालन पोषण किया है पर मेरा जीवन।

जयदेव क्रोध मे सब कुछ भूल गया मुझे क्या बोलना चाहिये क्या नही ? इसका क्या प्रश्न है और क्या उत्तर देना चाहिये ?

आपे से बाहर होता बोला, 'क्या आप अब भी मेरे घर में आग लगाना चाहती हो। जिस........।'

इसके मध्य ही लक्ष्मी बोली, 'नहीं, मैं अब यह जायदाद तुम्हारे नाम कर देना चाहती हूँ।'

'मेरे पिता के पास कई गुना जायदाद है यह तो यूं समझिये इनके हाथ का मैल है। मुझे इसकी कोई जरूरत नही है।'

'कुछ भी हो जयदेव, तुम रहो इन्ही के पास क्योकि जन्म देने वाली माँ से बड़ी पालन पोषण करने वाली माँ हैं। जो हमारे पास अमानत के तौर पर अब तक रखी है उसे मैं वापस कर देना चाहती हूं जिससे कई दिनो से मेरी आत्मा विचलित सी हो रही है उसे मैं शान्त करना चाहती हूं।'

'हमें ऐसी चीज की जरूरत नही हैं जो हमेशा ही मेरे भविष्य मे एक दीवार बन कर खडी हो जावे।' इसी के साथ जयदेव अपना सामान बाधने लगा।

लक्ष्मी शान्त चित्त से सब कुछ देख रही थीं परन्तु उसके कार्य मे किसी प्रकार की दखल नही पहुंचा रही थी।

हाँ उसका कोई दोष नही था यह सब माया के स्तन पान का एक नशा था जिसकी वजह से जयदेव सब कुछ बोल रहा था।

\+ \+ \+ \+

सत्रह

• • •

'माँ....ओ माँ।'

जयदेव ने माँ के पांव छुऐ और गले से मिल गया। माया के हृदय मे ममता का सागर हिलोरे भर रहा था जिसकी यादगार की लहरो में जयदेव तैर रहा था।

माया की चौक मे दृष्टि पड़ते ही, 'अरे! कमरा खाली कर दिया।'

'हा हां तेरी याद अधिक सताती है इसलिए.......।'

'बटा अच्छा किया।' और जयदेव का माथा चूम लिया।

आज भी राजाराम और माया उतने ही खुश थे जितने की राजाराम और माया को जयदेव एक बच्चे के रूप मे मिला था। अब वह घुल मिलकर उन्ही का एक अंग बन गया था।

\+ \+ \+ \+

देवदास आशा की गति विधियों से परेशान होकर बम्बई के मकान मे चला गया।

सारा शहर दीपावली बने जगमगा रहा था जिसमे की बम्बई दुल्हन बने खडी थी। जिसमे न सर्दी थी न गर्मी ऐसे मौसम मे आशा का सारा शरीर दर्द कर रहा था। वह हृदय की पीडा से जल रही थी।

उसके मुँह पर पीले पन का लेप हो गया था उसकी चाल में मस्ती खतम हो गयी थी। आँखो की चंचलता चली गयी थी गालो पर काजल के धब्बे ही धब्बे लग गये थे। खिडकी से मस्ति भरा पवन आरहा था परन्तु वह चारपाई पर पडी पडी तडफ रही थी। उसकी हिम्मत, उसके माँ बाप के सामने क्षीण हो गयी थी। उसकी सारी योजनाऐ हवा मे झूल जाती थी।

किरण मुस्कराती बोली, 'क्या सारे दिन पडी पडी रहती हो। लो दूध लो। आशा चारपाई से उठती बोली, 'अच्छा नही लगता है, अम्मा।'

'जब मैं तेरी जितनी थी जो जाने कितने गिलो दूध गले मे नीचे उतार जाती थी पर तू जरा जरा सा दूध के लिए नहीं नही करती है मेरी तो समझ से बाहर है कि जाने तुझे क्या हो गया है?'

आशा को एक साथ भली बुरी कहने के पश्चात् विवशता के साथ दूध का गिलास पकड लिया और धीरे धीरे दूध गले से नीचे उतारने लगी।

किरण विजय की छाती फुलाती आशा के सिर पर हाथ फेरा और प्यार भरी नजरो से देख कर उसके सामने कुर्सी पर बैठ गयी 'क्यो, घूमने का विचार है जब तो करवाऊं गाडी तैयार?'

'नही, अम्मा।'

'फिल्म देखोगी?'

'नही ।'

'अरे ! हाँ ! आजकल थियटर मे रूस का जादूगर आया है शायद तेरे पिता ने उसकी सीट भी बुक करवाली है ।'

'मुझे कही नही जाना है अम्मा मुझे अपने......।'

किरण की नजर खिड़की मे होती सड़क पर पहुची तो कार एक के पीछे एक चली जा रही थी । अगर एक कार भी चूक जावे तो सब.... ...।'

अगर आशा हाथ से निकल गयी तो न जाने कितनी लडकियां....। कितनी लडकियां क्यो ? इसकी छोटी बहन भी तो है ।'

खिडकी से तीव्र वेग के साथ हवा का झोका आया और आशा को बहुत बुरा लगा और बैठी बैठी ही खिडकी के एक धक्का मारा । और किरण की नजरें टूट कर आशा पर आ जमी ।

'तुम इस प्रकार क्यो खोयी हो ?'

'........................।'

आशा ने कोई जवाब नही दिया ।

सिर्फ एक लडके के लिये ? मैं उसको एक करोड पति कहूँगी जिसके मकान मे सोने के खम्भे भी हों । पर तुम.............।'

इस पर भी आशा ने कोई जवाब नही दिया और खाली गिलास रख कर लेट गयी ।

'पर देखो आशा', तुम उदास रहती हो मेरा दिल नही मानता है तुम्हारी खुशी मे ही तो हमारी खुशी है । माँ-बाप क्यो बनाये गये हैं ? इसलिए कि बेटे-बेटी जवानी मे कदम कदम पर फिसलता है उनको राय दें और सही मार्ग पर चलावें और हम भी तो यही कोशिश करते हैं हमारी सन्तान हो उनमे अच्छे लक्षण हो ।'

'........................।'

आशा ने इस बार भी कोई जवाब नही दिया और अपने ही विचारो में डूबी रही ।

'रही लड़के की बात वह तुम्हारे वाले से कई गुना अच्छा होगा ।'

'मुझे अच्छा बुरा से मतलब नही मुझे सिर्फ जयदेव से प्यार है और किसी से नही जब तक वह नही मिल जाता........'

'आशा ....।' किरण गिलास उठाये आवाक् सी खड़ी थी यह सोची। क्या है उत्तर आशा का है ? पर उसकी जबान तो कभी खुली न थी यह आशा नहीं है तो कौन है ? आदमी कब तक अपनी इच्छाओं का दमन करेगा ? आखिर बोलेगा वही। पर मेरी आशा तो ऐसी न थी। उसका माथा भन्ना सा गया। ठीक है परिस्थितियां ही बदल जाती हैं सो अब.......... ....।'

किरण क्रोध की नजरों से आशा को जलाने लगी। पर वह तो स्वयं ही जली हुई बैठी थी जिसमें तो अब सिर्फ राख थी। अगर उठाने वाले ने सावधान होकर न उठाया तो वह चूर चूर होकर हवा में उड़ जावेगी।

रजनी अपने सुहावने सफर पर उतर रही थी। देवदास अपनी ही धुन में सिग्रेट के कस छोड़ रहा था। देवदास किरण को उदास सी देखकर बोलता इससे पहले किरण बोली, "आशा के लिए कहीं लड़का ढूंढा।"

"हां; दो लड़के हैं दोनों ही करोड़ पतियों के हैं एक मुझे अधिक पसंद है क्योंकि वह अधिक पढ़ा लिखा भी है।" किरण लपाक से बोली, "तो फिर रिश्ता कर लो।"

'बात एक है वो इस शहर के नहीं है।"

"यहां वहां से क्या लेना देना ? पर उस शरीफ की भोली में तो अच्छा है या ... "जहां पैसों का सवाल है उसमें तो यूं ही समझो आशा देश की मालिक होगी।" किरण प्रफुल्ल हो उठी, "बात यह ही है, तो देर किस बात की ?"

'आशा से भी तो मालूम करें।"

"उसने तो आज साफ शब्दों में बोल दिया है मैं चाहती हूं जरनैल ....।"

आश्चर्य से देवदास "क्या ?"

"हां सच बोल रही हूं।"

और किरण कुर्सी से उछल पड़ी देवदास का ध्यान जलती सिग्रेट पर गया और देवदास अपने जूते की नोक से उसके टुकड़े टुकड़े करके अस्तित्वहीन कर दिया।

दोनो के मध्य कुछ समय तक शान्ति छा गयी। यह आशा का स्वप्न पूरा नही हो सकता है। मैं नही दूंगा मेरी बेटी को जो सारी जिन्दगी धूल डाल छानती फिरे। और उसका ……………पसंद,………………कौन, क्या कर सकता है? जिसका मन मिठी द्राडिम मे न होकर निम मे हो।

देवदास परेशान सा होता आसमान से दृष्टि हटाकर फैलती हुयी अन्धेरी चादर मे लिपटता फिका सा मुस्कराके बोला, "अब, तुम बताओ…… ……………………?

"मेरा तो यही खयाल है कि जो लड़का देखा उसी की साथ बात पक्की कर लो।"

"अगर उसने आत्म हत्या करली तो?"

"इतनी शक्ति होती तो वह कही से उनकी साथ होती …………।" पर देवदास परेशान होकर चक्कर काटता बोला "तुम्हारी बात किसी हद तक ठीक है।"

× × ×

तीक्ष्ण और प्रचण्ड हवा की लपटोगे के साथ अग्नि का प्रवाह हो रहा था।

"जयदेव।" डाकिया चिट्ठी को बरामदे मे फेंक कर चला गया।

जयदेव पाव घसीटता उदास विचरो से। किसका पत्र हैं? पिताजी का होगा। मेरा तो कहा से आ सकता है? हो सकता है……… … …। नही …………मेरा कोई…………। अपने पर ही मुस्कराता चिठ्ठी उठाई दिल की धडकने तेज हो गयी। हाथ पांव फूल से गये। उत्सुकता थी फिर भी दिल के अन्दर से एक चीख उठ रही थी।

उसका दिल तडफ उठा मेज पर सिर टिका दिया। खुला हुआ कागज एक भारी लोहे की सलाख के नीचे पडा-पडा तडफ रहा था जो निकलने की कोशिश कर रहा था पर वजन से इतना दब गया था कि सिर्फ तड़फ सकता था।

राजाराम कागज पर एक सरसरी निगाह डाली और मुस्कराके कन्धे पर हाथ रखा जयदेव चौंकता आप……………। "धीरज रखो अभी तो तीन रोज बाकी हैं रोने से थोडी ही कार्य होता है, हिम्मत से होता है।"

जयदेव "...................... .. .. ।"

जयदेव कुछ भी नही बोला वह तो हाथो की हथेली के मध्य अपना सिर छुपा लिया ।

"ठीक है, गाडी ले जाओ और चले जाओ धीरज ने कार्य करना जल्द बाजी मे नही जयदेव सारा काम काज झटपट किया और मा-बाप का आर्शीवाद लिया और दोनो चरी तपती सडक पर, प्रचण्ड धूप मे निकल गया ।

उत्तर दिशा से घनघोर उटायें उठने लगी जो पर्वत के समान विक-राल काल सा मुंह फाडे चली आ रही थी । बिजलियो की चकाचौंधी और उनकी गर्जना धरती वालो के हृदयो को कपयमान कर रही थी ।

जयदेव को किसी प्रकार का चिन्ता न थी वह यह चाहता था की कैसी थी हालत मे सुनिश्चित समय पर पहुँचे ।

वर्षा बहुत तीव्र वेग से होने लगी । जयदेव कार पानी को चिरती और पानी एक चीख के साथ पहियो से नीचे निकल जाता था पेड स्थर हो गये थे वे ये जानने की कौशिश कर रहे थे कि अब क्या होने वाला है ? पर जयदेव मस्त हाथी कि भाति अडिग पर्वत की भाति उस तूफानी वर्षा मे लडता आगे बढता जा रहा था ।

अब अपनी मजिल से पच्चीस मील ही दूर रहा था । बरसाती नाला भयानकता का रुप लिए तेज वेग से भागता जा रहा था जिसकी तेज आवाज कानो के पर्दों को फाडते जा रही थी । जयदेव की कार एक हलके झटके के साथ रुकी ।

वर्षा बन्द हुयी रात पर रात व्यतीत हो गयी पर बादलो का अन्त न हुआ । बादल उसी प्रकार अतिवृष्टि करते जा रहे थे । सामने का नाला ऊंची ऊंची तेज लहरो मे बहता रहा था ।

जयदेव के आसू तो सूख गये थे पर हृदय के आसू लगातार बह रहे थे । उसकी आखो से नींद कौसो दूर थी कब नाला उतरे और कब मैं जाऊ ?

× × ×

आशा गुलाबी साडी का जोडा पहने सिमटी सी लजावती सी बैठी,

बडी उत्सुकता से सडक को निहार रही थी। परन्तु वर्षा के सिवा कुछ भी नजर न आ रहा था।

शहनाइयो की आवाज मे चौक गूंज रहा था जो आशा को बड़ा ही भद्दा लग रहा था।

वर्षा के कारण सारा इन्तजाम खत्म हो गया था कुछ समय उपरान्त हवेली के सामने वरात की बस व कारें सूनी-सूनी आकर खडी हो गयी।

आशा की नजर खिडकी से वस पर गयी तो उसकी आशाओ पर पानी फिर गया। इन्तजार की सब घडिया खत्म हो गयी और आखो मे आसू बाहर आ गये जिससे उसका हृदय काला पड गया।

चम चमाती हुयी साडी के जोड ने आशा को दुल्हन का रूप दे दिया। उसके रग मे किसी प्रकार का निखार न आया था बल्कि हलकी सी कालिमा की चादर फैल गयी थी।

आखो की चमक चली गयी थी मुह पर किसी प्रकार के लजा के भाव न थे फिर भी वह सिमटी सी गठडी बने बैठी थी।

बड़े हाल मे वेदी वनवाई सारा सावन सजा कर पण्डित ने मंत्रा के शब्दों के साथ घृत की आहुति दी और कुछ समय मे परिग्रहण सस्कार हो गया।

अब आशा के दिल मे जयदेव के मिलन की कोई आशा न थी। उस का हरा भरा चमन सूख गया था वर्षा............वर्षा...........ही ने सारा कार्य समाप्त कर दिया मनुष्य प्रकृति का एक खिलौना है। प्रकृति उसकी इच्छा आती है वैसे ही खिलती है, जीमे आवें जब बिगर न्यूता दिये ही बुला लेती है। मनुष्य की क्या औकात है पेड के पत्ते को भी हिला दे ? रहा हमारा मिलना..................................। अब उसके दिल के भौंरे ने यह आशा कर ली थी अब वसंत कहां ?

वरात विदा हो गयी। आशा दुल्हे के पीछे-पीछे कार मे बैठी और आखो से आसू वरसाने लगी। अब रही सही आशा का भी अन्त हो गया।

दुल्हा मुड-मुडकर आशा को देख लेता और मुस्करादेता। लगता था, बातचीत करने के लिए वड़ा उत्सुक था पर आशा के गम्भीर और

भांके भाके चहरे को देखकर रुक जाता था। समझ मे नही आता था, दि को क्या सतावना देकर रोक देता था।

हलके के धक्के साथ बरात की वस और उनके पीछे-पीछे कारें रें लगी। सम्बन्धी और जान पहचान के लोग मुस्कराते हुये विदाई म रहे थे।

वर्षा बन्द हो गयी पर अभी सिमट कर आ रहा पानी का वेग न हुआ था नालो मे उसी प्रकार पानी बहता जा रहा था।

नाले के पुल की जडे कट गयी थी फिर भी वह अस्तित्वहिन ख था। जो पानी की बडी बडी लहरो का मुकाबाला कर रहा था।

बरात की बस नाले के ऊपर मे गुजर चुकी थी और उसके पीछे प कारें भी चल रही थी। अब पुल पर सिर्फ दो कार थी एक आशा की एक शायद आशा के पति के दोस्तो की अचानक पुल फचार खाकर व पानी में गिरा कार की खिडकी खुली और आशा पानी की लहरो मे र गयी।

लोगो की एक जोर की आवाज हुई। भैय्या भाभी वह गये। कर किनारे पर आये पर ऊ ची लहरो के सिवा उनको कुछ भी नजर आया।

अचानक बादल फट गये। सूरज निकल आया। जयदेव गाडी को कर नाले की ओर चला। चल्लु भर२ कर आंखो को धोने लगा। अभी चल्लु भर ही रहा था कि उसके हाथ मे गुलाबी साडी का पल्ला आया पकड़ कर धीरे से खीचा पर खिचा नही फिर वह अधिक शक्ति लगा धीरे धीरे खीचना चालू किया उसको लाश नजर आयी। पर पानी के प्रवाह के कारण शरीर से उसकी साडी खुल गयी।

जयदेव ने साडी को किनारे पर पटक दिया और कपडों सहि नाले मे कूद पडा। वह लाश कभी ऊपर और कभी नीचे होती चल रही थी। जयदेव तेजी से पानी को चीरता उसकी टाग को पकड कर धीरे किनारे की ओर ले चला।

बडी मुश्किल से किनारे पर खडा हुआ लाश को कन्धे पर गिरा पानी से बाहर आया। जैसे ही देखा उसकी आँखें फटी की फटी रह ग उसके मुंह से निकल गया 'आशा........।'

वडी उत्सुकता से उस पर झुक कर हृदय की गति सुनने लगा। तुरन्त ही उसको उपर कर के पेट का पानी निकाल दिया।

ठण्डी हवा चलने के कारण जयदेव को भी शर्दी महसूस हुई इसलिए आशा की गीली साडी उठा लाया और उस पर कार का पेट्रोल छिडक कर आशी को गोद मे लेकर उसे सेकने लगा।

जैसे जैसे जयदेव के शरीर की गर्मी और वाहर की गर्मी पहुंची आशा की आँखें खुली और एक खुशी की लहर वह गयी। जयदेव ने खुशी मे झूमता हल्के से आशा को सीने से लगा लिया।

सूर्य की गर्मी वहुत सुहावनी लग रही थी आशा पूर्ण होंश मे आ चुकी थी दोनो की आखो से विहर के मिलन मे खुशी के आसू वहने लगे।

× × × ×

जयदेव और आशा खुशी मे झूमते प्रवेश हुये राजाराम और माया बेटे और वहु हो आशिर्वाद प्रदान किया और आशा को अलग ले गयी।

शानदार पार्टी का इन्तजाम हुआ। जयदेव और आशा दोनो के ही सहपाठी खुशी मे शरीक हुये और रहमान मुस्कराता दोनो को आशिर्वाद प्रदान किया और एक एक अंगूठी दोनो को पहनाता बोला, 'तुम यह मत भूल जाना कि तुम राजाराम के ही सुपुत्र हो वल्कि मेरे भी।'

आखिर सारा कार्य क्रम खत्म होने को आया आशा की सहेली दोनों की फोटो खीच कर आश्चर्य से वोली, ओहो वडी भूल हो गयी।'

दोनो आश्चर्य से देखते एक साथ वोले 'क्या..........?'

'माला तो थी ही नही, खैर कोई वात नही मैं फोटो के पीछे मे लिख दूंगी माला भी थी।'

सव एक साथ हँस पडे।